भजन संहिता

पहिला भाग

भजन 1

1सचमुच वह जन धन्य होगा यदि वह दुष्टों की सलाह
को न मानें, और यदि वह किसी पापी का सा जीवन न
जीए और यदि वह उन लोगों की संगति न करे जो
परमेश्वर की राह पर नहीं चलते।
2वह नेक मनुष्य है जो यहोवा के उपदेशों से प्रीति
रखता है। वह तो रात दिन उन उपदेशों का मनन
करता है।
3इससे वह मनुष्य उस वृक्ष जैसा सुदृढ़ बनता है जिसको
जलधार के किनारे रोपा गया है। वह उस वृक्ष समान
है, जो उचित समय में फलता और जिसके पत्ते कभी
मुरझाते नहीं। वह जो भी करता है सफल ही होता है।
4किन्तु दुष्ट जन ऐसे नहीं होते। दुष्ट जन उस भूसे के
समान होते हैं जिन्हें पवन का झोका उड़ा ले जाता है।
5इसलिए दुष्ट जन न्याय का सामना नहीं कर पायेंगे।
सज्जनों की सभा में वे दोषी ठहरेंगे और उन पापियों को
छोड़ा नहीं जायेगा।
6ऐसा भला क्यों होगा? क्योंकि यहोवा सज्जनों की
रक्षा करता है और वह दुर्जनों का विनाश करता है।

भजन 2

1दूसरे देशों के लोग क्यों इतनी हुल्लड़ मचाते हैं और
लोग व्यर्थ ही क्यों षड़यन्त्र रचते हैं?
2ऐसे देशों के राजा और नेता यहोवा और उसके चुने
हुए राजा के विरुद्ध होने को आपस में एक हो जाते हैं।
3वे नेता कहते हैं, "आओ परमेश्वर से और उस
राजा से जिसको उसने चुना है, हम सब विद्रोह करें।
आओ उनके बन्धनों को हम उतार फेंके।"
4किन्तु मेरा स्वामी, स्वर्ग का राजा, उन लोगों पर
हँसता है।
5-6परमेश्वर क्रोधित है और वह उन से कहता है,
"मैंने इस पुरुष को राजा बनने के लिये चुना है। वह
सिय्योन पर्वत पर राज्य करेगा। सिय्योन मेरा विशेष
पर्वत है।" यही उन नेताओं को भयभीत करता है।
7अब मैं यहोवा की वाचा के बारे में तुझे बताता हूँ।
यहोवा ने मुझसे कहा था, "आज मैं तेरा पिता बनता हूँ
और तू आज मेरा पुत्र बन गया है।
8यदि तू मुझसे माँगे, तो इन देशों को मैं तुझे दे दूँगा
और इस धरती के सभी जन तेरे हो जायेंगे।
9तेरे पास उन देशों को नष्ट करने की वैसी ही शक्ति
होगी जैसे किसी मिट्टी के पात्र को कोई लौह दण्ड से
चूर चूर कर दे।"
10इसलिए, हे राजाओं, तुम बुद्धिमान बनो। हे शासकों,
तुम इस पाठ को सीखो।
11तुम अति भय से यहोवा की आज्ञा मानों।
12स्वयं को परमेश्वर के पुत्र का विश्वासपात्र दिखाओ।
यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो वह क्रोधित होगा और
तुम्हें नष्ट कर देगा। जो लोग यहोवा में आस्था रखते हैं
वे आनन्दित रहते हैं, किन्तु अन्य लोगों को सावधान
रहना चाहिए। यहोवा अपना क्रोध बस दिखाने ही वाला
है।

भजन 3

दाऊद का उस समय का गीत जब वह अपने पुत्र अबशालोम से दूर भागा था।

1हे यहोवा, मेरे कितने ही शत्रु मेरे विरुद्ध खड़े हो
गये हैं।
2कितने ही मेरी चर्चाएं करते हैं, कितने ही मेरे
विषय में कह रहे कि परमेश्वर इसकी रक्षा नहीं
करेगा।
3किन्तु यहोवा, तू मेरी ढाल है। तू ही मेरी महिमा है।
हे यहोवा, तू ही मेरा सिर ऊँचा करता है।
4मैं यहोवा को ऊँचे स्वर में पुकारुँगा। वह अपने
पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर देगा।
5मैं आराम करने को लेट सकता हूँ। मैं जानता हूँ
कि मैं जाग जाऊँगा, क्योंकि यहोवा मुझको बचाता और
मेरी रक्षा करता है।
6चाहे मैं सैनिकों के बीच घिर जाऊँ किन्तु उन
शत्रुओं से भयभीत नहीं होऊँगा।
7हे यहोवा, जाग! मेरे परमेश्वर आ, मेरी रक्षा कर!
तू बहुत शक्तिशाली है। यदि मेरे दुष्ट शत्रुओं के मुख
पर तू प्रहार करे, तो उनके सभी दाँतों को तो उखाड़
डालेगा।
8यहोवा अपने लोगों की रक्षा कर सकता है। हे
यहोवा, तेरे लोगों पर तेरी आशीष रहे।

भजन 4

तारवाद्यों वाले संगीत निर्देशक के लिये
दाऊद का एक गीत।

1मेरे उत्तम परमेश्वर, जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझे उत्तर
दे। मेरी विनती को सुन और मुझ पर कृपा कर। जब
कभी विपत्तियाँ मुझको घेरें तू मुझ को छुड़ा ले।
2अरे लोगों, कब तक तुम मेरे बारे में अपशब्द
कहोगे? तुम लोग मेरे बारे में कहने के लिये नये झूठ
ढूँढते रहते हो। उन झूठों को कहने से तुम लोग प्रीति
रखते हो।
3तुम जानते हो कि अपने नेक जनों की यहोवा
सुनता है। जब भी मैं यहोवा को पुकारता हूँ, वह मेरी
पुकार को सुनता है।
4यदि कोई वस्तु तुझे झमेले में डाले, तू क्रोध कर
सकता है, किन्तु पाप कभी मत करना। जब तू अपने
बिस्तर में जाये तो सोने से पहले उन बातों पर विचार
कर और चुप रह।
5समुचित बलियाँ परमेश्वर को अर्पित कर और तू
यहोवा पर भरोसा बनाये रख।
6बहुत से लोग कहते हैं, "परमेश्वर की नेकी हमें
कौन दिखायेगा? हे यहोवा, अपने प्रकाशमान मुख का
प्रकाश मुझ पर चमका।"
7हे यहोवा, तूने मुझे बहुत प्रसन्न बना दिया। कटनी
के समय भरपूर फसल और दाखमधु पाकर जब हम
आनन्द और उल्लास मनाते हैं उससे भी कहीं अधिक
प्रसन्न मैं अब हूँ।
8मैं बिस्तर में जाता हूँ और शांति से सोता हूँ। क्योंकि
यहोवा, तू ही मुझको सुरक्षित सोने को लिटाता है।

भजन 5

बाँसुरी वादकों के निर्देशक के लिये दाऊद का गीत।

1हे यहोवा, मेरे शब्द सुन और तू उसकी सुधि ले
जिसको तुझसे कहने का मैं यत्न कर रहा हूँ।
2मेरे राजा, मेरे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन।
3हे यहोवा, हर सुबह तुझको, मैं अपनी भेंटे अर्पित
करता हूँ। तू ही मेरा सहायक है। मेरी दृष्टि तुझ पर लगी
है और तू ही मेरी प्रार्थनाएँ हर सुबह सुनता है।
4हे यहोवा, तुझ को बुरे लोगों की निकटता नहीं
भाती है। तू नहीं चाहता कि तेरे मन्दिर में कोई भी पापी
जन आये। 5 तेरे निकट अविश्वासी नहीं आ सकते।
ऐसे मनुष्यों को तूने दूर भेज दिया जो सदा ही बुरे कर्म
करते रहते हैं।
6जो झूठ बोलते हैं उन्हें तू नष्ट करता है। यहोवा ऐसे
मनुष्यों से घृणा करता है, जो दूसरों को हानि पहुँचाने
का षड़यन्त्र रचते हैं।
7किन्तु हे यहोवा, तेरी महा करुणा से मैं तेरे मन्दिर
में आऊँगा। हे यहोवा, मुझ को तेरा डर है, मैं सम्मान
तुझे देता हूँ। इसलिए मैं तेरे मन्दिर की ओर झुककर
तुझे दण्डवत करुँगा।
8हे यहोवा, तू मुझको अपनी नेकी का मार्ग दिखा। तू
अपनी राह को मेरे सामने सीधी कर क्योंकि मैं शत्रुओं
से घिरा हुआ हूँ।
9वे लोग सत्य नहीं बोलते। वे झूठे हैं, जो सत्य को
तोड़ते मरोड़ते रहते हैं। उनके मुख खुली कब्र के
समान हैं। वे औरों से उत्तम चिकनी-चुपड़ी बातें करते
किन्तु वे उन्हें बस जाल में फँसाना चाहते हैं।
10हे परमेश्वर, उन्हें दण्ड दे। उनके अपने ही जालों
में उनको उलझने दे। ये लोग तेरे विरुद्ध हो गये हैं, उन्हें
उनके अपने ही बहुत से पापों का दण्ड दे।
11किन्तु जो परमेश्वर के आस्थावान होते हैं, वे सभी
प्रसन्न हों और वे सदा सर्वदा को आनन्दित रहें। हे
परमेश्वर, तू उनकी रक्षा कर और उन्हें तू शक्ति दे जो
जन तेरे नाम से प्रीति रखते हैं।
12हे यहोवा, तू निश्चय ही धर्मी को वरदान देता है।
अपनी कृपा से तू उनको एक बड़ी ढाल बन कर फिर
ढक लेता है।

भजन 6

शौमिनिथ शैली के तारवाद्यों के निर्देशक
के लिये दाऊद का एक गीत।

1हे यहोवा, तू मुझ पर क्रोधित होकर मेरा सुधार मत
कर। मुझ पर कुपित मत हो और मुझे दण्ड मत दे।
2हे यहोवा, मुझ पर दया कर। मैं रोगी और दुर्बल हूँ।
मेरे रोगों को हर ले। मेरी हड्डियाँ काँप-काँप
उठती हैं।
3मेरी समूची देह थर-थर काँप रही है। हे यहोवा,
मेरा भारी दुःख तू कब तक रखेगा।
4हे यहोवा, मुझ को फिर से बलवान कर। तू महा
दयावान है मेरी रक्षा कर।
5मरे हुए लोग तुझे अपनी कब्रों के बीच याद नहीं
करते हैं। मृत्यु के देश में वे तेरी प्रशंसा नहीं करते हैं।
अतः मुझको चँगा कर।
6हे यहोवा, सारी रात मैं तुझको पुकारता रहता हूँ।
मेरा बिछौना मेरे आँसुओं से भीग गया है। मेरे बिछौने
से आँसु टपक रहे हैं। तेरे लिये रोते हुए मैं क्षीण हो
गया हूँ।
7मेरे शत्रुओं ने मुझे बहुतेरे दुःख दिये। इसने मुझे
शोकाकुल और बहुत दुःखी कर डाला और अब मेरी
आँखें रोने बिलखने से थकी हारी, दुर्बल हैं।
8अरे ओ दुर्जनों, तुम मुझ से दूर हटो। क्योंकि यहोवा
ने मुझे रोते हुए सुन लिया है।
9मेरी विनती यहोवा के कान तक पहुँच चुकी है
और मेरी प्रार्थनाओं को यहोवा ने सुनकर उत्तर दे
दिया है।

10मेरे सभी शत्रु व्याकुल और आशाहीन होंगे। कुछ अचानक ही घटित होगा और वे सभी लज्जित होंगे। वे मुझको छोड़ कर लौट जायेंगे।

भजन 7

दाऊद का एक भाव गीत: जिसे उसने यहोवा के लिये गाया। यह भाव गीत बिन्यामीन परिवार समूह के कीश के पुत्र शाऊल के विषय मे है।

1हे मेरे यहोवा परमेश्वर, मुझे तुझ पर भरोसा है। उन व्यक्तियों से तू मेरी रक्षा कर, जो मेरे पीछे पड़े हैं। मुझको तू बचा ले।

2यदि तू मुझे नहीं बचाता तो मेरी दशा उस निरीह पशु की सी होगी, जिसे किसी सिंह ने पकड़ लिया है। वह मुझे घसीट कर दूर ले जायेगा, कोई भी व्यक्ति मुझे नहीं बचा पायेगा।

3हे मेरे यहोवा परमेश्वर, कोई पाप करने का मैं दोषी नहीं हूँ। मैंने तो कोई भी पाप नहीं किया।

4मैंने अपने मित्रों के साथ बुरा नहीं किया और अपने मित्र के शत्रुओं की भी मैंने सहायता नहीं किया।

5किन्तु एक शत्रु मेरे पीछे पड़ा हुआ है। वह मेरी हत्या करना चाहता है। वह शत्रु चाहता है कि मेरे जीवन को धरती पर रौंद डाले और मेरी आत्मा को धूल में मिला दे।

6यहोवा उठ, तू अपना क्रोध प्रकट कर। मेरा शत्रु क्रोधित है, सो खड़ा हो जा और उसके विरुद्ध युद्ध कर। खड़ा हो जा और निष्पक्षता की माँग कर।

7हे यहोवा, लोगों का न्याय कर। अपने चारों ओर राष्ट्रों को एकत्र कर और लोगों का न्याय कर।

8हे यहोवा, न्याय कर मेरा, और सिद्ध कर कि मैं न्याय संगत हूँ। ये प्रमाणित कर दे कि मैं निर्दोष हूँ।

9दुर्जन को दण्ड दे और सज्जन की सहायता कर। हे परमेश्वर, तू उत्तम है। तू अन्तर्यामी है। तू तो लोगों के हृदय में झाँक सकता है।

10जिन के मन सच्चे हैं, परमेश्वर उन व्यक्तियों की सहायता करता है। इसलिए वह मेरी भी सहायता करेगा।

11परमेश्वर उत्तम न्यायकर्ता है। वह कभी भी अपना क्रोध प्रकट कर देगा।

12परमेश्वर जब कोई निर्णय ले लेता है, तो फिर वह अपना मन नहीं बदलता है।

13उसमें लोगों को दण्डित करने की क्षमता है। उसने मृत्यु के सब सामान साथ रखे हैं।

14कुछ ऐसे लोग होते हैं जो सदा कुकर्मों की योजना बनाते रहते हैं। ऐसे ही लोग गुप्त षड़यन्त्र रचते हैं, और मिथ्या बोलते हैं।

15वे दूसरे लोगों को जाल में फँसाने और हानि पहुँचाने का यत्न करते हैं। किन्तु अपने ही जाल में फँस कर वे हानि उठायेंगे।

16वे अपने कर्मों का उचित दण्ड पायेंगे। वे अन्य लोगों के साथ क्रूर रहे। किन्तु जैसा उन्हें चाहिए वैसा ही फल पायेंगे।

17मैं यहोवा का यश गाता हूँ, क्योंकि वह उत्तम है। मैं यहोवा के सर्वोच्च नाम की स्तुति करता हूँ।

भजन 8

गित्तीथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, मेरे स्वामी, तेरा नाम सारी धरती पर अति अद्‌भुत है। तेरा नाम स्वर्ग में हर कहीं तुझे प्रशंसा देता है।

2बालकों और छोटे शिशुओं के मुख से, तेरे प्रशंसा के गीत उच्चरित होते हैं। तू अपने शत्रुओं को चुप करवाने के लिये ऐसा करता है।

3हे यहोवा, जब मेरी दृष्टि गगन पर पड़ती है, जिसको तूने अपने हाथों से रचा है और जब मैं चाँद तारों को देखता हूँ जो तेरी रचना है, तो मैं अचरज से भर उठता हूँ।

4लोग तेरे लिये क्यों इतने महत्त्वपूर्ण हो गये? तू उनको याद भी किस लिये करता है? मनुष्य का पुत्र तेरे लिये क्यों महत्त्वपूर्ण है? क्यों तू उन पर ध्यान तक देता है?

5किन्तु तेरे लिये मनुष्य महत्त्वपूर्ण है! तूने मनुष्य को ईश्वर का प्रतिरुप बनाया है, और उनके सिर पर महिमा और सम्मान का मुकुट रखा है।

6तूने अपनी सृष्टि का जो कुछ भी तूने रचा लोगों को उसका अधिकारी बनाया।

7मनुष्य भेड़ों पर, पशु धन पर और जंगल के सभी हिंसक जन्तुओं पर शासन करता है।

8वह आकाश में पक्षियों पर और सागर में तैरते जलचरों पर शासन करता है।

9हे यहोवा, हमारे स्वामी, सारी धरती पर तेरा नाम अति अद्‌भुत है।

भजन 9

अलामौथ बैन राग पर आधारित दाऊद का पद: संगीत निर्देशक के लिये।

1मैं अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा की स्तुति करता हूँ। हे यहोवा, तूने जो अद्‌भुत कर्म किये हैं, मैं उन सब का वर्णन करूँगा।

2तूने ही मुझे इतना आनन्दित बनाया है। हे परम परमेश्वर, मैं तेरे नाम के प्रशंसा गीत गाता हूँ।

3जब मेरे शत्रु मुझसे पलट कर मेरे विमुख होते हैं, तब परमेश्वर उनका पतन करता और वे नष्ट हो जाते हैं।

4तू सच्चा न्यायकर्ता है। तू अपने सिंहासन पर न्यायकर्ता के रुप में विराजा। तूने मेरे अभियोग की सुनवाई की और मेरा न्याय किया।

5हे यहोवा, तूने उन शत्रुओं को कठोर झिड़की दी
और हे यहोवा, तूने उन दुष्टों को नष्ट किया। उनके
नाम तूने जीवितों की सूची से सदा सर्वदा के लिये मिटा
दिये।
6शत्रु नष्ट हो गया है! हे यहोवा, तूने उनके नगर
मिटा दिये हैं! उनके भवन अब खण्डहर मात्र रह गये
हैं। उन बुरे व्यक्तियों की हमें याद तक दिलाने को कुछ
भी नहीं बचा है।
7किन्तु यहोवा, तेरा शासन अविनाशी है। यहोवा ने
अपने राज्य को शक्तिशाली बनाया। उसने जग में न्याय
लाने के लिये यह किया।
8यहोवा धरती के सब मनुष्यों का निष्पक्ष होकर
न्याय करता है। यहोवा सभी जातियों का पक्षपात रहित
न्याय करता है।
9यहोवा दलितों और शोषितों का शरणस्थल है।
विपदा के समय वह एक सुदृढ़ गढ़ है।
10जो तुझ पर भरोसा रखते, तेरा नाम जानते हैं। हे
यहोवा, यदि कोई जन तेरे द्वार पर आ जाये तो बिना
सहायता पाये कोई नहीं लौटता।
11अरे ओ सिय्योन के निवासियों, यहोवा के गीत
गाओ जो सिय्योन में विराजता है। सभी जातियों को उन
बातों के विषय में बताओ जो बड़ी बातें यहोवा ने की हैं।
12जो लोग यहोवा से न्याय माँगने गये, उसने उनकी
सुधि ली। जिन दीनों ने उसे सहायता के लिये पुकारा,
उनको यहोवा ने कभी भी नहीं बिसारा।
13यहोवा की स्तुति मैंने गायी है: "हे यहोवा, मुझ पर
दया कर। देख, किस प्रकार मेरे शत्रु मुझे दुःख देते हैं।
'मृत्यु के द्वार' से तू मुझको बचा ले।
14जिससे यहोवा यरुशलेम के फाटक पर मैं तेरी
स्तुति गीत गा सकूँ। मैं अति प्रसन्न होऊँगा क्योंकि तूने
मुझको बचा लिया।"
15अन्य जातियों ने गड्ढे खोदे ताकि लोग उनमें गिर
जायें किन्तु वे अपने ही खोदे गड्ढे में स्वयं समा जायेंगे।
दुष्ट जन ने जाल छिपा छिपा कर बिछाया, ताकि वे
उसमें दूसरे लोगों को फँसा ले। किन्तु उनमें उनके ही
पाँव फँस गये।
16यहोवा ने जो न्याय किया वह उससे जाना गया कि
जो बुरे कर्म करते हैं। वे अपने ही हाथों के किये हुए
कामों से जाल में फँस गये।
17वे दुर्जन होते हैं, जो परमेश्वर को भूलते हैं। ऐसे
मनुष्य मृत्यु के देश को जायेंगे।
18कभी-कभी लगता है जैसे परमेश्वर दुखियों को
पीड़ा में भूल जाता है। यह ऐसा लगता जैसे दीन जन
आशाहीन हैं। किन्तु परमेश्वर दीनों को सदा-सर्वदा के
लिये कभी नहीं भूलता।
19हे यहोवा, उठ और राष्ट्रों का न्याय कर। कहीं वे
न सोच बैठें वे प्रबल शक्तिशाली हैं।
20लोगों को पाठ सिखा दे, ताकि वे जान जायें कि वे
बस मानव मात्र हैं।

भजन 10

1हे यहोवा, तू इतनी दूर क्यों खड़ा रहता है? कि
संकट में पड़े लोग तुझे नहीं देख पाते।
2अहंकारी दुष्ट जन दुर्बल को दुःख देते हैं। वे अपने
षड़यन्त्रों को रचते रहते हैं।
3दुष्ट जन उन वस्तुओं पर गर्व करते हैं, जिनकी उन्हें
अभिलाषा है और लालची जन परमेश्वर को कोसते हैं।
इस प्रकार दुष्ट दर्शाते हैं कि वे यहोवा से घृणा करते हैं।
4दुष्ट जन इतने अभिमानी होते हैं कि वे परमेश्वर
का अनुसरण नहीं कर सकते। वे बुरी-बुरी योजनाएँ
रचते हैं। वे ऐसे कर्म करते हैं, जैसे परमेश्वर का कोई
अस्तित्व ही नहीं।
5दुष्ट जन सदा ही कुटिल कर्म करते हैं। वे परमेश्वर
की विवेकपूर्ण व्यवस्था और शिक्षाओं पर ध्यान नहीं
देते। हे परमेश्वर, तेरे सभी शत्रु तेरे उपदेशों की उपेक्षा
करते हैं।
6वे सोचते हैं, जैसे कोई बुरी बात उनके साथ नहीं
घटेगी। वे कहा करते हैं, "हम मौज से रहेंगे और कभी
भी दण्डित नहीं होंगे।"
7ऐसे दुष्ट का मुख सदा शाप देता रहता है। वे दूसरे
जनों की निन्दा करते हैं और काम में लाने को सदैव
बुरी-बुरी योजनाएँ रचते रहते हैं।
8ऐसे लोग गुप्त स्थानों में छिपे रहते हैं, और लोगों को
फँसाने की प्रतीक्षा करते हैं। वे लोगों को हानि पहुँचाने
के लिये छिपे रहते हैं और निरपराधी लोगों की हत्या
करते हैं।
9दुष्ट जन सिंह के समान होते हैं जो उन पशुओं को
पकड़ने की घात में रहते हैं। जिन्हें वे खा जायेंगे। दुष्ट
जन दीन जनों पर प्रहार करते हैं। उनके बनाये गये
जाल में असहाय दीन फँस जाते हैं।
10दुष्ट जन बार-बार दीन पर घात करता और उन्हें
दुःख देता है।
11अतः दीन जन सोचने लगते हैं, "परमेश्वर ने हमको
भुला ही दिया है! हमसे तो परमेश्वर सदा-सदा के लिये
दूर हो गया है। जो कुछ भी हमारे साथ घट रहा, उससे
परमेश्वर ने दृष्टि फिरा ली है!"
12हे यहोवा, उठ और कुछ तो कर! हे परमेश्वर,
ऐसे दुष्ट जनों को दण्ड दे! और इन दीन दुखियों को मत
बिसरा!
13दुष्ट जन क्यों परमेश्वर के विरुद्ध होते हैं? क्योंकि
वे सोचते हैं कि परमेश्वर उन्हें कभी नहीं दण्डित
करेगा।
14हे यहोवा, तू निश्चय ही उन बातों को देखता है, जो
क्रूर और बुरी हैं। जिनको दुर्जन किया करते हैं। इन

बातों को देख और कुछ तो कर! दुःखों से घिरे लोग सहायता माँगने तेरे पास आते हैं। हे यहोवा, केवल तू ही अनाथ बच्चों का सहायक है, अतः उन की रक्षा कर!

15हे यहोवा, दुष्ट जनों को तू नष्ट कर दे।

16तू उन्हें अपनी धरती से ढकेल बाहर कर!

17हे यहोवा, दीन दुःखी लोग जो चाहते हैं वह तूने सुन ली। उनकी प्रार्थनाएँ सुन और उन्हें पूरा कर जिनको वे माँगते हैं!

18हे यहोवा, अनाथ बच्चों की तू रक्षा कर। दुःखी जनों को और अधिक दुःख मत पाने दे। दुष्ट जनों को तू इतना भयभीत कर दे कि वे यहाँ न टिक पायें।

भजन 11

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का पद।

1मैं यहोवा पर भरोसा करता हूँ। फिर तू मुझसे क्यों कहता है कि मैं भाग कर कहीं जाऊँ? तू कहता है मुझसे कि, "पक्षी की भाँति अपने पहाड़ पर उड़ जा!"

2दुष्ट जन शिकारी के समान हैं। वे अन्धकार में छिपते हैं। वे धनुष की डोर को पीछे खींचते हैं। वे अपने बाणों को साधते हैं और वे अच्छे, नेक लोगों के हृदय में सीधे बाण छोड़ते हैं।

3क्या होगा यदि वे समाज की नींव को उखाड़ फेंके? फिर तो ये अच्छे लोग कर ही क्या पायेंगे?

4यहोवा अपने विशाल पवित्र मन्दिर में विराजा है। यहोवा स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठता है। यहोवा सब कुछ देखता है, जो भी घटित होता है। यहोवा की आँखें लोगों की सज्जनता व दुर्जनता को परखने में लगी रहती हैं।

5यहोवा भले व बुरे लोगों को परखता है, और वह उन लोगों से घृणा करता है, जो हिंसा से प्रीति रखते हैं।

6वह गर्म कोयले और जलती हुई गन्धक को वर्षा की भाँति उन बुरे लोगों पर गिरायेगा। उन बुरे लोगों के भाग में बस झुलसाती पवन आयेगी

7किन्तु यहोवा, तू उत्तम है। तुझे उत्तम जन भाते हैं। उत्तम मनुष्य यहोवा के साथ रहेंगे और उसके मुख का दर्शन पायेंगे।

भजन 12

शौमिनिथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, मेरी रक्षा कर! खरे जन सभी चले गये हैं। मनुष्यों की धरती में अब कोई भी सच्चा भक्त नहीं बचा है।

2लोग अपने ही साथियों से झूठ बोलते हैं। हर कोई अपने पड़ोसियों की झूठ बोलकर चापलूसी किया करता है।

3यहोवा उन ओंठों को सी दे जो झूठ बोलते हैं। हे यहोवा, उन जीभों को काट जो अपने ही विषय में डींग हाँकते हैं।

4ऐसे जन सोचते है, "हमारी झूठें हमें बड़ा व्यक्ति बनायेंगी। कोई भी व्यक्ति हमारी जीभ के कारण हमें जीत नहीं पायेगा।"

5किन्तु यहोवा कहता है: "बुरे मनुष्यों ने दीन दुर्बलों से वस्तुएँ चुरा ली हैं। उन्होंने असहाय दीन जन से उनकी वस्तुएँ ले ली। किन्तु अब मैं उन हारे थके लोगों की रक्षा खड़ा होकर करुँगा।"

6यहोवा के वचन सत्य हैं और इतने शुद्ध जैसे आग में पिघलाई हुई श्वेत चाँदी। वे वचन उस चाँदी की तरह शुद्ध हैं, जिसे पिघला पिघला कर सात बार शुद्ध बनाया गया है।

7हे यहोवा, असहाय जन की सुधि ले। उनकी रक्षा अब और सदा सर्वदा कर!

8ये दुर्जन अकड़े और बने ठने घूमते हैं। किन्तु वे ऐसे होते हैं जैसे कोई नकली आभूषण धारण करता है। जो देखने में मूल्यवान लगते हैं, किन्तु वास्तव में बहुत ही सस्ते होते हैं।

भजन 13

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तू कब तक मुझ को भूला रहेगा? क्या तू मुझे सदा सदा के लिये बिसरा देगा? कब तक तू मुझको नहीं स्वीकारेगा?

2तू मुझे भूल गया यह कब तक मैं सोचूँ? अपने हृदय में कब तक यह दुःख भोगूँ? कब तक मेरे शत्रु मुझे जीतते रहेंगे?

3हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, मेरी सुधि ले! और तू मेरे प्रश्न का उत्तर दे! मुझको उत्तर दे नहीं तो मैं मर जाऊँगा!

4कदाचित् तब मेरे शत्रु यों कहने लगें, "मैंने उसे पीट दिया!" मेरे शत्रु प्रसन्न होंगे कि मेरा अंत हो गया है।

5हे यहोवा, मैंने तेरी करुणा पर सहायता पाने के लिये भरोसा रखा। तूने मुझे बचा लिया और मुझको सुखी किया!

6मैं यहोवा के लिये प्रसन्नता के गीत गाता हूँ, क्योंकि उसने मेरे लिये बहुत सी अच्छी बातें की हैं।

भजन 14

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का पद।

1मूर्ख अपने मनमें कहता है, "परमेश्वर नहीं है।" मूर्ख जन तो ऐसे कार्य करते हैं जो भ्रष्ट और घृणित होते हैं। उनमें से कोई भी भले काम नहीं करता है।

2यहोवा आकाश से नीचे लोगों को देखता है, कि कोई विवेकी जन उसे मिल जाये। विवेकी मनुष्य परमेश्वर की ओर सहायता पाने के लिये मुड़ता है।

3किन्तु परमेश्वर से मुड़ कर सभी दूर हो गये हैं।
आपस में मिल कर सभी लोग पापी हो गये हैं। कोई भी
जन अच्छे कर्म नहीं कर रहा है!
4मेरे लोगों को दुष्टों ने नष्ट कर दिया है। वे दुर्जन
परमेश्वर को नहीं जानते हैं। दुष्टों के पास खाने के
लिये भरपूर भोजन है। ये जन यहोवा की उपासना नहीं
करते।
5-6 ये दुष्ट मनुष्य निर्धन की सम्मति सुनना नहीं
चाहते। ऐसा क्यों है? क्योंकि दीन जन तो परमेश्वर पर
निर्भर है। किन्तु दुष्ट लोगों पर भय छा गया है। क्यों?
क्योंकि परमेश्वर खरे लोगों के साथ है।
7सिय्योन पर कौन जो इस्राएल को बचाता है? वह तो
यहोवा है, जो इस्राएल की रक्षा करता है! यहोवा के
लोगों को दूर ले जाया गया और उन्हें बलपूर्वक बन्दी
बनाया गया। किन्तु यहोवा अपने भक्तों को वापस छुड़ा
लायेगा। तब याकूब (इस्राएल) अति प्रसन्न होगा।

भजन 15

दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तेरे पवित्र तम्बू में कौन रह सकता है?
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन रह सकता है?
2केवल वह व्यक्ति जो खरा जीवन जीता है, और जो
उत्तम कर्मों को करता है, और जो हृदय से सत्य बोलता
है। वही तेरे पर्वत पर रह सकता है।
3ऐसा व्यक्ति औरों के विषय में कभी बुरा नहीं बोलता
है। ऐसा व्यक्ति अपने पड़ोसियों का बुरा नहीं करता।
वह अपने घराने की निन्दा नहीं करता है।
4वह उन लोगों का आदर नहीं करता जो परमेश्वर
से घृणा रखते हैं। और वह उन सभी का सम्मान करता
है, जो यहोवा के सेवक हैं। ऐसा मनुष्य यदि कोई वचन
देता है तो वह उस वचन को पूरा भी करता है, जो
उसने दिया था।
5वह मनुष्य यदि किसी को धन उधार देता है तो वह
उस पर ब्याज नहीं लेता, और वह मनुष्य किसी निरपराध
जन को हानि पहुँचाने के लिये घूस नहीं लेता। यदि
कोई मनुष्य उस खरे जन सा जीवन जीता है तो वह
मनुष्य परमेश्वर के निकट सदा सर्वदा रहेगा।

भजन 16

दाऊद का एक गीत।

1हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तुझ पर
निर्भर हूँ।
2मेरा यहोवा से निवेदन है, "यहोवा, तू मेरा स्वामी है।
मेरे पास जो कुछ उत्तम है वह सब तुझसे ही है।"
3यहोवा अपने लोगों की धरती पर अद्‌भुत काम
करता है। यहोवा यह दिखाता है कि वह सचमुच उनसे
प्रेम करता है।
4किन्तु जो अन्य देवताओं के पीछे उन की पूजा के
लिये भागते हैं, वे दुःख उठायेंगे। उन मूर्तियों को जो रक्त
अर्पित किया गया, उनकी उन बलियों में मैं भाग नहीं
लूँगा। मैं उन मूर्तियों का नाम तक न लूँगा।
5नहीं, बस मेरा भाग यहोवा में है। बस यहोवा से ही
मेरा अंश और मेरा पात्र आता है। हे यहोवा, मुझे सहारा
दे और मेरा भाग दे।
6मेरा भाग अति अद्‌भुत है। मेरा क्षय अति सुन्दर है।
7मैं यहोवा के गुण गाता हूँ क्योंकि उसने मुझे ज्ञान
दिया। मेरे अन्तर्मन से रात में शिक्षाएं निकल कर आती
हैं।
8मैं यहोवा को सदैव अपने सम्मुख रखता हूँ, और मैं
उसका दक्षिण पक्ष कभी नहीं छोड़ूँगा।
9इसी से मेरा मन और मेरी आत्मा अति आनन्दित
होगी और मेरी देह तक सुरक्षित रहेगी।
10क्योंकि, यहोवा, तू मेरा प्राण कभी भी मृत्यु के
लोक में न तजेगा। तू कभी भी अपने भक्त लोगों का
क्षय होता नहीं देखेगा।
11तू मुझे जीवन की नेक राह दिखायेगा। हे यहोवा,
तेरा साथ भर मुझे पूर्ण प्रसन्नता देगा। तेरे दाहिनी ओर
होना सदा सर्वदा को आनन्द देगा।

भजन 17

दाऊद का प्रार्थना गीत।

1हे यहोवा, मेरी प्रार्थना न्याय के निमित्त सुन। मैं तुझे
ऊँचे स्वर से पुकार रहा हूँ। मैं अपनी बात ईमानदारी से
कह रहा हूँ। सो कृपा करके मेरी प्रार्थना सुन।
2यहोवा तू ही मेरा उचित न्याय करेगा। तू ही सत्य
को देख सकता है।
3मेरा मन परखने को तूने उसके बीच गहरा झाँक
लिया है। तू मेरे संग रात भर रहा तूने मुझे जाँचा, और
तुझे मुझ में कोई खोट न मिला। मैंने कोई बुरी योजना
नहीं रची थी।
4तेरे आदेशों को पालने में मैंने कठिन यत्न किया
जितना कि कोई मनुष्य कर सकता है।
5मैं तेरी राहों पर चलता रहा हूँ। मेरे पाँव तेरे जीवन
की रीति से नहीं डिगे।
6हे परमेश्वर, मैंने हर किसी अवसर पर तुझको
पुकारा है और तूने मुझे उत्तर दिया है। सो अब भी तू
मेरी सुन।
7हे परमेश्वर, तू अपने भक्तों की सहायता करता है।
उनकी जो तेरे दाहिने रहते हैं। तू अपने एक भक्त की
यह प्रार्थना सुन।
8मेरी रक्षा तू निज आँख की पुतली समान कर।
मुझको अपने पंखों के छाया तले तू छुपा ले।
9हे यहोवा, मेरी रक्षा उन दुष्ट जनों से कर जो मुझे
नष्ट करने का यत्न कर रहे हैं। वे मुझे घेरे हैं और
मुझे हानि पहुँचाने को प्रयत्नशील हैं।

10दुष्ट जन अभिमान के कारण परमेश्वर की बात
पर कान नहीं लगाते हैं। ये अपनी ही ढींग हाँकते
रहते हैं।
11वे लोग मेरे पीछे पड़े हुए हैं, और मैं अब उनके
बीच में घिर गया हूँ। वे मुझ पर वार करने को तैयार
खड़े हैं।
12वे दुष्ट जन ऐसे हैं जैसे कोई सिंह घात में अन्य पशु
को मारने को बैठा हो। वे सिंह की तरह झपटने को
छिपे रहते है
13हे यहोवा, उठ! शत्रु के पास जा, और उन्हें अस्त्र
शस्त्र डालने को विवश कर। निज तलवार उठा और
इन दुष्ट जनों से मेरी रक्षा कर।
14हे यहोवा, जो व्यक्ति सजीव हैं उनकी धरती से दुष्टों
को अपनी शक्ति से दूर कर। हे यहोवा, बहुतेरे तेरे पास
शरण माँगने आते हैं। तू उनको बहुतायत से भोजन दे।
उनकी संतानों को परिपूर्ण कर दे। उनके पास निज
बच्चों को देने के लिये बहुतायत से धन हो।
15मेरी विनय न्याय के लिये है। सो मैं यहोवा के मुख
का दर्शन करुँगा। हे यहोवा, तेरा दर्शन करते ही, मैं
पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाऊँगा।

भजन 18

*यहोवा के दास दाऊद का एक पदः संगीत निर्देशक के
लिये। दाऊद ने यह पद उस अवसर पर गाया था जब
यहोवा ने शाऊल तथा अन्य शत्रुओं से
उसकी रक्षा की थी।*

1उसने कहा, "यहोवा मेरी शक्ति है, मैं तुझ पर
अपनी करुणा दिखाऊँगा!
2यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़, मेरा शरणस्थल है।"
मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है। मैं तेरी शरण मे आया
हूँ। उसकी शक्ति मुझको बचाती है। यहोवा ऊँचे पहाड़ों
पर मेरा शरणस्थल है।
3यहोवा को जो स्तुति के योग्य है, मैं पुकारुँगा और
मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा।
4मेरे शत्रुओं ने मुझे मारने का यत्न किया। मैं चारों
ओर मृत्यु की रस्सियों से घिरा हूँ! मुझ को अधर्म की
बाढ़ ने भयभीत कर दिया।

5मेरे चारों ओर पाताल की रस्सियाँ थी। और मुझ
पर मृत्यु के फँदे थे।
6मैं घिरा हुआ था और यहोवा को सहायता के लिये
पुकारा। मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा। परमेश्वर
पवित्र निज मन्दिर में विराजा। उसने मेरी पुकार सुनी
और सहायता की।
7तब पृथ्वी हिल गई और काँप उठी; और पहाड़ों की
नींव कंपित हो कर हिल गई क्योंकि यहोवा अति
क्रोधित हुआ था!
8परमेश्वर के नथनों से धुँआ निकल पड़ा। परमेश्वर
के मुख से ज्वालायें फूट निकली, और उससे चिंगारियाँ
छिटकी।।
9यहोवा स्वर्ग को चीर कर नीचे उतरा! सघन काले
मेघ उसके पाँव तले थे।
10उसने उड़ते करुब स्वर्गदूतों पर सवारी की वायु पर
सवार हो वह ऊँचे उड़ चला।
11यहोवा ने स्वयं को अँधेरे में छिपा लिया, उसको
अम्बर का चँदोबा घिरा था। वह गरजते बादलों के
सघन घटा-टोप में छिपा हुआ था।
12फिर, परमेश्वर का तेज बादल चीर कर निकला।
बरसा और बिजलियाँ कौंधी।
13यहोवा का उद्घोष नाद अम्बर में गूँजा! परम
परमेश्वर ने निज वाणी को सुनने दिया! फिर ओले
बरसे और बिजलियाँ कौंध उठी।
14यहोवा ने बाण छोड़े और शत्रु बिखर गये। उसके
अनेक तड़ित बज्रों ने उनको पराजित किया।
15हे यहोवा, तूने गर्जना की और मुख से आँधी
प्रवाहित की। जल पीछे हट कर दबा और समुद्र का
जल अतल दिखने लगा, और धरती की नींव तक
उधड़ी।
16यहोवा ऊपर अम्बर से नीचे उतरा और मेरी रक्षा
की। मुझको मेरे कष्टों से उबार लिया।
17मेरे शत्रु मुझसे कहीं अधिक सशक्त थे। वे मुझसे
कहीं अधिक बलशाली थे, और मुझसे बैर रखते थे।
सो परमेश्वर ने मेरी रक्षा की।
18जब मैं विपत्ति में था, मेरे शत्रुओं ने मुझ पर प्रहार
किया किन्तु तब यहोवा ने मुझ को संभाला!
19यहोवा को मुझसे प्रेम था, सो उसने मुझे बचाया
और मुझे सुरक्षित ठौर पर ले गया।
20मैं अबोध हूँ, सो यहोवा मुझे बचायेगा। मैंने कुछ
बुरा नहीं किया। वह मेरे लिये उत्तम चीजें करेगा।
21क्योंकि मैंने यहोवा की आज्ञा पालन किया! अपने
परमेश्वर यहोवा के प्रति मैंने कोई भी बुरा काम नहीं
किया।
22मैं तो यहोवा के व्यवस्था विधानों को और आदेशों
को हमेशा ध्यान में रखता हूँ!
23स्वयं को मैं उसके सामने पवित्र रखता हूँ और
अबोध बना रहता हूँ।
24क्योंकि मैं अबोध हूँ! इसलिये मुझे मेरा पुरस्कार
देगा! जैसा परमेश्वर देखता है कि मैंने कोई बुरा नहीं
किया, अतः वह मेरे लिये उत्तम चीजें करेगा।
25हे यहोवा, तू विश्वसनीय लोगों के साथ विश्वसनीय
और खरे लोगों के साथ तू खरा है।
26हे यहोवा शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता
है, और टेढ़ों के साथ तू तिर्छा बनता है। किन्तु, तू नीच
और कुटिल जनों से भी चतुर है।

27हे यहोवा, तू नम्र जनों के लिये सहाय है, किन्तु
जिनमें अहंकार भरा है उन मनुष्यों को तू बड़ा नहीं
बनने देता।
28हे यहोवा, तू मेरा जलता दीप है। हे मेरे परमेश्वर तू
मेरे अधंकार को ज्योति में बदलता है!
29हे यहोवा, तेरी सहायता से, मैं सैनिकों के साथ दौड़
सकता हूँ। तेरी ही सहायता से, मैं शत्रुओं के प्राचीर
लाँघ सकता हूँ।
30परमेश्वर के विधान पवित्र और उत्तम हैं और
यहोवा के शब्द सत्यपूर्ण होते हैं। वह उसको बचाता है
जो उसके भरोसे हैं।
31यहोवा को छोड़ बस और कौन परमेश्वर है? मात्र
हमारे परमेश्वर के और कौन चट्टान है?
32मुझको परमेश्वर शक्ति देता है। मेरे जीवन को वह
पवित्र बनाता है।
33परमेश्वर मेरे चरणों को हिरण की सी तीव्र गति
देता है। वह मुझे स्थिर बनाता और मुझे चट्टानी शिखरों
से गिरने से बचाता है।
34हे यहोवा, मुझको सिखा कि युद्ध मैं कैसे लड़ूँ? वह
मेरी भुजाओं को शक्ति देता है जिससे मैं काँसे के धनुष
की डोरी खींच सकूँ।
35हे परमेश्वर, अपनी ढाल से मेरी रक्षा कर। तू
मुझको अपनी दाहिनी भुजा से अपनी महान शक्ति
प्रदान करके सहारा दे।
36हे परमेश्वर, तू मेरे पाँवों को और टखनों को दृढ़
बना ताकि मैं तेजी से बिना लड़खड़ाहट के बढ़ चलूँ।
37फिर अपने शत्रुओं का पीछा करूँ, और उन्हें पकड़
सकूँ। उनमें से एक को भी नहीं बच पाने दूँगा।
38मैं अपने शत्रुओं को पराजित करुँगा। उनमें से एक
भी फिर खड़ा नहीं होगा। मेरे सभी शत्रु मेरे पाँवों पर
गिरेंगे।
39हे परमेश्वर, तूने मुझे युद्ध में शक्ति दी, और मेरे
सब शत्रुओं को मेरे सामने झुका दिया।
40तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी, ताकि
मैं उनको काट डालूँ जो मुझ से द्वेष रखते हैं!
41जब मेरे बैरियों ने सहायता को पुकारा, उन्हें सहायता
देने आगे कोई नहीं आया। यहाँ तक की उन्होंने यहोवा
तक को पुकारा, किन्तु यहोवा से उनको उत्तर न
मिला।
42मैं अपने शत्रुओं को कूट कूट कर धूल में मिला
दूँगा, जिसे पवन उड़ा देती है। मैंने उनको कुचल दिया
और मिट्टी में मिला दिया।
43मुझे उनसे बचा ले जो मुझसे युद्ध करते हैं। मुझे
उन जातियों का मुखिया बना दे, जिनको मैं जानता तक
नहीं हूँ ताकि वे मेरी सेवा करेंगे।
44फिर वे लोग मेरी सुनेंगे और मेरे आदेशों को
पालेंगे, अन्य राष्ट्रों के जन मुझसे डरेंगे।
45वे विदेशी लोग मेरे सामने झुकेंगे क्योंकि वे मुझसे
भयभीत होंगे। वे भय से काँपते हुए अपने छिपे स्थानों से
बाहर निकल आयेंगे।
46यहोवा सजीव है! मैं अपनी चट्टान के यश गीत
गाता हूँ। मेरा महान परमेश्वर मेरी रक्षा करता है।
47धन्य है, मेरा पलटा लेने वाला परमेश्वर जिसने
देश-देश के लोगों को मेरे बस में कर दिया है।
48यहोवा, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है। तूने मेरी
सहायता की ताकि मैं उन लोगों को हरा सकूँ जो मेरे
विरुद्ध खड़े हुए। तूने मुझे कठोर व्यक्तियों से बचाया है।
49हे यहोवा, इसी कारण मैं देशों के बीच तेरी स्तुति
करता हूँ। इसी कारण मैं तेरे नाम का भजन गाता हूँ।
50यहोवा अपने राजा की सहायता बहुत से युद्धों को
जीतने में करता है! वह अपना सच्चा प्रेम, अपने चुने
हुए राजा पर दिखाता है। वह दाऊद और उसके वंशजों
के लिये सदा विश्वास योग्य रहेगा!

भजन 19

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1अम्बर परमेश्वर की महिमा बखानतें हैं, और आकाश
परमेश्वर की उत्तम रचनाओं का प्रदर्शन करते हैं।
2हर नया दिन उसकी नयी कथा कहता है, और हर
रात परमेश्वर की नयी नयी शक्तियों को प्रकट करता
है।
3न तो कोई बोली है, और न तो कोई भाषा, जहाँ
उसका शब्द नहीं सुनाई पड़ता।
4उसकी "वाणी" भूमण्डल में व्यापती है और उसके
"शब्द" धरती के छोर तक पहुँचते हैं। उनमें उसने सूर्य
के लिये एक घर सा तैयार किया है।
5सूर्य प्रफुल्ल हुए दुल्हे सा अपने शयनकक्ष से निकलता
है। सूर्य अपनी राह पर आकाश को पार करने निकल
पड़ता है, जैसे कोई खिलाड़ी अपनी दौड़ पूरी करने को
तत्पर हो।
6अम्बर के एक छोर से सूर्य चल पड़ता है और उस
पार पहुँचने को, वह सारी राह दौड़ता ही रहता है। ऐसी
कोई वस्तु नहीं जो अपने को उसकी गर्मी से छुपा ले।
यहोवा के उपदेश भी ऐसे ही होते है।
7यहोवा की शिक्षायें सम्पूर्ण होती हैं, ये भक्त जन को
शक्ति देती हैं। यहोवा की वाचा पर भरोसा किया जा
सकता है। जिनके पास बुद्धि नहीं है यह उन्हें सुबुद्धि
देता है।
8यहोवा के नियम न्यायपूर्ण होते हैं, वे लोगों को
प्रसन्नता से भर देते हैं। यहोवा के आदेश उत्तम हैं, वे
मनुष्यों को जीने की नयी राह दिखाते हैं।
9यहोवा की आराधना प्रकाश जैसी होती है, यह तो
सदा सर्वदा ज्योतिमय रहेगी। यहोवा के न्याय निष्पक्ष
होते हैं, वे पूरी तरह न्यायपूर्ण होते हैं।

10यहोवा के उपदेश उत्तम स्वर्ण और कुन्दन से भी
बढ़ कर मनोहर है। वे उत्तम शहद से भी अधिक मधुर
हैं, जो सीधे शहद के छत्ते से टपक आता है।
11हे यहोवा, तेरे उपदेश तेरे सेवक को आगाह करते
है, और जो उनका पालन करते हैं उन्हें तो वरदान
मिलते हैं।
12हे यहोवा, अपने सभी दोषों को कोई नहीं देख पाता
है। इसलिए तू मुझे उन पापों से बचा जो एकांत में छुप
कर किये जाते हैं।
13हे यहोवा, मुझे उन पापों को करने से बचा जिन्हें मैं
करना चाहता हूँ। उन पापों को मुझ पर शासन न
करने दे। यदि तू मुझे बचाये तो मैं पवित्र और अपने
पापों से मुक्त हो सकता हूँ।
14मुझको आशा है कि, मेरे वचन और चिंतन तुझको
प्रसन्न करेंगे। हे यहोवा, तू मेरी चट्टान, और मेरा
बचाने वाला है!

भजन 20

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1तेरी पुकार का यहोवा उत्तर दे, और जब तू विपत्ति
में हो तो याकूब का परमेश्वर तेरे नाम को बढ़ाये।
2परमेश्वर अपने पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे।
वह तुझको सिय्योन से सहारा देवे।
3परमेश्वर तेरी सब भेंटों को याद रखे, और तेरे सब
बलिदानों को स्वीकार करें।
4परमेश्वर तुझे उन सभी वस्तुओं को देवे जिन्हें तू
सचमुच चाहे। वह तेरी सभी योजनाएँ पूरी करें।
5परमेश्वर जब तेरी सहायता करे हम अति प्रसन्न हों
और हम परमेश्वर की बड़ाई के गीत गायें। जो कुछ भी
तुम माँगों यहोवा तुम्हें उसे दे।
6मैं अब जानता हूँ कि यहोवा सहायता करता है अपने
उस राजा की जिसको उसने चुना। परमेश्वर तो अपने
पवित्र स्वर्ग में विराजा है और उसने अपने चुने हुए
राजा को, उत्तर दिया उस राजा की रक्षा करने के लिये
परमेश्वर अपनी महाशक्ति को प्रयोग में लाता है।
7कुछ को भरोसा अपने रथों पर है, और कुछ को
निज सैनिकों पर भरोसा है किन्तु हम तो अपने यहोवा
परमेश्वर को स्मरण करते हैं।
8किन्तु वे लोग तो पराजित और युद्ध में मारे गये
किन्तु हम जीते और हम विजयी रहे।
9ऐसा कैसा हुआ? क्योंकि यहोवा ने अपने चुने हुए
राजा की रक्षा की उसने परमेश्वर को पुकारा था और
परमेश्वर ने उसकी सुनी।

भजन 21

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तेरी महिमा राजा को प्रसन्न करती है,
जब तू उसे बचाता है। वह अति आनन्दित होता है।
2तूने राजा को वे सब वस्तुएँ दी जो उसने चाहा, राजा
ने जो भी पाने की विनती की हे यहोवा, तूने मन वांछित
उसे दे दिया।
3हे यहोवा, सचमुच तूने बहुत आशीष राजा को दी।
उसके सिर पर तूने स्वर्ण मुकुट रख दिया।
4उसने तुझ से जीवन की याचना की और तूने उसे
यह दे दिया। परमेश्वर, तूने सदा सर्वदा के लिये राजा
को अमर जीवन दिया।
5तूने रक्षा की तो राजा को महा वैभव मिला। तूने
उसे आदर और प्रशंसा दी।
6हे परमेश्वर, सचमुच तूने राजा को सदा सर्वदा के
लिये, आशीर्वाद दिये। जब राजा को तेरा दर्शन मिलता
है, तो वह अति प्रसन्न होता है।
7राजा को सचमुच यहोवा पर भरोसा है, सो परम
परमेश्वर उसे निराश नहीं करेगा।
8हे परमेश्वर! तू दिखा देगा अपने सभी शत्रुओं को
कि तू सुदृढ़ शक्तिवान है। जो तुझ से घृणा करते हैं
तेरी शक्तिउन्हें पराजित करेगी।
9हे यहोवा, जब तू राजा के साथ होता है तो वह उस
भभकते भाड़ सा बन जाता है, जो सब कुछ भस्म
करता है। उसकी क्रोधाग्नि अपने सभी बैरियों को
भस्म कर देती है।
10परमेश्वर के बैरियों के वंश नष्ट हो जायेंगे, धरती
के ऊपर से वह सब मिटेंगे।
11ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि यहोवा, तेरे विरुद्ध उन
लोगों ने षड़यन्त्र रचा था। उन्होंने बुरा करने को योजनाएँ
रची थी, किन्तु वे उसमें सफल नहीं हुए।
12किन्तु यहोवा तूने ऐसे लोगों को अपने अधीन
किया, तूने उन्हें एक साथ रस्से से बाँध दिया, और
रस्सियों का फँदा उनके गलों में डाला। तूने उन्हें उनके
मुँह के बल दासों सा गिराया। 13यहोवा के और उसकी
शक्ति के गुण गाओ आओ हम गायें और उसके गीतों
को बजायें जो उसकी गरिमा से जुड़े हुए हैं।

भजन 22

प्रभात की हरिणी नामक राग पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भजन।

1हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे क्यों
त्याग दिया है? मुझे बचाने के लिये तू क्यों बहुत दूर है?
मेरी सहायता की पुकार को सुनने के लिये तू बहुत दूर
है।
2हे मेरे परमेश्वर, मैंने तुझे दिन में पुकारा किन्तु तूने
उत्तर नहीं दिया, और मैं रात भर तुझे पुकारता रहा।
3हे परमेश्वर, तू पवित्र है। तू राजा के जैसे विराजमान
है। इस्राएल की स्तुतियाँ तेरा सिंहासन हैं।
4हमारे पूर्वजों ने तुझ पर विश्वास किया। हाँ! हे
परमेश्वर, वे तेरे भरोसे थे! और तूने उनको बचाया।

5हे परमेश्वर, हमारे पूर्वजों ने तुझे सहायता को पुकारा
और वे अपने शत्रुओं से बच निकले। उन्होंने तुझ पर
विश्वास किया और वे निराश नहीं हुए।
6तो क्या मैं सचमुच ही कोई कीड़ा हूँ, जो लोग मुझसे
लज्जित हुआ करते हैं और मुझसे घृणा करते हैं?
7जो भी मुझे देखता है मेरी हँसी उड़ाता है, वे अपना
सिर हिलाते और अपने होंठ बिचकाते हैं।
8वे मुझसे कहते हैं कि, "अपनी रक्षा के लिये तू
यहोवा को पुकार ही सकता है। वह तुझ को बचा लेगा।
यदि तू उसको इतना भाता है तो निश्चय ही वह तुझ
को बचा लेगा।"
9हे परमेश्वर, सच तो यह है कि केवल तू ही है
जिसके भरोसे मैं हूँ। तूने मुझे उस दिन से ही सम्भाला
है, जब से मेरा जन्म हुआ। तूने मुझे आश्वस्त किया
और चैन दिया, जब मैं अभी अपनी माता का दूध पीता
था।
10ठीक उसी दिन से जब से मैं जन्मा हूँ, तू मेरा
परमेश्वर रहा है। जैसे ही मैं अपनी माता की कोख से
बाहर आया था, मुझे तेरी देखभाल में रख दिया गया
था।
11सो हे, परमेश्वर! मुझको मत बिसरा, संकट निकट
है, और कोई भी व्यक्ति मेरी सहायता को नहीं है।
12मैं उन लोगों से घिरा हूँ, जो शक्तिशाली साँड़ों जैसे
मुझे घेरे हुए हैं।
13वे उन सिंहो जैसे हैं, जो किसी जन्तु को चीर रहे हों
और दहाड़ते हो और उनके मुख विकराल खुले हुए हो।
14मेरी शक्ति धरती पर बिखरे जल सी लुप्त हो गई।
मेरी हड्डियाँ अलग हो गई हैं। मेरा साहस खत्म हो
चुका है।
15मेरा मुख सूखे ठीकर सा है। मेरी जीभ मेरे अपने
ही तालू से चिपक रही है। तूने मुझे मृत्यु की धूल में
मिला दिया है।
16मैं चारों तरफ कुत्तों से घिरा हूँ, दुष्ट जनों के उस
समूह ने मुझे फँसाया है। उन्होंने मेरे हाथों और पैरों को
सिंह के समान भेदा है।
17मुझको अपनी हड्डियाँ दिखाई देती हैं। ये लोग मुझे
घूर रहे हैं। ये मुझको हानि पहुँचाने को ताकते रहते हैं।
18वे मेरे कपड़े आपस में बाँट रहे हैं। मेरे वस्त्रों के
लिये वे पासे फेंक रहे हैं।
19हे यहोवा, तू मुझको मत त्याग। तू मेरा बल है, मेरी
सहायता कर। अब तू देर मत लगा।
20हे यहोवा, मेरे प्राण तलवार से बचा ले। उन कुत्तों
से तू मेरे मूल्यवान जीवन की रक्षा कर।
21मुझे सिंह के मुँह से बचा ले और साँड़ के सींगो से
मेरी रक्षा कर।
22हे यहोवा, मैं अपने भाइयों में तेरा प्रचार करुँगा। मैं
तेरी प्रशंसा तेरे भक्तों की सभा के बीच करुँगा।
23ओ यहोवा के उपासकों, यहोवा की प्रशंसा करो।
इस्राएल के वंशजों यहोवा का आदर करो। ओ इस्राएल
के सभी लोगों, यहोवा का भय मानों और आदर करो।
24क्योंकि यहोवा ऐसे मनुष्यों की सहायता करता है
जो विपत्ति में होते हैं। यहोवा उन से घृणा नहीं करता है।
यदि लोग सहायता के लिये यहोवा को पुकारे तो वह
स्वयं को उन से न छिपायेगा।
25हे यहोवा, मेरा स्तुति गान महासभा के बीच तुझसे
ही आता है। उन सबके सामने जो तेरी उपासना करते
हैं। मैं उन बातों को पूरा करुँगा जिनको करने की मैंने
प्रतिज्ञा की है।
26दीन जन भोजन पायेंगे और सन्तुष्ट होंगे। तुम लोग
जो उसे खोजते हुए आते हो उसकी स्तुति करो। मन
तुम्हारे सदा सदा को आनन्द से भर जायें।
27काश सभी दूर देशों के लोग यहोवा को याद करें
और उसकी ओर लौट आयें। काश विदेशों के सब लोग
यहोवा की आराधना करें।
28क्योंकि यहोवा राजा है। वह प्रत्येक राष्ट्र पर शासन
करता है।
29लोग असहाय घास के तिनकों की भाँति धरती पर
बिछे हुए हैं। हम सभी अपना भोजन खायेंगे और हम
सभी कब्रों में लेट जायेंगे। हम स्वयं को मरने से नहीं
रोक सकते हैं। हम सभी भूमि में गाड़ दिये जायेंगे। हममें
से हर किसी को यहोवा के सामने दण्डवत करना
चाहिए।
30और भविष्य में हमारे वंशज यहोवा की सेवा करेंगे।
लोग सदा सर्वदा उस के बारे में बखानेंगे।
31वे लोग आयेंगे और परमेश्वर की भलाई का प्रचार
करेंगे जिनका अभी जन्म ही नहीं हुआ।

भजन 23

दाऊद का एक पद।

1यहोवा मेरा गडेरिया है। जो कुछ भी मुझको अपेक्षित
होगा, सदा मेरे पास रहेगा।
2हरी भरी चरागाहों में मुझे सुख से वह रखता है। वह
मुझको शांत झीलों पर ले जाता है। 3वह अपने नाम के
निमित्त मेरी आत्मा को नयी शक्ति देता है। वह मुझको
अगुवाई करता है कि वह सचमुच उत्तम है।
4मैं मृत्यु की अंधेरी घाटी से गुजरते भी नहीं डरुँगा,
क्योंकि यहोवा तू मेरे साथ है। तेरी छड़ी, तेरा दण्ड
मुझको सुख देते हैं।
5हे यहोवा, तूने मेरे शत्रुओं के समक्ष मेरी खाने की
मेज सजाई है। तूने मेरे शीश पर तेल उँडेला है। मेरा
कटोरा भरा है और छलक रहा है।
6नेकी और करुणा मेरे शेष जीवन तक मेरे साथ
रहेंगी। मैं यहोवा के मन्दिर में बहुत बहुत समय तक
बैठा रहूँगा।।

भजन 24

दाऊद का एक पद।

1यह धरती और उस पर की सब वस्तुएँ यहोवा की
है। यह जगत और इसके सब व्यक्ति उसी के हैं।
2यहोवा ने इस धरती को जल पर रचा है। उसने
इसको जल-धारों पर बनाया।
3यहोवा के पर्वत पर कौन जा सकता है? कौन
यहोवा के पवित्र मन्दिर में खड़ा हो सकता और आराधना
कर सकता है?
4ऐसा जन जिसने पाप नहीं किया है, ऐसा जन जिसका
मन पवित्र है, ऐसा जन जिसने मेरे नाम का प्रयोग झूठ
को सत्य प्रतीत करने में न किया हो, और ऐसा जन
जिसने न झूठ बोला और न ही झूठे वचन दिए हैं। बस
ऐसे व्यक्ति ही वहाँ आराधना कर सकते हैं।
5सज्जन तो चाहते हैं यहोवा सब का भला करे। वे
सज्जन परमेश्वर से जो उनका उद्धारक है, नेक चाहते
हैं।
6वे सज्जन परमेश्वर के अनुसरण का जतन करते
हैं। वे याकूब के परमेश्वर के पास सहायता पाने जाते हैं।
7फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो! सनातन द्वारों, खुल
जाओ! प्रतापी राजा भीतर आएगा।
8यह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा ही वह राजा है,
वही सबल सैनिक है, यहोवा ही वह राजा है, वही
युद्धनायक है।
9फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो! सनातन द्वारों, खुल
जाओ! प्रतापी राजा भीतर आएगा।
10वह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा सर्वशक्तिमान ही
वह राजा है। वह प्रतापी राजा वही है।

भजन 25

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, मैं स्वयं को तुझे समर्पित करता हूँ।
2मेरे परमेश्वर, मेरा विश्वास तुझ पर है। मैं तुझसे
निराश नहीं होऊँगा। मेरे शत्रु मेरी हँसी नहीं उड़ा पायेंगे।
3ऐसा व्यक्ति, जो तुझमें विश्वास रखता है, वह निराश
नहीं होगा। किन्तु विश्वासघाती निराश होंगे और, वे
कभी भी कुछ नहीं प्राप्त करेंगे।
4हे यहोवा, मेरी सहायता कर कि मैं तेरी राहों को
सीखूँ। तू अपने मार्गों की मुझको शिक्षा दे।
5अपनी सच्ची राह तू मुझको दिखा और उसका
उपदेश मुझे दे। तू मेरा परमेश्वर मेरा उद्धारकर्ता है।
मुझको हर दिन तेरा भरोसा है।
6हे यहोवा, मुझ पर अपनी दया रख और उस ममता
को मुझ पर प्रकट कर, जिसे तू हरदम रखता है।
7अपने युवाकाल में जो पाप और कुकर्म मैंने किए,
उनको याद मत रख। हे यहोवा, अपने निज नाम निमित्त,
मुझको अपनी करुणा से याद कर।
8यहोवा सचमुच उत्तम है, वह पापियों को जीवन का
नेक राह सिखाता है।
9वह दीनजनों को अपनी राहों की शिक्षा देता है।
बिना पक्षपात के वह उनको मार्ग दर्शाता है।
10यहोवा की राहें उन लोगों के लिए क्षमापूर्ण और
सत्य है, जो उसके वाचा और प्रतिज्ञाओं का अनुसरण
करते हैं।
11हे यहोवा, मैंने बहुतेरे पाप किये हैं, किन्तु तूने
अपनी दया प्रकट करने को, मेरे हर पाप को क्षमा
कर दिया।
12यदि कोई व्यक्ति यहोवा का अनुसरण करना चाहे,
तो उसे परमेश्वर जीवन का उत्तम राह दिखाएगा।
13वह व्यक्ति उत्तम वस्तुओं का सुख भोगेगा, और
उस व्यक्ति की सन्ताने उस धरती की जिसे परमेश्वर ने
वचन दिया था स्थायी रहेंगे।
14यहोवा अपने भक्तों पर अपने भेद खोलता है। वह
अपने निज भक्तों को अपने वाचा की शिक्षा देता है।
15मेरी आँखें सहायता पाने को यहोवा पर सदा टिकी
रहती हैं। मुझे मेरी विपत्ति से वह सदा छुड़ाता है।
16हे यहोवा, मैं पीड़ित और अकेला हूँ। मेरी ओर मुड़
और मुझ पर दया दिखा।
17मेरी विपत्तियों से मुझको मुक्त कर। मेरी समस्या
सुलझाने की सहायता कर।
18हे यहोवा, मुझे परख और मेरी विपत्तियों पर दृष्टि
डाल। मुझको जो पाप मैंने किए हैं, उन सभी के लिए
क्षमा कर।
19जो भी मेरे शत्रु हैं, सभी को देख ले। मेरे शत्रु मुझसे
बैर रखते हैं, और मुझ को दुःख पहुँचाना चाहते हैं।
20हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर और मुझको बचा ले।
मैं तेरा भरोसा रखता हूँ। सो मुझे निराश मत कर।
21हे परमेश्वर, तू सचमुच उत्तम है। मुझको तेरा
भरोसा है, सो मेरी रक्षा कर।
22हे परमेश्वर, इस्राएल के जनों की उनके सभी
शत्रुओं से रक्षा कर।

भजन 26

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, मेरा न्याय कर, प्रमाणित कर कि मैंने
पवित्र जीवन बिताया है। मैंने यहोवा पर कभी विश्वास
करना नहीं छोड़ा।
2हे यहोवा, मुझे परख और मेरी जाँच कर, मेरे हृदय
में और बुद्धि को निकटता से देख।
3मैं तेरे प्रेम को सदा ही देखता हूँ, मैं तेरे सत्य के
सहारे जिया करता हूँ।
4मैं उन व्यर्थ लोगों में से नहीं हूँ।
5उन पापी टोलियों से मुझको घृणा है, मैं उन धूर्तों के
टोलों में सम्मिलित नहीं होता हूँ।

6हे यहोवा, मैं हाथ धोकर तेरी वेदी पर आता हूँ।
7हे यहोवा, मैं तेरे प्रशंसा गीत गाता हूँ, और जो आश्चर्य कर्म तूने किये हैं, उनके विषय में मैं गीत गाता हूँ।
8हे यहोवा, मुझको तेरा मन्दिर प्रिय है। मैं तेरे पवित्र तम्बू से प्रेम करता हूँ।
9हे यहोवा, तू मुझे उन पापियों के दल में मत मिला, जब तू उन हत्यारों का प्राण लेगा तब मुझे मत मार।
10वे लोग सम्भव है, छलने लग जाये। सम्भव है, वे लोग बुरे काम करने को रिश्वत ले लें।
11लेकिन मैं निश्चल हूँ, सो हे परमेश्वर, मुझ पर दयालु हो और मेरी रक्षा कर।
12मैं नेक जीवन जीता रहा हूँ। मैं तेरे प्रशंसा गीत, हे यहोवा, जब भी तेरी भक्त मण्डली साथ मिली, गाता रहा हूँ।

भजन 27

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, तू मेरी ज्योति और मेरा उद्धारकर्ता है। मुझे तो किसी से भी नहीं डरना चाहिए! यहोवा मेरे जीवन के लिए सुरक्षित स्थान है। सो मैं किसी भी व्यक्ति से नहीं डरुँगा।
2सम्भव है, दुष्ट जन मुझ पर चढ़ाई करें। सम्भव है, वे मेरे शरीर को नष्ट करने का यत्न करे। सम्भव है मेरे शत्रु मुझे नष्ट करने को मुझ पर आक्रमण का यत्न करें।
3पर चाहे पूरी सेना मुझको घेर ले, मैं नही डरुँगा। चाहे युद्धक्षेत्र में मुझ पर लोग प्रहार करे, मैं नहीं डरुँगा। क्योंकि मैं यहोवा पर भरोसा करता हूँ।
4मैं यहोवा से केवल एक वर माँगना चाहता हूँ, "मैं अपने जीवन भर यहोवा के मन्दिर में बैठा रहूँ, ताकि मैं यहोवा की सुन्दरता को देखूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान करुँ।"
5जब कभी कोई विपत्ति मुझे घेरेगी, यहोवा मेरी रक्षा करेगा। वह मुझे अपने तम्बू में छिपा लेगा। वह मुझे अपने सुरक्षित स्थान पर ऊपर उठा लेगा।
6मुझे मेरे शत्रुओं ने घेर रखा है। किन्तु अब उन्हें पराजित करने में यहोवा मेरा सहायक होगा। मैं उसके तम्बू में फिर भेंट चढ़ाऊँगा। जय जयकार करके बलियाँ अर्पित करुँगा। मैं यहोवा की अभिवंदना में गीतों को गाऊँगा और बजाऊँगा।
7हे यहोवा, मेरी पुकार सुन, मुझको उत्तर दे। मुझ पर दयालु रह।
8हे यहोवा, मैं चाहता हूँ अपने हृदय से तुझसे बात करुँ। हे यहोवा, मैं तुझसे बात करने तेरे सामने आया हूँ।
9हे यहोवा, अपना मुख अपने सेवक से मत मोड़। मेरी सहायता कर! मुझे तू मत ठुकरा! मेरा त्याग मत कर! मेरे परमेश्वर, तू मेरा उद्धारकर्ता है।
10मेरी माता और मेरे पिता ने मुझको त्याग दिया, पर यहोवा ने मुझे स्वीकारा और अपना बना लिया।
11हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण, मुझे अपना मार्ग सिखा। मुझे अच्छे कामों की शिक्षा दे।
12मुझ पर मेरे शत्रुओं ने आक्रमण किया है। उन्होंने मेरे लिए झूठ बोले हैं। वे मुझे हानि पहुँचाने के लिए झूठ बोले।
13मुझे भरोसा है कि मरने से पहले मैं सचमुच यहोवा की धार्मिकता देखूँगा।
14यहोवा से सहायता की बाट जोहते रहो! साहसी और सुदृढ़ बने रहो और यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा करते रहो।

भजन 28

1हे यहोवा, तू मेरी चट्टान है, मैं तुझको सहायता पाने को पुकार रहा हूँ। मेरी प्रार्थनाओं से अपने कान मत मूँद, यदि तू मेरी सहायता की पुकार का उत्तर नहीं देगा, तो लोग मुझे कब्र में मरा हुआ जैसा समझेंगे।
2हे यहोवा, तेरे पवित्र तम्बू की ओर मैं अपने हाथ उठाकर प्रार्थना करता हूँ। जब मैं तुझे पुकारुँ, तू मेरी सुन और तू मुझ पर अपनी करुणा दिखा।
3हे यहोवा, मुझे उन बुरे व्यक्तियों कि तरह मत सोच जो बुरे काम करते हैं। जो अपने पड़ोसियों से "सलाम" (शांति) करते हैं, किन्तु अपने हृदय में अपने पड़ोसियों के बारे में कुचक्र सोचते हैं।
4हे यहोवा, वे व्यक्ति अन्य लोगों का बुरा करते हैं। सो तू उनके साथ बुरी घटनाएँ घटा। उन दुर्जनों को तू वैसे दण्ड दे जैसे उन्हें देना चाहिए।
5दुर्जन उन उत्तम बातों को जो यहोवा करता नहीं समझते। वे परमेश्वर के उत्तम कर्मों को नहीं देखते। वे उसकी भलाई को नहीं समझते। वे तो केवल किसी का नाश करने का यत्न करते हैं।
6यहोवा की स्तुति करो! उसने मुझ पर करुणा करने की विनती सुनी।
7यहोवा मेरी शक्ति है, वह मेरी ढाल है। मुझे उसका भरोसा था। उसने मेरी सहायता की। मैं अति प्रसन्न हूँ, और उसके प्रशंसा के गीत गाता हूँ।
8यहोवा अपने चुने राजा की रक्षा करता है। वह उसे हर पल बचाता है। यहोवा ही उसका बल है।
9हे परमेश्वर, अपने लोगों की रक्षा कर। जो तेरे हैं उनको आशीष दे। उनको मार्ग दिखा और सदा सर्वदा उनका उत्थान कर।

भजन 29

दाऊद का एक गीत।

1परमेश्वर के पुत्रों, यहोवा की स्तुति करो! उसकी महिमा और शक्ति के प्रशंसा गीत गाओ।

2यहोवा की प्रशंसा करो और उसके नाम को आदर
प्रकट करो। विशेष वस्त्र पहनकर उसकी आराधना
करो।
3समुद्र के ऊपर यहोवा की वाणी निज गरजती है।
परमेश्वर की वाणी महासागर के ऊपर मेघ के गरजन
की तरह गरजता है।
4यहोवा की वाणी उसकी शक्ति को दिखाती है। उसकी
ध्वनि उसके महिमा को प्रकट करती है।
5यहोवा की वाणी देवदार वृक्षों को तोड़ कर चकनाचूर
कर देता है। यहोवा लबानोन के विशाल देवदार वृक्षों
को तोड़ देता है।
6यहोवा लबानोन के पहाड़ों को कँपा देता है। वे
नाचते बछड़े की तरह दिखने लगता है। हेर्मोन का
पहाड़ काँप उठता है और उछलती जवान बकरी की
तरह दिखता है।
7यहोवा की वाणी बिजली की कौंधो से टकराती है।
8यहोवा की वाणी मरुस्थलों को कँपा देती है। यहोवा
के स्वर से कादेश का मरुस्थल काँप उठता है।
9यहोवा की वाणी से हरिण भयभीत होते हैं। यहोवा
दुर्गम वनों को नष्ट कर देता है। किन्तु उसके मन्दिर में
लोग उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं।
10जलप्रलय के समय यहोवा राजा था। वह सदा के
लिये राजा रहेगा।
11यहोवा अपने भक्तों की रक्षा सदा करे, और अपने
जनों को शांति का आशीष दे।

भजन 30

मन्दिर के समर्पण के लिए दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तूने मेरी विपत्तियों से मेरा उद्धार किया
है। तूने मेरे शत्रुओं को मुझको हराने और मेरी
हँसी उड़ाने नहीं दी। सो मैं तेरे प्रति आदर प्रकट
करूँगा।
2हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तुझसे प्रार्थना की। तूने
मुझको चँगा कर दिया।
3कब्र से तूने मेरा उद्धार किया, और मुझे जीने दिया।
मुझे मुर्दों के साथ मुर्दों के गर्त में पड़े हुए नहीं रहना
पड़ा।
4परमेश्वर के भक्तों, यहोवा की स्तुति करो! उसके
शुभ नाम की प्रशंसा करो।
5यहोवा क्रोधित हुआ, सो निर्णय हुआ "मृत्यु।" किन्तु
उसने अपना प्रेम प्रकट किया और मुझे "जीवन" दिया।
मैं रात को रोते बिलखाते सोया। अगली सुबह मैं गाता
हुआ प्रसन्न था।
6मैं अब यह कह सकता हूँ, और मैं जानता हूँ यह
निश्चय सत्य है, "मैं कभी नहीं हारुँगा!"
7हे यहोवा, तू मुझ पर दयालु हुआ और मुझे फिर
अपने पवित्र पर्वत पर खड़े होने दिया। तूने थोड़े समय
के लिए अपना मुख मुझसे फेरा और मैं बहुत घबरा
गया।
8हे परमेश्वर, मैं तेरी ओर लौटा और विनती की।
मैंने मुझ पर दया दिखाने की विनती की।
9मैंने कहा, "परमेश्वर क्या यह अच्छा है कि मैं मर
जाऊँ और कब्र के भीतर नीचे चला जाऊँ? मरे हुए
जन तो मिट्टी में लेटे रहते हैं, वे तेरे नेक की स्तुति जो
सदा सदा बनी रहती है नहीं करते।
10हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन और मुझ पर करुणा
कर! हे यहोवा, मेरी सहायता कर!"
11मैंने प्रार्थना की और तूने सहायता की! तूने मेरे
रोने को नृत्य में बदल दिया। मेरे शोक वस्त्र को तूने
उतार फेंका, और मुझे आनन्द में सराबोर कर दिया।
12हे यहोवा, मैं तेरा सदा यशगान करुँगा। मैं ऐसा
करुँगा जिससे कभी नीरवता न व्यापे। तेरी प्रशंसा सदा
कोई गाता रहेगा।

भजन 31

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, मैं तेरे भरोसे हूँ, मुझे निराश मत कर।
मुझ पर कृपालु हो और मेरी रक्षा कर।
2हे यहोवा, मेरी सुन, और तू शीघ्र आकर मुझको
बचा ले। मेरी चट्टान बन जा, मेरा सुरक्षा बन। मेरा गढ़
बन जा, मेरी रक्षा कर!
3हे परमेश्वर, तू मेरी चट्टान है, सो अपने निज नाम
हेतु मुझको राह दिखा और मेरी अगुवाई कर।
4मेरे लिए मेरे शत्रुओं ने जाल फैलाया है। उनके फँदे
से तू मुझको बचा ले, क्योंकि तू मेरा सुरक्षास्थल है।
5हे परमेश्वर यहोवा, मैं तो तुझ पर भरोसा कर
सकता हूँ। मैं मेरा जीवन तेरे हाथ में सौंपता हूँ। मेरी
रक्षा कर!
6जो मिथ्या देवों को पूजते रहते हैं, उन लोगों से मुझे
घृणा है। मैं तो बस यहोवा में विश्वास रखता हूँ।
7हे यहोवा, तेरी करुणा मुझको अति आनन्दित करती
है। तूने मेरे दुःखों को देख लिया और तू मेरे पीड़ाओं के
विषय में जानता है।
8तू मेरे शत्रुओं को मुझ पर भारी पड़ने नहीं देगा। तू
मुझे उनके फँदों से छुडाएगा।
9हे यहोवा, मुझ पर अनेक संकट हैं। सो मुझ पर
कृपा कर। मैं इतना व्याकुल हूँ कि मेरी आँखें दुःख
रही हैं। मेरे गला और पेट पीड़ित हो रहे हैं।
10मेरा जीवन का अंत दुःख में हो रहा है। मेरे वर्ष
आहों में बीतते जाते हैं। मेरी वेदनाएँ मेरी शक्ति को
निचोड़ रही हैं। मेरा बल मेरा साथ छोड़ता जा रहा है।
11मेरे शत्रु मुझसे घृणा रखते हैं। मेरे पड़ोसी मेरे बैरी
बने हैं। मेरे सभी सम्बन्धी मुझे राह में देख कर मुझसे
डर जाते हैं और मुझसे वे सब कतराते हैं।

12मुझको लोग पूरी तरह से भूल चुके हैं। मैं तो किसी
खोये औजार सा हो गया हूँ।
13मैं उन भयंकर बातों को सुनता हूँ जो लोग मेरे
विषय में करते हैं। वे सभी लोग मेरे विरुद्ध हो गए हैं। वे
मुझे मार डालने की योजनाएँ रचते हैं।
14हे यहोवा, मेरा भरोसा तुझ पर है। तू मेरा परमेश्वर
है।
15मेरा जीवन तेरे हाथों में है। मेरे शत्रुओं से मुझको
बचा ले। उन लोगों से मेरी रक्षा कर, जो मेरे पीछे पड़े हैं।
16कृपा करके अपने दास को अपना ले। मुझ पर
दया कर और मेरी रक्षा कर!
17हे यहोवा, मैंने तेरी विनती की। इसलिए मैं निराश
नहीं होऊँगा। बुरे मनुष्य तो निराश हो जाएँगे। और वे
कब्र में नीरव चले जाएँगे।
18दुर्जन डींग हाँकते हैं और सज्जनों के विषय में झूठ
बोलते हैं। वे दुर्जन बहुत ही अभिमानी होते हैं। किन्तु
उनके होंठ जो झूठ बोलते रहते हैं, शब्द हीन होंगे।
19हे परमेश्वर, तूने अपने भक्तों के लिए बहुत सी
अद्‌भुत वस्तुएँ छिपा कर रखी हैं। तू सबके सामने ऐसे
मनुष्यों के लिए जो तेरे विश्वासी हैं, भले काम करता
है।
20दुर्जन सज्जनों को हानि पहुँचाने के लिए जुट जाते
हैं। वे दुर्जन लड़ाई भड़काने का जतन करते हैं। किन्तु
तू सज्जनों को उनसे छिपा लेता है, और उन्हें बचा लेता
है। तू सज्जनों की रक्षा अपनी शरण में करता है।
21यहोवा कि स्तुति करो! जब नगर को शत्रुओं ने
घेर रखा था, तब उसने अपना सच्चा प्रेम अद्‌भुत रीति
से दिखाया।
22मैं भयभीत था, और मैंने कहा था, "मैं तो ऐसे
स्थान पर हूँ जहाँ मुझे परमेश्वर नहीं देख सकता है।"
किन्तु हे परमेश्वर, मैंने तूझसे विनती की, और तूने
मेरी सहायता की पुकार सुन ली।
23परमेश्वर के भक्तों, तुम को यहोवा से प्रेम करना
चाहिए! यहोवा उन लोगों को जो उसके प्रति सच्चे हैं,
रक्षा करता है। किन्तु यहोवा उनको जो अपनी ताकत
की ढोल पीटते हैं। उनको वह वैसा दण्ड देता है, जैसा
दण्ड उनको मिलना चाहिए।
24अरे ओ मनुष्यों जो यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा
करते हो, सुदृढ़ और साहसी बनो!

भजन 32

दाऊद का एक गीत।

1धन्य है वह जन जिसके पाप क्षमा हुए। धन्य है वह
जन जिसके पाप धुल गए।
2धन्य है वह जन जिसे यहोवा दोषी न कहे, धन्य है
वह जन जो अपने गुप्त पापों को छिपाने का जतन न
करे।
3हे परमेश्वर, मैंने तुझसे बार बार विनती की, किन्तु
अपने छिपे पाप तुझको नहीं बताए। जितनी बार मैंने
तेरी विनती की, मैं तो और अधिक दुर्बल होता चला
गया।
4हे परमेश्वर, तूने मेरा जीवन दिन रात कठिन से
कठिनतर बना दिया। मैं उस धरती सा सूख गया हूँ जो
ग्रीष्म ताप से सूख गई है।
5किन्तु फिर मैंने यहोवा के समक्ष अपने सभी पापों
को मानने का निश्चय कर लिया है। हे यहोवा, मैंने
तुझे अपने पाप बता दिये। मैंने अपना कोई अपराध
तुझसे नहीं छुपाया। और तूने मुझे मेरे पापों के लिए
क्षमा कर दिया!
6इसलिए, परमेश्वर, तेरे भक्तों को तेरी विनती करनी
चाहिए। यहाँ तक कि जब विपत्ति जल प्रलय सी उमड़े
तब भी तेरे भक्तों को तेरी विनती करनी चाहिए।
7हे परमेश्वर, तू मेरा रक्षास्थल है। तू मुझको मेरी
विपत्तियों से उबारता है। तू मुझे अपनी ओट में लेकर
विपत्तियों से बचाता है। सो इसलिए मैं, जैस तूने रक्षा की
है, उन्हीं बातों के गीत गाया करता हूँ।
8यहोवा कहता है, "मैं तुझे जैसे चलना चाहिए सिखाऊँगा
और तुझे वह राह दिखाऊँगा। मैं तेरी रक्षा करुँगा और
मैं तेरा अगुवा बनूँगा।
9सो तू घोड़े या गधे सा बुद्धिहीन मत बन। उन पशुओं
को तो मुखरी और लगाम से चलाया जाता है। यदि तू
उनको लगाम या रास नहीं लगाएगा, तो वे पशु निकट
नहीं आयेंगे।"
10दुर्जनों को बहुत सी पीड़ाएँ घेरेंगी। किन्तु उन लोगों
को जिन्हें यहोवा पर भरोसा है, यहोवा का सच्चा प्रेम
ढक लेगा।
11सज्जन तो यहोवा में सदा मगन और आनन्दित रहते
हैं। अरे ओ लोगों, तुम सब पवित्र मन के साथ आनन्द
मनाओ।

भजन 33

1हे सज्जन लोगों, यहोवा में आनन्द मनाओ! सज्जनो
सत पुरुषों, उसकी स्तुति करो!
2वीणा बजाओ और उसकी स्तुति करो! यहोवा के
लिए दस तार वाले सारंगी बजाओ।
3अब उसके लिये नया गीत गाओ। खुशी की धुन
सुन्दरता से बजाओ!
4परमेश्वर का वचन सत्य है। जो भी वह करता है
उसका तुम भरोसा कर सकते हो।
5नेकी और निष्पक्षता परमेश्वर को भाती है। यहोवा
ने अपने निज करुणा से इस धरती को भर दिया है।
6यहोवा ने आदेश दिया और सृष्टि तुरंत अस्तित्व में
आई। परमेश्वर के श्वास ने धरती पर हर वस्तु
रचा।

7परमेश्वर ने सागर में एक ही स्थान पर जल समेटा।
वह सागर को अपने स्थान पर रखता है।
8धरती के हर मनुष्य को यहोवा का आदर करना
और डरना चाहिए। इस विश्व में जो भी मनुष्य बसे हैं,
उनको चाहिए की वे उससे डरें।
9क्योंकि परमेश्वर को केवल बात भर कहनी है,
और वह बात तुरंत घट जाती है। यदि वह किसी को
रुकने का आदेश दे, तो वह तुरंत थम जाती है।
10परमेश्वर चाहे तो सभी सुझाव व्यर्थ करे। वह
किसी भी जन के सब कुचक्रों को व्यर्थ कर सकता है।
11किन्तु यहोवा के उपदेश सदा ही खरे होते हैं।
उसकी योजनाएँ पीढी दर पीढी खरी होती हैं।
12धन्य हैं वे मनुष्य जिनका परमेश्वर यहोवा है।
परमेश्वर ने उन्हें अपने ही मनुष्य होने को चुना है।
13यहोवा स्वर्ग से नीचे देखता रहता है। वह सभी
लोगों को देखता रहता है।
14वह ऊपर ऊँचे पर संस्थापित आसन से धरती पर
रहने वाले सब मनुष्यों को देखता रहता है।
15परमेश्वर ने हर किसी का मन रचा है। सो कोई
क्या सोच रहा है वह समझता है।
16राजा की रक्षा उसके महाबल से नहीं होती है, और
कोई सैनिक अपने निज शक्ति से सुरक्षित नहीं रहता।
17युद्ध में सचमुच अश्वबल विजय नहीं देता। सचमुच
तुम उनकी शक्ति से बच नहीं सकते।
18जो जन यहोवा का अनुसरण करते हैं, उन्हें यहोवा
देखता है और रखवाली करता है। जो मनुष्य उसकी
आराधना करते हैं,उनको उसका महान प्रेम बचाता है।
19परमेश्वर उन लोगों को मृत्यु से बचाता है। वे जब
भूखे होते तब वह उन्हें शक्ति देता है।
20इसलिए हम यहोवा की बाट जोहेंगे। वह हमारी
सहायता और हमारी ढाल है।
21परमेश्वर मुझको आनन्दित करता है। मुझे सचमुच
उसके पवित्र नाम पर भरोसा है।
22हे यहोवा, हम सचमुच तेरी आराधना करते हैं! सो
तू हम पर अपना महान प्रेम दिखा।

भजन 34

जब दाऊद ने अबीमेलेक के सामने पागलपन का आचरण किया। जिससे अबीमेलेक उसे भगा दे, इस प्रकार दाऊद उसे छोड़कर चला गया। उसी अवसर का दाऊद का एक पद।

1मैं यहोवा को सदा धन्य कहूँगा। मेरे होठों पर सदा
उसकी स्तुति रहती है।
2हे नम्र लोगों, सुनो और प्रसन्न होओ। मेरी आत्मा
यहोवा पर गर्व करती है।
3मेरे साथ यहोवा की गरिमा का गुणगान करो। आओ,
हम उसके नाम का अभिनन्दन करें।
4मैं परमेश्वर के पास सहायता माँगने गया। उसने
मेरी सुनी। उसने मुझे उन सभी बातों से बचाया जिनसे
मैं डरता हूँ।
5परमेश्वर की शरण में जाओ। तुम स्वीकारे जाओगे।
तुम लज्जा मत करो।
6इस दीन जन ने यहोवा को सहायता के लिए पुकारा,
और यहोवा ने मेरी सुन ली। और उसने सब विपत्तियों
से मेरी रक्षा की।
7यहोवा का दूत उसके भक्त जनों के चारों ओर डेरा
डाले रहता है। और यहोवा का दूत उन लोगों की रक्षा
करता है।
8चखो और समझो कि यहोवा कितना भला है। वह
व्यक्ति जो यहोवा के भरोसे है सचमुच प्रसन्न रहेगा।
9यहोवा के पवित्र जन को उसकी आराधना करनी
चाहिए। यहोवा के भक्तों के लिए कोई अन्य सुरक्षित
स्थान नहीं है।
10आज जो बलवान हैं दुर्बल और भूखे हो जाएंगे।
किन्तु जो परमेश्वर के शरण आते हैं वे लोग हर उत्तम
वस्तु पाएंगे।
11हे बालकों, मेरी सुनो, और मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि
यहोवा की सेवा कैसे करें।
12यदि कोई व्यक्ति जीवन से प्रेम करता है, और
अच्छा और दीर्घायु जीवन चाहता है,
13तो उस व्यक्ति को बुरा नहीं बोलना चाहिए, उस
व्यक्ति को झूठ नहीं बोलना चाहिए।
14बुरे काम मत करो। नेक काम करते रहो। शांति
के कार्य करो। शांति के प्रयासों में जुटे रहो जब तक
उसे पा न लो।
15यहोवा सज्जनों की रक्षा करता है। उनकी प्रार्थनाओं
पर वह कान देता है।
16किन्तु यहोवा, जो बुरे काम करते हैं, ऐसे व्यक्तियों
के विरुद्ध होता है। वह उनको पूरी तरह नष्ट करता है।
17यहोवा से विनती करो, वह तुम्हारी सुनेगा। वह
तुम्हें तुम्हारी सब विपत्तियों से बचा लेगा।
18लोगों को विपत्तियाँ आ सकती है और वे अभिमानी
होना छोड़ते हैं। यहोवा उन लोगों के निकट रहता है।
जिनके टूटे मन हैं उनको वह बचा लेगा।
19सम्भव है सज्जन भी विपत्तियों में घिर जाए। किन्तु
यहोवा उन सज्जनों की उनकी हर समस्या से रक्षा
करेगा।
20यहोवा उनकी सब हड्डियों की रक्षा करेगा। उनकी
एक भी हड्डी नहीं टूटेगी।
21किन्तु दुष्ट की दुष्टता उनको ले डूबेगी। सज्जन के
विरोधी नष्ट हो जायेंगे।
22यहोवा अपने हर दास की आत्मा बचाता है। जो
लोग उस पर निर्भर रहते हैं, वह उन लोगों को नष्ट
नहीं होने देगा।

भजन 35

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, मेरे मुकद्दमों को लड़। मेरे युद्धों को लड़!
2हे यहोवा, कवच और ढाल धारण कर, खड़ा हो
और मेरी रक्षा कर।
3बरछी और भाला उठा, और जो मेरे पीछे पड़े हैं
उनसे युद्ध कर। हे यहोवा, मेरी आत्मा से कह, "मैं तेरा
उद्धार करुँगा।"
4कुछ लोग मुझे मारने पीछे पड़े हैं। उन्हें निराश और
लज्जित कर। उनको मोड़ दे और उन्हें भगा दे। मुझे
क्षति पहुँचाने का कुचक्र जो रच रहे हैं उन्हें असमंजस
में डाल दे।
5तू उनको ऐसा भूसे सा बना दे, जिसको पवन उड़ा
ले जाती है। उनके साथ ऐसा होने दे कि, उनके पीछे
यहोवा के दूत पड़ें।
6हे यहोवा, उनकी राह अन्धेरे और फिसलनी हो
जाए। यहोवा का दूत उनके पीछे पड़े।
7मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया है। किन्तु वे मनुष्य
मुझे बिना किसी कारण के, फँसाना चाहते हैं। वे मुझे
फँसाना चाहते हैं।
8सो, हे यहोवा, ऐसे लोगों को उनके अपने ही जाल में
गिरने दे। उनको अपने ही फंदो में पड़ने दे, और कोई
अज्ञात खतरा उन पर पड़ने दे।
9फिर तो यहोवा मैं तुझ में आनन्द मनाऊँगा। यहोवा
के संरक्षण में मैं प्रसन्न होऊँगा।
10मैं अपने सम्पूर्ण मन से कहूँगा, हे "यहोवा, तेरे
समान कोई नहीं है। तू सबलों से दुर्बलों को बचाता है।
जो जन शक्तिशाली होते हैं, उनसे तू वस्तुओं को छीन
लेता है और दीन और असहाय लोगों को देता है।"
11एक झूठा साक्षी दल मुझको दुःख देने को कुचक्र
रच रहा है। ये लोग मुझसे अनेक प्रश्न पूछेंगे। मैं नहीं
जानता कि वे क्या बात कर रहे हैं।
12मैंने तो बस भलाई ही भलाई की है। किन्तु वे
मुझसे बुराई करेंगे। हे यहोवा, मुझे वह उत्तम फल दे जो
मुझे मिलना चाहिए।
13उन पर जब दुःख पड़ा, उनके लिए मैं दुःखी हुआ।
मैंने भोजन को त्याग कर अपना दुःख व्यक्त किया। जो
मैंने उनके लिए प्रार्थना की, क्या मुझे यही मिलना
चाहिए?
14उन लोगों के लिए मैंने शोक वस्त्र धारण किये।
मैंने उन लोगों के साथ मित्र वरन भाई जैसा व्यवहार
किया। मैं उस रोते मनुष्य सा दुःखी हुआ, जिसकी माता
मर गई हो। ऐसे लोगों से शोक प्रकट करने के लिए
मैंने काले वस्त्र पहन लिए। मैं दुःख में डूबा और सिर
झुका कर चला।
15पर जब मुझसे कोई एक चूक हो गई, उन लोगों ने
मेरी हँसी उड़ाई। वे लोग सचमुच मेरे मित्र नहीं थे। मैं
उन लोगों को जानता तक नहीं। उन्होंने मुझको घेर
लिया और मुझ पर प्रहार किया।
16उन्होंने मुझको गालियाँ दीं और हँसी उड़ायी। अपने
दाँत पीसकर उन लोगों ने दर्शाया कि वे मुझ पर क्रुद्ध
हैं।
17मेरे स्वामी, तू कब तक यह सब बुरा होते हुए
देखेगा? ये लोग मुझे नाश करने का प्रयत्न कर रहे हैं।
हे यहोवा, मेरे प्राण बचा ले। मेरे प्रिय जीवन की रक्षा
कर। वे सिंह जैसे बन गए हैं।
18हे यहोवा, मैं महासभा में तेरी स्तुति करुँगा। मैं
बलशाली लोगों के संग रहते तेरा यश बखानूँगा।
19मेरे मिथ्यावादी शत्रु हँसते नहीं रहेंगे। सचमुच मेरे
शत्रु अपनी छुपी योजनाओं के लिए दण्ड पाएँगे।
20मेरे शत्रु सचमुच शांति की योजनाएँ नहीं रचते हैं।
वे इस देश के शांतिप्रिय लोगों के विरोध में छिपे छिपे
बुरा करने का कुचक्र रच रहे हैं।
21मेरे शत्रु मेरे लिए बुरी बातें कह रहे हैं। वे झूठ
बोलते हुए कह रहे हैं, "अहा! हम सब जानते हैं तुम
क्या कर रहे हो!"
22हे यहोवा, तू सचमुच देखता है कि क्या कुछ घट
रहा है। सो तू छुपा मत रह, मुझको मत छोड़।
23हे यहोवा, जाग! उठ खड़ा हो जा! मेरे परमेश्वर
यहोवा मेरी लड़ाई लड़, और मेरा न्याय कर।
24हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपनी निष्पक्षता से मेरा
न्याय कर, तू उन लोगों को मुझ पर हँसने मत दे।
25उन लोगों को ऐसे मत कहने दे, "अहा! हमें जो
चाहिए था उसे पा लिया!" हे यहोवा, उन्हें मत कहने दे,
"हमने उसको नष्ट कर दिया।"
26मैं आशा करता हूँ कि मेरे शत्रु निराश और लज्जित
होंगे। वे जन प्रसन्न थे जब मेरे साथ बुरी बातें घट रही
थीं। वे सोचा करते कि वे मुझसे श्रेष्ठ हैं! सो ऐसे लोगों
को लाज में डूबने दे।
27कुछ लोग मेरा नेक चाहते हैं। मैं आशा करता हूँ
कि वे बहुत आनन्दित होंगे! वे हमेशा कहते हैं, "यहोवा
महान है! वह अपने सेवक की अच्छाई चाहता है।"
28सो, हे यहोवा, मैं लोगों को तेरी अच्छाई बताऊँगा।
हर दिन, मैं तेरी स्तुति करुँगा।

भजन 36

संगीत निर्देशक के लिए यहोवा के दास
दाऊद का एक पद।

1बुरा व्यक्ति बहुत बुरा करता है जब वह स्वयं से
कहता है, "मैं परमेश्वर का आदर नहीं करता और न
ही डरता हूँ।"
2वह मनुष्य स्वयं से झूठ बोलता है। वह मनुष्य स्वयं
अपने खोट को नहीं देखता। इसलिए वह क्षमा नहीं
माँगता।

3उसके वचन बस व्यर्थ और झूठे होते हैं। वह विवेकी
नहीं होता और न ही अच्छे काम सीखता है।
4रात को वह अपने बिस्तर में कुचक्र रचता है। वह
जाग कर कोई भी अच्छा काम नहीं करता। वह कुकर्म
को छोड़ना नहीं चाहता।
5हे यहोवा, तेरा सच्चा प्रेम आकाश से भी ऊँचा है। हे
यहोवा, तेरी सच्चाई मेघों से भी ऊँची है।
6हे यहोवा, तेरी धार्मिकता सर्वोच्च पर्वत से भी ऊँची
है। तेरी शोभा गहरे सागर से गहरी है। हे यहोवा, तू
मनुष्यों और पशुओं का रक्षक है।
7तेरी करुणा से अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं हैं।
मनुष्य और दूत तेरे शरणागत हैं।
8हे यहोवा, तेरे मन्दिर की उत्तम बातों से वे नयी
शक्ति पाते हैं। तू उन्हें अपने अद्‌भुत नदी के जल को
पीने देता है।
9हे यहोवा, तुझसे जीवन का झरना फूटता है! तेरी
ज्योति ही हमें प्रकाश दिखाती है।
10हे यहोवा, जो तुझे सच्चाई से जानते हैं, उनसे प्रेम
करता रह। उन लोगों पर तू अपनी निज नेकी बरसा
जो तेरे प्रति सच्चे हैं।
11हे यहोवा, तू मुझे अभिमानियों के जाल में मत
फँसने दे। दुष्ट जन मुझको कभी न पकड़ पायें।
12उनके कब्रों के पत्थरो पर यह लिख दे: "दुष्ट लोग
यहाँ पर गिरे हैं। वे कुचले गए। वे फिर कभी खड़े नहीं
हो पायेंगे।"

भजन 37

दाऊद को समर्पित।

1दुर्जनों से मत घबरा, जो बुरा करते हैं ऐसे मनुष्यों से
ईर्ष्या मत रख।
2दुर्जन मनुष्य घास और हरे पौधों की तरह शीघ्र
पीले पड़ जाते हैं और मर जाते हैं।
3यदि तू यहोवा पर भरोसा रखेगा और भले काम
करेगा तो तू जीवित रहेगा और उन वस्तुओं का भोग
करेगा जो धरती देती है।
4यहोवा की सेवा में आनन्द लेता रह, और यहोवा
तुझे तेरा मन चाहा देगा।
5यहोवा के भरोसे रह। उसका विश्वास कर। वह
वैसा करेगा जैसे करना चाहिए।
6दोपहर के सूर्य सा, यहोवा तेरी नेकी और खरेपन
को चमकाए।
7यहोवा पर भरोसा रख और उसके सहारे की बाट
जोह। तू दुष्टों की सफलता देखकर घबराया मत कर। तू
दुष्टों की दुष्ट योजनाओं को सफल होते देख कर मत
घबरा।
8तू क्रोध मत कर! तू उन्मादी मत बन! उतना मत
घबरा जा कि तू बुरे काम करना चाहे।
9क्योंकि बुरे लोगों को तो नष्ट किया जायेगा। किन्तु
वे लोग जो यहोवा पर भरोसे हैं, उस धरती को पायेंगे
जिसे देने का परमेश्वर ने वचन दिया।
10थोड़े ही समय बाद कोई दुर्जन नहीं बचेगा। ढूँढने से
भी तुमको कोई दुष्ट नहीं मिलेगा!
11नम्र लोग वह धरती पाएंगे जिसे परमेश्वर ने देने
का वचन दिया है। वे शांति का आनन्द लेंगे।
12दुष्ट लोग सज्जनों के लिये कुचक्र रचते हैं। दुष्ट जन
सज्जनों के ऊपर दाँत पीसकर दिखाते हैं कि वे क्रोधित
हैं।
13किन्तु हमारा स्वामी उन दुर्जनों पर हँसता है। वह
उन बातों को देखता है जो उन पर पड़ने को है।

14दुर्जन तो अपनी तलवारें उठाते हैं और धनुष साधते
हैं। वे दीनों, असहायों को मारना चाहते हैं। वे सच्चे,
सज्जनों को मारना चाहते हैं।
15किन्तु उनके धनुष चूर चूर हो जायेंगे। और उनकी
तलवारें उनकेअपने ही हृदयों में उतरेंगी।
16थोड़े से भले लोग, दुर्जनों की भीड़ से भी उत्तम है।
17क्योंकि दुर्जनों को तो नष्ट किया जायेगा। किन्तु
भले लोगों का यहोवा ध्यान रखता है।
18शुद्ध सज्जनों को यहोवा उनके जीवन भर बचाता
है। उनका प्रतिफल सदा बना रहेगा।
19जब संकट होगा, सज्जन नष्ट नहीं होंगे। जब अकाल
पड़ेगा, सज्जनों के पास खाने को भरपूर होगा।
20किन्तु बुरे लोग यहोवा के शत्रु हुआ करते हैं। सो
उन बुरे जनों को नष्ट किया जाएगा, उनकी घाटियाँ
सूख जाएंगी और जल जाएंगी। उनको तो पूरी तरह से
मिटा दिया जायेगा।
21दुष्ट तो तुरंत ही धन उधार माँग लेता है, और
उसको फिर कभी नहीं चुकाता। किन्तु एक सज्जन
औरों को प्रसन्नता से देता रहता है।
22यदि कोई सज्जन किसी को आशीर्वाद दे, तो वे
मनुष्य उस धरती को जिसे परमेश्वर ने देने का वचन
दिया है, पाएंगे। किन्तु यदि वह शाप दे मनुष्यों को तो वे
मनुष्य नाश हो जाएंगे।
23यहोवा, सैनिक की सावधानी से चलने में सहायता
करता है। और वह उसको पतन से बचाता है।
24सैनिक यदि दौड़ कर शत्रु पर प्रहार करें, तो
उसके हाथ को यहोवा सहारा देता है, और उसको
गिरने से बचाता है।
25मैं युवक हुआ करता था पर अब मैं बूढ़ा हूँ। मैंने
कभी यहोवा को सज्जनों को असहाय छोड़ते नहीं देखा।
मैंने कभी सज्जनों की संतानों को भीख माँगते नहीं
देखा।
26सज्जन सदा मुक्त भाव से दान देता है। सज्जनों के
बालक वरदान हुआ करते हैं।

27यदि तू कुकर्मों से अपना मुख मोड़े, और यदि तू
अच्छे कामों को करता रहे, तो फिर तू सदा सर्वदा
जीवित रहेगा।
28यहोवा खरेपन से प्रेम करता है, वह अपने निज
भक्तों को असहाय नहीं छोड़ता। यहोवा अपने निज
भक्तों की सदा रक्षा करता है, और वह दुष्ट जन को
नष्ट कर देता है।
29सज्जन उस धरती को पायेंगे जिसे देने का परमेश्वर
ने वचन दिया है, वे उस में सदा सर्वदा निवास करेंगे।
30भला मनुष्य तो खरी सलाह देता है। उसका न्याय
सबके लिये निष्पक्ष होता है।
31सज्जन के हृदय (मन) में यहोवा के उपदेश बसे हैं।
वह सीधे मार्ग पर चलना नहीं छोड़ता।
32किन्तु दुर्जन सज्जन को दुःख पहुँचाने का रास्ता
ढूँढता रहता है, और दुर्जन सज्जन को मारने का यत्न
करते हैं।
33किन्तु यहोवा दुर्जनों को मुक्त नहीं छोड़ेगा। वह
सज्जन को अपराधी नहीं ठहरने देगा।
34यहोवा की सहायता की बाट जोहते रहो। यहोवा
का अनुसरण करते रहो। दुर्जन नष्ट होंगे। यहोवा तुझको
महत्त्वपूर्ण बनायेगा। तू वह धरती पाएगा जिसे देने का
यहोवा ने वचन दिया है।
35मैंने दुष्ट को बलशाली देखा है। मैंने उसे मजबूत
और स्वस्थ वृक्ष की तरह शक्तिशाली देखा।
36किन्तु वे फिर मिट गए। मेरे ढूँढने पर उनका पता
तक नहीं मिला।
37सच्चे और खरे बनो, क्योंकि इसी से शांति मिलती
है।
38किन्तु जो लोग व्यवस्था नियम तोड़ते हैं नष्ट किये
जायेंगे।
39यहोवा नेक मनुष्यों की रक्षा करता है। सज्जनों पर
जब विपत्ति पड़ती है तब यहोवा उनकी शक्ति बन जाता
है।
40यहोवा नेक जनों को सहारा देता है, और उनकी
रक्षा करता है। सज्जन यहोवा की शरण में आते हैं और
यहोवा उनको दुर्जनों से बचा लेता है।

भजन 38

1हे यहोवा, क्रोध में मेरी आलोचना मत कर।
मुझको अनुशासित करते समय मुझ पर क्रोधित मत
हो।
2हे यहोवा, तूने मुझे चोट दिया है। तेरे बाण मुझमें
गहरे उतरे हैं।
3तूने मुझे दण्डित किया और मेरी सम्पूर्ण काया दुःख
रही है, मैंने पाप किये और तूने मुझे दण्ड दिया। इसलिए
मेरी हड्डी दुःख रही है।
4मैं बुरे काम करने का अपराधी हूँ, और वह
अपराध एक बड़े बोझे सा मेरे कन्धे पर चढ़ा है।
5मैं बना रहा मूर्ख, अब मेरे घाव दुर्गन्धपूर्ण रिसते हैं
और वे सड़ रहे हैं।
6मैं झुका और दबा हुआ हूँ। मैं सारे दिन उदास रहता
हूँ।
7मुझको ज्वर चढ़ा है, और समूचे शरीर में वेदना
भर गई है।
8मैं पूरी तरह से दुर्बल हो गया हूँ। मैं कष्ट में हूँ
इसलिए मैं कराहता और विलाप करता हूँ।
9हे यहोवा, तूने मेरा कराहना सुन लिया। मेरी आहें
तो तुझसे छुपी नहीं।
10मुझको ताप चढ़ा है। मेरी शक्ति निचुड़ गयी है। मेरी
आँखों की ज्योति लगभग जाती रही।
11क्योंकि मैं रोगी हूँ, इसलिए मेरे मित्र और मेरे
पड़ोसी मुझसे मिलने नहीं आते। मेरे परिवार के लोग तो
मेरे पास तक नहीं फटकते।
12मेरे शत्रु मेरी निन्दा करते हैं। वे झूठी बातों और
प्रतिवादों को फैलाते रहते हैं। मेरे ही विषय में वे हरदम
बात चीत करते रहते हैं।
13किन्तु मैं बहरा बना कुछ नहीं सुनता हूँ। मैं गूँगा हो
गया, जो कुछ नहीं बोल सकता।
14मैं उस व्यक्ति सा बना हूँ, जो कुछ नहीं सुन सकता
कि लोग उसके विषय क्या कह रहे हैं। और मैं यह
तर्क नहीं दे सकता और सिद्ध नहीं कर सकता की मेरे
शत्रु अपराधी हैं।
15सो, हे यहोवा, मुझे तू ही बचा सकता है। मेरे
परमेश्वर और मेरे स्वामी मेरे शत्रुओं को तू ही सत्य
बता दे।
16यदि मैं कुछ भी न कहूँ, तो मेरे शत्रु मुझ पर हँसेंगे।
मुझे खिन्न देखकर वे कहने लगेंगे कि मैं अपने कुकर्मों
का फल भोग रहा हूँ।
17मैं जानता हूँ कि मैं अपने कुकर्मों के लिए पापी हूँ।
मैं अपनी पीड़ा को भूल नहीं सकता हूँ।
18हे यहोवा, मैंने तुझको अपने कुकर्म बता दिये। मैं
अपने पापों के लिए दुःखी हूँ।
19मेरे शत्रु जीवित और पूर्ण स्वस्थ हैं। उन्होंने
बहुत-बहुत झूठी बातें बोली हैं।
20मेरे शत्रु मेरे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, जबकि
मैंने उनके लिये भला ही किया है। मैं बस भला करने
का जतन करता रहा, किन्तु वे सब लोग मेरे विरुद्ध हो
गये हैं।
21हे यहोवा, मुझको मत बिसरा! मेरे परमेश्वर, मुझसे
तू दूर मत रह!
22देर मत कर, आ और मेरी सुधि ले! हे मेरे परमेश्वर,
मुझको तू बचा ले!

भजन 39

संगीत निर्देशक को यदूतून के लिये दाऊद का एक पद।

1मैंने कहा, "जब तक ये दुष्ट मेरे सामने रहेंगे, तब
तक मैं अपने कथन के प्रति सचेत रहूँगा। मैं अपने
वाणी को पाप से दूर रखूँगा। और मैं अपने मुँह को बंद
कर लूँगा।"
2सो इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने भला भी नहीं
कहा! किन्तु मैं बहुत परेशान हुआ।
3मैं बहुत क्रोधित था। इस विषय में मैं जितना सोचता
चला गया, उतना ही मेरा क्रोध बढ़ता चला गया। सो
मैंने अपना मुख तनिक नहीं खोला।
4हे यहोवा, मुझको बता कि मेरे साथ क्या कुछ
घटित होने वाला है? मुझे बता, मैं कब तक जीवित
रहूँगा? मुझको जानने दे सचमुच मेरा जीवन कितना
छोटा है।
5हे यहोवा, तूने मुझको बस एक क्षणिक जीवन दिया।
तेरे लिये मेरा जीवन कुछ भी नहीं है। हर किसी का
जीवन एक बादल सा है। कोई भी सदा नहीं जीता!
6वह जीवन जिसको हम लोग जीते हैं, वह झूठी छाया
भर होता है। जीवन की सारी भाग दौड़ निरर्थक होती
है। हम तो बस व्यर्थ ही चिन्ताएँ पालते हैं। धन दौलत
वस्तुएँ हम जोड़ते रहते हैं, किन्तु नहीं जानते उन्हें कौन
भोगेगा।
7सो, मेरे यहोवा, मैं क्या आशा रखूँ? तू ही बस मेरी
आशा है!
8हे यहोवा, जो कुकर्म मैंने किये हैं, उनसे तू ही
मुझको बचाएगा। तू मेरे संग किसी को भी किसी अविवेकी
जन के संग जैसा व्यवहार नहीं करने देगा।
9मैं अपना मुँह नहीं खोलूँगा। मैं कुछ भी नहीं कहूँगा।
यहोवा तूने वैसे किया जैसे करना चाहिए था।
10किन्तु परमेश्वर, मुझको दण्ड देना छोड़ दे। यदि
तूने मुझको दण्ड देना नहीं छोड़ा, तो तू मेरा नाश
करेगा!
11हे यहोवा, तू लोगों को उनके कुकर्मों का दण्ड
देता है। और इस प्रकार जीवन की खरी राह लोगों
को सिखाता है। हमारी काया जीर्ण शीर्ण हो जाती है।
ऐसे उस कपड़े सी जिसे कीड़ा लगा हो। हमारा जीवन
एक छोटे बादल जैसे देखते देखते विलीन हो जाती
है।
12हे यहोवा, मेरी विनती सुन! मेरे उन शब्दों को सुन
जो मैं तुझसे पुकार कर कहता हूँ। मेरे आँसुओं को
देख। मैं बस राहगीर हूँ, तुझको साथ लिये इस जीवन के
मार्ग से गुजरता हूँ। इस जीवन मार्ग पर मैं अपने पूर्वजों
की तरह कुछ समय मात्र टिकता हूँ।
13हे यहोवा, मुझको अकेला छोड़ दे, मरने से पहले
मुझे आनन्दित होने दे, थोड़े से समय बाद मैं जा चुका
होऊँगा।

भजन 40

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक
पद पुकारा मैंने यहोवा को।

1यहोवा को मैंने पुकारा। उसने मेरी सुनी। उसने मेरे
रुदन को सुन लिया।
2यहोवा ने मुझे विनाश के गर्त से उबारा। उसने मुझे
दलदली गर्त से उठाया, और उसने मुझे चट्टान पर
बैठाया। उसने ही मेरे कदमों को टिकाया।
3यहोवा ने मेरे मुँह में एक नया गीत बसाया। परमेश्वर
का एक स्तुति गीत। बहुतेरे लोग देखेंगे जो मेरे साथ
घटा है। और फिर परमेश्वर की आराधना करेंगे। वे
यहोवा का विश्वास करेंगे।
4यदि कोई जन यहोवा के भरोसे रहता है, तो वह
मनुष्य सचमुच प्रसन्न होगा। और यदि कोई जन मूर्तियों
और मिथ्या देवों की शरण में नहीं जायेगा, तो वह
मनुष्य सचमुच प्रसन्न होगा।
5हमारे परमेश्वर यहोवा, तूने बहुतेरे अद्भुत कर्म
किये हैं! हमारे लिये तेरे पास अद्भुत योजनाएँ हैं। कोई
मनुष्य नहीं जो उसे गिन सके! मैं तेरे किये हुए कामों
को बार बार बखानूँगा।
6हे यहोवा, तूने मुझको यह समझाया है: तू सचमुच
कोई अन्नबलि और पशुबलि नहीं चाहता था। कोई
होमबलि और पापबलि तुझे नहीं चाहिए।
7सो मैंने कहा, "देख मैं आ रहा हूँ! पुस्तक में मेरे
विषय में यही लिखा है।"
8हे मेरे परमेश्वर, मैं वही करना चाहता हूँ जो तू
चाहता है। मैंने मन में तेरी शिक्षाओं को बसा लिया।
9महासभा के मध्य मैं तेरी धार्मिकता का सुसन्देश
सुनाऊँगा। यहोवा तू जानता है कि मैं अपने मुँह को बंद
नहीं रखूँगा।
10हे यहोवा, मैं तेरे भले कर्मों को बखानूँगा। उन भले
कर्मों को मैं रहस्य बनाकर मन में नहीं छिपाए रखूँगा।
हे यहोवा, मैं लोगों को रक्षा के लिए तुझ पर आश्रित
होने को कहूँगा। मैं महासभा में तेरी करुणा और तेरी
सत्यता नहीं छिपाऊँगा।
11इसलिए हे यहोवा, तू अपनी दया मुझसे मत छिपा!
तू अपनी करुणा और सच्चाई से मेरी रक्षा कर।
12मुझको दुष्ट लोगों ने घेर लिया, वे इतने अधिक हैं
कि गिने नहीं जाते। मुझे मेरे पापों ने घेर लिया है, और
मैं उनसे बच कर भाग नहीं पाता हूँ। मेरे पाप मेरे सिर
के बालों से अधिक हैं। मेरा साहस मुझसे खो चुका है।
13हे यहोवा, मेरी ओर दौड़ और मेरी रक्षा कर! आ,
देर मत कर, मुझे बचा ले!
14वे दुष्ट मनुष्य मुझे मारने का जतन करते हैं। हे
यहोवा, उन्हें लज्जित कर और उनको निराश कर दे।
वे मनुष्य मुझे दुःख पहुँचाना चाहते हैं। तू उन्हें अपमानित
होकर भागने दे!

15वे दुष्ट जन मेरी हँसी उड़ाते हैं। उन्हें इतना लज्जित
कर कि वे बोल तक न पायें!
16किन्तु वे मनुष्य जो तुझे खोजते हैं, आनन्दित हो। वे
मनुष्य सदा यह कहते रहें, "यहोवा के गुण गाओ!" उन
लोगों को तुझ ही से रक्षित होना भाता है।
17हे मेरे स्वामी, मैं तो बस दीन,असहाय व्यक्ति हूँ।
मेरी रक्षा कर, तू मुझको बचा ले। हे मेरे परमेश्वर,
अब अधिक देर मत कर!

भजन 41

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1दीन का सहायक बहुत पायेगा। ऐसे मनुष्य पर जब
विपत्ति आती है, तब यहोवा उस को बचा लेगा।

2यहोवा उस जन की रक्षा करेगा और उसका जीवन
बचायेगा। वह मनुष्य धरती पर बहुत वरदान पायेगा।
परमेश्वर उसके शत्रुओं द्वारा उसका नाश नहीं होने
देगा।
3जब मनुष्य रोगी होगा और बिस्तर में पड़ा होगा, उसे
यहोवा शक्ति देगा। वह मनुष्य बिस्तर में चाहे रोगी पड़ा
हो। किन्तु यहोवा उसको चँगा कर देगा!
4मैंने कहा, "यहोवा, मुझ पर दया कर। मैंने तेरे
विरुद्ध पाप किये हैं, किन्तु मुझे और अच्छा कर।"
5मेरे शत्रु मेरे लिये अपशब्द कह रहे हैं, वे कह रहे
हैं, "यह कब मरेगा और कब भुला दिया जायेगा?"
6कुछ लोग मेरे पास मिलने आते हैं। पर वे नहीं
कहते जो सचमुच सोच रहे हैं। वे लोग मेरे विषय में
कुछ पता लगाने आते और जब वे लौटते अफवाह
फैलाते।
7मेरे शत्रु छिपे छिपे मेरी निन्दायें कर रहे हैं। वे मेरे
विरुद्ध कुचक्र रच रहे हैं।
8वे कहा करते हैं, "उसने कोई बुरा कर्म किया है,
इसी से उसको कोई बुरा रोग लगा है। मुझको आशा है
वह कभी स्वस्थ नहीं होगा।
9मेरा परम मित्र मेरे संग खाता था। उस पर मुझको
भरोसा था। किन्तु अब मेरा परम मित्र भी मेरे विरुद्ध
हो गया है।
10सो हे यहोवा, मुझ पर कृपा कर और मुझ पर
कृपालु हो। मुझको खड़ा कर कि मैं प्रतिशोध ले
लूँ।
11हे यहोवा, यदि तू मेरे शत्रुओं को बुरा नहीं
करने देगा, तो मैं समझूँगा कि तूने मुझे अपना
लिया है।
12मैं निर्दोष था और तूने मेरी सहायता की। तूने मुझे
खड़ा किया और मुझे तेरी सेवा करने दिया।
13इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा धन्य है! वह सदा
था, और वह सदा रहेगा। आमीन, आमीन!

दूसरा भाग

भजन 42

संगीत निर्देशक के लिये कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1जैसे एक हिरण शीतल सरिता का जल पीने को
प्यासा है। वैसे ही, हे परमेश्वर, मेरा प्राण तेरे लिये
प्यासा है। 2मेरा प्राण जीवित परमेश्वर का प्यासा है। मैं
उससे मिलने के लिये कब आ सकता हूँ?
3रात दिन मेरे आँसू ही मेरा खाना और पीना है! हर
समय मेरे शत्रु कहते हैं, "तेरा परमेश्वर कहाँ है?"
4सो मुझे इन सब बातों को याद करने दे। मुझे अपना
हृदय बाहर ऊँडेलने दे। मुझे याद है मैं परमेश्वर के
मन्दिर में चला और भीड़ की अगुवाई करता था। मुझे
याद है वह लोगों के साथ आनन्द भरे प्रशंसा गीत गाना
और वह उत्सव मनाना।
5मैं इतना दुःखी क्यों हूँ? मैं इतना व्याकुल क्यों हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए। मुझे
अब भी उसकी स्तुति का अवसर मिलेगा। वह मुझे
बचाएगा!
6हे मेरे परमेश्वर, मैं अति दुःखी हूँ। इसलिए मैंने तुझे
यरदन की घाटी में, हेर्मोन के पहाड़ी पर और मिसगार
के पर्वत पर से पुकारा।
7जैसे सागर से लहरे उठ उठ कर आती हैं। मैं सागर
तरंगों का कोलाहल करता शब्द सुनता हूँ, वैसे ही
मुझको विपत्तियाँ बारम्बार घेरी रहीं। हे यहोवा, तेरी
लहरों ने मुझको दबोच रखा है। तेरी तरंगों ने मुझको
ढाप लिया है!
8यदि हर दिन यहोवा सच्चा प्रेम दिखाएगा। फिर तो मैं
रात में उसका गीत गा पाऊँगा। मैं अपने सजीव परमेश्वर
की प्रार्थना कर सकूँगा।
9मैं अपने परमेश्वर, अपनी चट्टान से बातें करता
हूँ। मैं कहा करता हूँ, "हे यहोवा, तूने मुझको क्यों
बिसरा दिया? हे यहोवा, तूने मुझको यह क्यों नहीं
दिखाया कि मैं अपने शत्रुओं से बच कैसे निकलूँ?"
10मेरे शत्रुओं ने मुझे मारने का जतन किया। वे मुझ
पर निज घृणा दिखाते हैं जब वे कहते हैं, "तेरा परमेश्वर
कहाँ है?"
11मैं इतना दुःखी क्यों हूँ? मैं क्यों इतना व्याकुल हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए। मुझे
अब भी उसकी स्तुति करने का अवसर मिलेगा। वह
मुझे बचाएगा!

भजन 43

1हे परमेश्वर, एक मनुष्य है जो तेरी अनुसरण नहीं
करता। वह मनुष्य दुष्ट है और झूठ बोलता है। हे
परमेश्वर, मेरा मुकदमा लड़ और यह निर्णय कर कि
कौन सत्य है। मुझे उस मनुष्य से बचा ले।

2हे परमेश्वर, तू ही मेरा शरणस्थल है! मुझको तूने
क्यों बिसरा दिया? तूने मुझको यह क्यों नहीं दिखाया
कि मै अपने शत्रुओं से कैसे बच निकलूँ?
3हे परमेश्वर, तू अपनी ज्योति और अपने सत्य को
मुझ पर प्रकाशित होने दे। मुझको तेरी ज्योति और
सत्य राह दिखायेंगे। वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत और अपने
घर को ले चलेंगे।
4मैं तो परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा। परमेश्वर
मैं तेरे पास आऊँगा। वह मुझे आनन्दित करता है। हे
परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा पर तेरी स्तुति
करुँगा।
5मैं इतना दु:खी क्यों हूँ? मैं क्यों इतना व्याकुल हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए। मुझे
अब भी उसकी स्तुति का अवसर मिलेगा। वह मुझे
बचाएगा!

भजन 44

*संगीत निर्देशक के लिए कोरह परिवार
का एक भक्ति गीत।*

1हे परमेश्वर, हमने तेरे विषय में सुना है। हमारे
पूर्वजों ने उनके दिनों में जो काम तूने किये थे उनके
बारे में हमें बताया। उन्होंने पुरातन काल में जो तूने
किये हैं, उन्हें हमें बताया। 2हे परमेश्वर, तूने यह धरती
अपनी महाशक्ति से पराए लोगों से ली और हमको
दिया। उन विदेशी लोगों को तूने कुचल दिया, और
उनको यह धरती छोड़ देने का दबाव डाला।
3हमारे पूर्वजों ने यह धरती अपने तलवारों के बल
नहीं ली थी। अपने भुजदण्डों के बल पर विजयी नहीं
हुए। यह इसलिए हुआ था क्योंकि तू हमारे पूर्वजों के
साथ था। हे परमेश्वर, तेरी महान शक्ति ने हमारे पूर्वजों
की रक्षा की। क्योंकि तू उनसे प्रेम किया करता था!
4हे मेरे परमेश्वर, तू मेरा राजा है। तेरे आदेशों से
याकूब के लोगों को विजय मिली।
5हे मेरे परमेश्वर, तेरी सहायता से, हमने तेरा नाम
लेकर अपने शत्रुओं को धकेल दिया और हमने अपने
शत्रु को कुचल दिया।
6मुझे अपने धनुष और बाणों पर भरोसा नहीं। मेरी
तलवार मुझे बचा नहीं सकती।
7हे परमेश्वर, तूने ही हमें मिस्र से बचाया। तूने हमारे
शत्रुओं को लज्जित किया।
8हर दिन हम परमेश्वर के गुण गाएंगे! हम तेरे नाम
की स्तुति सदा करेंगे!
9किन्तु, हे यहोवा, तूने हमें क्यों बिसरा दिया? तूने
हमको गहन लज्जा में डाला। हमारे साथ तू युद्ध में नहीं
आया।
10तूने हमें हमारे शत्रुओं को पीछे धकेलने दिया।
हमारे शत्रु हमारे धन वैभव छीन ले गये।
11तूने हमें उस भेड़ की तरह छोड़ा जो भोजन के
समान खाने को होती है। तूने हमें राष्ट्रों के बीच बिखराया।
12हे परमेश्वर, तूने अपने जनों को यूँ ही बेच दिया,
और उनके मूल्य पर भाव ताव भी नहीं किया।
13तूने हमें हमारे पड़ोसियों में हँसी का पात्र बनाया।
हमारे पड़ोसी हमारा उपहास करते हैं, और हमारी
मजाक बनाते हैं।
14लोग हमारी भी कथा उपहास कथाओं में कहते हैं।
यहाँ तक कि वे लोग जिनका अपना कोई राष्ट्र नहीं है,
अपना सिर हिला कर हमारा उपहास करते हैं।
15मैं लज्जा में डूबा हूँ। मैं सारे दिन भर निज लज्जा
देखता रहता हूँ।
16मेरे शत्रु ने मुझे लज्जित किया है। मेरी हँसी उड़ाते
हुए मेरा शत्रु, अपना प्रतिशोध चाहता है।
17हे परमेश्वर, हमने तुझको बिसराया नहीं। फिर भी
तू हमारे साथ ऐसा करता है। हमने जब अपने वाचा पर
तेरे साथ हस्ताक्षर की थी, झूठ नहीं बोला था!
18हे परमेश्वर, हमने तो तुझसे मुख नहीं मोड़ा। और
न ही तेरा अनुसरण करना छोड़ा है।
19किन्तु, हे यहोवा, तूने हमें इस स्थान पर ऐसे ठूँस
दिया है जहाँ गीदड़ रहते हैं। तूने हमें इस स्थान में जो
मृत्यु की तरह अंधेरा है मूँद दिया है।
20क्या हम अपने परमेश्वर का नाम भूले? क्या हम
विदेशी देवों के आगे झुके? नहीं!
21निश्चय ही, परमेश्वर इन बातों को जानता है। वह
तो हमारे गहरे रहस्य तक जानता है।
22हे परमेश्वर, हम तेरे लिये प्रतिदिन मारे जा रहे हैं!
हम उन भेड़ों जैसे बने हैं जो वध के लिये ले जायी जा
रहीं हैं।
23मेरे स्वामी, उठ! नींद में क्यों पड़े हो? उठो! हमें
सदा के लिए मत त्याग!
24हे परमेश्वर, तू हमसे क्यों छिपता है? क्या तू हमारे
दु:ख और वेदनाओं को भूल गया है?
25हमको धूल में पटक दिया गया है। हम औंधे मुँह
धरती पर पड़े हुए हैं।
26हे परमेश्वर, उठ और हमको बचा ले! अपने
नित्य प्रेम के कारण हमारी रक्षा कर!

भजन 45

*संगीत निर्देशक के लिए शोकन्नीभ की संगत पर कोरह
परिवार का एक कलात्मक प्रेम प्रगीत।*

1सुन्दर शब्द मेरे मन में भर जाते हैं, जब मैं राजा के
लिये बातें लिखता हूँ। मेरे जीभ पर शब्द ऐसे आने लगते
हैं जैसे वे किसी कुशल लेखक की लेखनी से निकल
रहे हैं।
2तू किसी भी और से सुन्दर है! तू अति उत्तम वक्ता
है। सो तुझे परमेश्वर आशीष देगा!

3तू तलवार धारण कर। तू महिमित वस्त्र धारण कर।
4तू अद्‌भुत दिखता है! जा, धर्म और न्याय का युद्ध जीत। अद्‌भुत कर्म करने के लिये शक्तिपूर्ण दाहिनी भुजा का प्रयोग कर।
5तेरे तीर तत्पर हैं। तू बहुतेरों को पराजित करेगा। तू अपने शत्रुओं पर शासन करेगा।
6हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन अमर है! तेरा धर्म राजदण्ड है।
7तू नेकी से प्यार और बैर से द्वेष करता है। सो परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों के ऊपर तुझे राजा चुना है।
8तेरे वस्त्र महक रहे हैं जैसे गंध रस, अगर और तेज पात से मधुर गंध आ रही हो। हाथी दाँत जड़ित राज महलों से तुझे आनन्दित करने को मधुर संगीत की झँकारे बिखरती हैं।
9तेरी महिलायें राजाओं की कन्याएँ हैं। तेरी महारानी ओपीर के सोने से बने मुकुट पहने तेरे दाहिनी ओर विराजती हैं।
10हे राजपुत्री, मेरी बात को सुन। ध्यानपूर्वक सुन, तब तू मेरी बात को समझेगी। तू अपने निज लोगों और अपने पिता के घराने को भूल जा।
11राजा तेरे सौन्दर्य पर मोहित है। यह तेरा नया स्वामी होगा। तुझको इसका सम्मान करना है।
12सूर नगर के लोग तेरे लिये उपहार लायेंगे। और धनी मानी तुझसे मिलना चाहेंगे।
13वह राजकन्या उस मूल्यवान रत्न सी है जिसे सुन्दर मूल्यवान सुवर्ण में जड़ा गया हो।
14उसे रमणीय वस्त्र धारण किये लाया गया है। उसकी सखियों को भी जो उसके पीछे हैं राजा के सामने लाया गया।
15वे यहाँ उल्लास में आयी हैं। वे आनन्द में मगन होकर राजमहल में प्रवेश करेंगी।
16राजा, तेरे बाद तेरे पुत्र शासक होंगे। तू उन्हें समूचे धरती का राजा बनाएगा।
17मैं तेरे नाम का प्रचार युग युग तक करुँगा। तू प्रसिद्ध होगा, तेरे यश गीतों को लोग सदा सर्वदा गाते रहेंगे!

भजन 46

अलामोथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये कोरह परिवार का एक पद।

1परमेश्वर हमारे पराक्रम का भण्डार है। संकट के समय हम उससे शरण पा सकते हैं।
2इसलिए जब धरती काँपती है और जब पर्वत समुद्र में गिरने लगता है, हमको भय नहीं लगता।
3हम नहीं डरते जब सागर उफनते और काले हो जाते हैं, और धरती और पर्वत काँपने लगते हैं।
4वहाँ एक नदी है, जो परम परमेश्वर के नगरी को अपनी धाराओं से प्रसन्नता से भर देती है।
5उस नगर में परमेश्वर है, इसी से उसका कभी पतन नहीं होगा। परमेश्वर उसकी सहायता भोर से पहले ही करेगा।
6यहोवा के गरजते ही, राष्ट्र भय से काँप उठेंगे। उनकी राजधानियों का पतन हो जाता है और धरती चरमरा उठती हैं।
7सर्वशक्तिमान यहोवा हमारे साथ है। याकूब का परमेश्वर हमारा शरणस्थल है।
8आओ उन शक्तिपूर्ण कर्मों को देखो जिन्हें यहोवा करता है। वे काम ही धरती पर यहोवा को प्रसिद्ध करते हैं।
9यहोवा धरती पर कहीं भी हो रहे युद्धों को रोक सकता है। वे सैनिक के धनुषों को तोड़ सकता है, और उनके भालों को चकनाचूर कर सकता है, रथों को वह जलाकर भस्म कर सकता है।
10परमेश्वर कहता है, "शांत बनो और जानो कि मैं ही परमेश्वर हूँ! राष्ट्रों के बीच मेरी प्रशंसा होगी। धरती पर मेरी महिमा फैल जायेगी!"
11यहोवा सर्वशक्तिमान हमारे साथ है। याकूब का परमेश्वर हमारा शरणस्थल है।

भजन 47

संगीत निर्देशक के लिए कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1हे सभी लोगों, तालियाँ बजाओ, और आनन्द में भर कर परमेश्वर का जय जयकार करो!
2महिमा महिम यहोवा भय और विस्मय से भरा है। सारी धरती का वही सम्राट है।
3उसने आदेश दिया और हमने राष्ट्रों को पराजित किया और उन्हें जीत लिया।
4हमारी धरती उसने हमारे लिये चुनी है। उसने याकूब के लिये अद्‌भुत धरती चुनी। याकूब वह व्यक्ति है जिसे उसने प्रेम किया।
5यहोवा परमेश्वर तुरही की ध्वनि और युद्ध की नरसिंगे के स्वर के साथ ऊपर उठता है।
6परमेश्वर के गुणगान करते हुए गुण गाओ। हमारे राजा के प्रशंसा गीत गाओ। और उसके यशगीत गाओ।
7परमेश्वर सारी धरती का राजा है। उसके प्रशंसा गीत गाओ।
8परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजता है। परमेश्वर सभी राष्ट्रों पर शासन करता है।
9राष्ट्रों के नेता, इब्राहीम के परमेश्वर के लोगों के साथ मिलते हैं। सभी राष्ट्रों के नेता, परमेश्वर के हैं। परमेश्वर उन सब के ऊपर है।

भजन 48

एक भक्ति गीत: कोरह परिवार का एक पद।

1यहोवा महान है। वह परमेश्वर के नगर, उसके
पवित्र नगर में प्रशंसनीय है।
2परमेश्वर का पवित्र नगर एक सुन्दर नगर है।
धरती पर वह नगर सर्वाधिक प्रसन्न है। सिय्योन पर्वत
सबसे अधिक ऊँचा और सर्वाधिक पवित्र है। यह नगर
महा सम्राट का है।
3उस नगर के महलों में परमेश्वर को सुरक्षास्थल
कहा जाता है।
4एकबार कुछ राजा आपस में आ मिले और उन्होंने
इस नगर पर आक्रमण करने का कुचक्र रचा। सभी
साथ मिलकर चढ़ाई के लिये आगे बढ़े।
5राजा को देखकर वे सभी चकित हुए। उनमें भगदड़
मची और वे सभी भाग गए।
6उन्हें भय ने दबोचा, वे भय से काँप उठे!
7प्रचण्ड पूर्वी पवन ने उनके जलयानों को चकनाचूर
कर दिया।
8हाँ, हमने उन राजाओं की कहानी सुनी है और
हमने तो इसको सर्वशक्तिमान यहोवा के नगर में हमारे
परमेश्वर के नगर में घटते हुए भी देखा। यहोवा उस
नगर को सुदृढ़ बनाएगा।
9हे परमेश्वर, हम तेरे मन्दिर में तेरी प्रेमपूर्ण करुणा
पर मनन करते हैं।
10हे परमेश्वर, तू प्रसिद्ध है, लोग धरती पर हर कहीं
तेरी स्तुति करते हैं। हर मनुष्य जानता है कि तू कितना
भला है।
11हे परमेश्वर, तेरे उचित न्याय के कारण सिय्योन
पर्वत हर्षित है। और यहूदा की नगरियाँ आनन्द मना
रही हैं।
12सिय्योन की परिक्रमा करो। नगरी के दर्शन करो।
तुम बुर्जों (मीनारों) को गिनो।
13ऊँचे प्राचीरों को देखो। सिय्योन के महलों को
सराहो, तभी तुम आने वाली पीढ़ी से इसका बखान कर
सकोगे।
14सचमुच हमारा परमेश्वर सदा सर्वदा परमेश्वर रहेगा।
वह हमको सदा ही राह दिखाएगा। उसका कभी भी
अंत नहीं होगा।

भजन 49

कोरह की संतानो का संगीत निर्देशक के लिए एक पद।

1विभिन्न देशों के निवासियों, यह सुनो। धरती के
वासियों यह सुनो।
2सुनो अरे दीन जनो, अरे धनिकों सुनो।
3मैं तुम्हें ज्ञान और विवेक की बातें बताता हूँ।
4मैंने कथाएँ सुनी है, मैं अब वे कथाएँ तुमको निज
वीणा पर सुनाऊँगा।
5ऐसा कोई कारण नहीं जो मैं किसी भी विनाश से
डर जाऊँ। यदि लोग मुझे घेरे और फँदा फैलाये, मुझे
डरने का कोई कारण नहीं।
6वे लोग मूर्ख हैं जिन्हें अपने निज बल और अपने
धन पर भरोसा है।
7तुझे कोई मनुष्य मित्र नहीं बचा सकता। जो घटा है
उसे तू परमेश्वर को देकर बदलवा नहीं सकता।
8किसी मनुष्य के पास इतना धन नहीं होगा कि
जिससे वह स्वयं अपना निज जीवन मोल ले सके।
9किसी मनुष्य के पास इतना धन नहीं हो सकता कि
वह अपना शरीर कब्र में सड़ने से बचा सके।
10देखो, बुद्धिमान जन, बुद्धिहीन जन और जड़मति
जन एक जैसे मर जाते हैं, और उनका सारा धन दूसरों
के हाथ में चला जाता है।
11कब्र सदा सर्वदा के लिए हर किसी का घर बनेगा,
इसका कोई अर्थ नहीं कि वे कितनी धरती के स्वामी
रहे थे।
12धनी पुरुष मूर्ख जनों से भिन्न नहीं होते। सभी लोग
पशुओं कि तरह मर जाते हैं।
13लोगों कि वास्तविक मूर्खता यह होती है कि वे
अपनी भूख को निर्णायक बनाते हैं, कि उनको क्या
करना चाहिए।
14सभी लोग भेड़ जैसे हैं। कब्र उनके लिये बाडा बन
जायेगी। मृत्यु उनका चरवाहा बनेगी। उनकी काया
क्षीण हो जायेंगी और वे कब्र में सड़ गल जायेंगे।
15किन्तु परमेश्वर मेरा मूल्य चुकाएगा और मेरा
जीवन कब्र की शक्ति से बचाएगा। वह मुझको बचाएगा।
16धनवानों से मत डरो कि वे धनी हैं। लोगों से उनके
वैभवपूर्ण घरों को देखकर मत डरना।
17वे लोग जब मरेंगे कुछ भी साथ न ले जाएंगे। उन
सुन्दर वस्तुओं में से कुछ भी न ले जा पाएंगे।
18लोगों को चाहिए कि वे जब तक जीवित रहें परमेश्वर
की स्तुति करें। जब परमेश्वर उनके संग भलाई करे,
तो लोगों को उसकी स्तुति करनी चाहिए।
19मनुष्यों के लिए एक ऐसा समय आएगा जब वे
अपने पूर्वजों के संग मिल जायेंगे। फिर वे कभी दिन
का प्रकाश नहीं देख पाएंगे।
20धनी पुरुष मूर्ख जनों से भिन्न नहीं होते। सभी लोग
पशु समान मरते हैं।

भजन 50

आसाप के भक्ति गीतों में से एक पद।

1ईश्वरों के परमेश्वर यहोवा ने कहा है। पूर्व से
पश्चिम तक धरती के सब मनुष्यों को उसने
बुलाया।
2सिय्योन से परमेश्वर की सुन्दरता प्रकाशित हो रही
है।

3हमारा परमेश्वर आ रहा है, और वह चुप नहीं
रहेगा। उसके सामने जलती ज्वाला है, उसको एक बड़ा
तूफान घेरे हुए है।
4हमारा परमेश्वर आकाश और धरती को पुकार
कर अपने निज लोगों को न्याय करने बुलाता है।
5"मेरे अनुयायियों, मेरे पास जुटो। मेरे उपासकों आओ
हमने आपस में एक वाचा किया है।"
6परमेश्वर न्यायाधीश है आकाश उसकी धार्मिकता
को घोषित करता है।
7परमेश्वर कहता है, "सुनों मेरे भक्तों! इस्राएल के
लोगों, मैं तुम्हारे विरुद्ध साक्षी दूँगा। मैं परमेश्वर हूँ,
तुम्हारा परमेश्वर।
8मुझको तुम्हारी बलियों से शिकायत नहीं। इस्राएल
के लोगों, तुम सदा होमबलियाँ मुझे चढ़ाते रहो। तुम मुझे
हर दिन अर्पित करो।
9मैं तेरे घर से कोई बैल नहीं लूँगा। मैं तेरे पशु गृहों से
बकरें नहीं लूँगा।
10मुझे तुम्हारे उन पशुओं कि आवश्यकता नहीं। मैं
ही तो वन के सभी पशुओं का स्वामी हूँ। हजारों पहाड़ों
पर जो पशु विचरते हैं, उन सब का मैं स्वामी हूँ।
11जिन पक्षियों का बसेरा उच्चतम पहाड़ पर है, उन
सब को मैं जानता हूँ। अचलों पर जो भी सचल है वे सब
मेरे ही हैं।
12मैं भूखा नहीं हूँ! यदि मैं भूखा होता, तो भी तुमसे
मुझे भोजन नहीं माँगना पड़ता। मैं जगत का स्वामी हूँ
और उसका भी हर वस्तु जो इस जगत में है।
13मैं बैलों का माँस खाया नहीं करता हूँ। बकरों का
रक्त नहीं पीता।"
14सचमुच जिस बलि की परमेश्वर को अपेक्षा है,
वह तुम्हारी स्तुति है। तुम्हारी मनौतियाँ उसकी सेवा
की हैं। सो परमेश्वर को निज धन्यवाद की भेंटें
चढ़ाओ। उस सर्वोच्च से जो मनौतियाँ की हैं उसे
पूरा करो।
15"इस्राएल के लोगों, जब तुम पर विपदा पड़े, मेरी
प्रार्थना करो! मैं तुम्हें सहारा दूँगा। तब तुम मेरा मान
कर सकोगे।"
16दुष्ट लोगों से परमेश्वर कहता है, "तुम मेरी व्यवस्था
की बातें करते हो, तुम मेरे वाचा की भी बातें करते हो।
17फिर जब मैं तुमको सुधारता हूँ, तब भला तुम
मुझसे बैर क्यों रखते हो। तुम उन बातों कि उपेक्षा क्यों
करते हो जिन्हें मैं तुम्हें बताता हूँ?
18तुम चोर को देखकर उससे मिलने के लिए दौड़
जाते हो, तुम उनके साथ बिस्तर में कूद पड़ते हो जो
व्यभिचार कर रहे हैं।
19तुम बुरे वचन और झूठ बोलते हो।
20तुम दूसरे लोगों कि यहाँ तक कि अपने भाइयों की
निन्दा करते हो।
21तुम बुरे कर्म करते हो, और तुम सोचते हो मुझे
चुप रहना चाहिए। तुम कुछ नहीं कहते हो और सोचते
हो कि मुझे चुप रहना चाहिए। देखो, मैं चुप नहीं रहूँगा,
तुझे स्पष्ट कर दूँगा। तेरे ही मुख पर तेरे दोष बताऊँगा।
22तुम लोग परमेश्वर को भूल गये हो। इसके पहले
कि मैं तुम्हें चीर दूँ, अच्छी तरह समझ लो। जब वैसा
होगा कोई भी व्यक्ति तुम्हें बचा नहीं पाएगा!
23यदि कोई व्यक्ति मेरी स्तुति और धन्यवादों की
बलि चढ़ाये, तो वह सचमुच मेरा मान करेगा। यदि कोई
व्यक्ति अपना जीवन बदल डाले तो उसे मैं परमेश्वर की
शक्ति दिखाऊँगा जो बचाती है।"

भजन 51

संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक पद: यह पद उस समय का है जब बतशेबा के साथ दाऊद द्वारा पाप करने के बाद नातान नबी दाऊद के पास गया था।

1हे परमेश्वर, अपनी विशाल प्रेमपूर्ण अपनी करुणा
से मुझ पर दया कर। मेरे सभी पापों को तू मिटा दे।
2हे परमेश्वर, मेरे अपराध मुझसे दूर कर। मेरे पाप
धो डाल, और फिर से तू मुझको स्वच्छ बना दे।
3मैं जानता हूँ, जो पाप मैंने किये हैं। मैं अपने पापों
को सदा अपने सामने देखता हूँ।
4हे परमेश्वर, मैंने वही काम किये जिनको तूने बुरा
कहा। तू वही है, जिसके विरुद्ध मैंने पाप किये। मैं
स्वीकार करता हूँ इन बातों को, ताकि लोग जान जाये
कि मैं पापी हूँ और तू न्यायपूर्ण है, तथा तेरे निर्णय
निष्पक्ष होते हैं।
5मैं पाप से जन्मा, मेरी माता ने मुझको पाप से गर्भ में
धारण किया।
6हे परमेश्वर, तू चाहता है, हम विश्वासी बनें। और
मैं निर्भय हो जाऊँ। इसलिए तू मुझको सच्चे विवेक से
रहस्यों की शिक्षा दे।
7तू मुझे विधि विधान के साथ, जूफा के पौधे का
प्रयोग कर के पवित्र कर। तब तक मुझे तू धो, जब
तक मैं हिम से अधिक उज्जवल न हो जाऊँ।
8मुझे प्रसन्न बना दे। बता दे मुझे कि कैसे प्रसन्न
बनूँ? मेरी वे हड्डियाँ जो तूने तोड़ी, फिर आनन्द से भर
जायें।
9मेरे पापों को मत देख। उन सबको धो डाल।
10परमेश्वर, तू मेरा मन पवित्र कर दे। मेरी आत्मा
को फिर सुदृढ़ कर दे।
11अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे मत दूर हटा, और
मुझसे मत छीन।
12वह उल्लास जो तुझसे आता है, मुझमें भर जायें।
मेरा चित्त अडिग और तत्पर कर सुरक्षित होने को और
तेरा आदेश मानने को।

13मैं पापियों को तेरी जीवन विधि सिखाऊँगा, जिससे
वे लौट कर तेरे पास आयेंगे।
14हे परमेश्वर, तू मुझे हत्या का दोषी कभी मत
बनने दें। मेरे परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता, मुझे गाने दे
कि तू कितना उत्तम है?
15हे मेरे स्वामी, मुझे मेरा मुँह खोलने दे कि मैं तेरे
प्रशंसा का गीत गाऊँ।
16जो बलियाँ तुझे नहीं भाती सो मुझे चढ़ानी नहीं है।
वे बलियाँ तुझे वाँछित तक नहीं हैं।
17हे परमेश्वर, मेरी टूटी आत्मा ही तेरे लिए मेरी
बलि है। हे परमेश्वर, तू एक कुचले और टूटे हृदय से
कभी मुख नहीं मोड़ेगा।
18हे परमेश्वर, सिय्योन के प्रति दयालु होकर, उत्तम
बन। तू यरुशलेम के नगर के परकोटे का निर्माण
कर।
19तू उत्तम बलियों का और सम्पूर्ण होमबलियों का
आनन्द लेगा। लोग फिर से तेरी वेदी पर बैलों की
बलियाँ चढ़ायेंगे।

भजन 52

संगीत निर्देशक के लिये उस समय का एक भक्ति गीत जब एदोमी दोएग ने शाऊल के पास आकर कहा था, दाऊद अबीमेलेक के घर में है।

1अरे ओ, बड़े व्यक्ति! तू क्यों शेखी बघारता है जिन
बुरे कामों को तू करता है? तू परमेश्वर का अपमान
करता है। तू बुरे काम करने को दिन भर षड़यन्त्र
रचता है।
2तू मूढ़ता भरी कुचक्र रचता रहता है। तेरी जीभ
वैसी ही भयानक है, जैसा तेज उस्तरा होता है। क्यों?
क्योंकि तेरी जीभ झूठ बोलती रहती है!
3तुझको नेकी से अधिक बदी भाती है। तुझको झूठ
का बोलना, सत्य के बोलने से अधिक भाता है।
4तुझको और तेरी झूठी जीभ को, लोगों का हानि
पहुँचाना अच्छा लगता है।
5तुझे परमेश्वर सदा के लिए नष्ट कर देगा! वह तुझ
पर झपटेगा और तुझे पकड़कर घर से बाहर करेगा।
वह तुझे मारेगा और तेरा कोई भी वंशज नहीं रहेगा।
6सज्जन इसे देखेंगे और परमेश्वर से डरना और
उसका आदर करना सीखेंगे। वे तुझपर, जो घटा उस
पर हँसेंगे और कहेंगे,
7"देखो उस व्यक्ति के साथ क्या हुआ जो यहोवा पर
निर्भर नहीं था। उस व्यक्ति ने सोचा कि उसका धन
और झूठ इसकी रक्षा करेंगे।"
8किन्तु मैं परमेश्वर के मन्दिर में एक हरे जैतून के
वृक्ष सा हूँ। परमेश्वर की करुणा का मुझको सदा-सदा
के लिए भरोसा है।
9हे परमेश्वर, मैं उन कामों के लिए जिनको तूने
किया, स्तुति करता हूँ। मैं तेरे अन्य भक्तों के साथ, तेरे
भले नाम पर भरोसा करुँगा!

भजन 53

महलत राग पर संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक भक्ति गीत।

1बस एक मूर्ख ही ऐसे सोचता है कि परमेश्वर नहीं
होता। ऐसे मनुष्य भ्रष्ट, दुष्ट, द्वेषपूर्ण होते हैं। वे कोई
अच्छा काम नहीं करते।
2सचमुच, आकाश में एक ऐसा परमेश्वर है जो हमें
देखता और झाँकता रहता है। यह देखने को कि क्या
यहाँ पर कोई विवेकपूर्ण व्यक्ति और विवेकपूर्ण जन
परमेश्वर को खोजते रहते हैं?
3किन्तु सभी लोग परमेश्वर से भटके हैं। हर व्यक्ति
बुरा है। कोई भी व्यक्ति कोई अच्छा कर्म नहीं करता,
एक भी नहीं।
4परमेश्वर कहता है, "निश्चय ही, वे दुष्ट सत्य को
जानते हैं। किन्तु वे मेरी प्रार्थना नहीं करते। वे दुष्ट लोग
मेरे भक्तों को ऐसे नष्ट करने को तत्पर हैं, जैसे वे निज
खाना खाने को तत्पर रहते हैं।"
5किन्तु वे दुष्ट लोग इतने भयभीत होंगे, जितने वे दुष्ट
लोग पहले कभी भयभीत नहीं हुए! इसलिए परमेश्वर
ने इस्राएल के उन दुष्ट शत्रु लोगों को त्यागा है। परमेश्वर
के भक्त उनको हरायेंगे और परमेश्वर उन दुष्टों की
हड्डियों को बिखेर देगा।
6इस्राएल को, सिय्योन में कौन विजयी बनायेगा? हाँ,
परमेश्वर उनकी विजय को पाने में सहायता करेगा।
परमेश्वर अपने लोगों को बन्धुआई से वापस लायेगा,
याकूब आनन्द मनायेगा। इस्राएल अति प्रसन्न होगा।

भजन 54

तार वाले वाद्यों पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का समय का एक भक्ति गीत जब जीपियों में जाकर शाऊल से कहा था, हम सोचते हैं दाऊद हमारे लोगों के बीच छिपा है।

1हे परमेश्वर, तू अपनी निज शक्ति को प्रयोग कर
के काम में ले और मुझे मुक्त करने को बचा ले।
2हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन। मैं जो कहता हूँ सुन।
3अजनबी लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए और बलशाली
लोग मुझे मारने का जतन कर रहे हैं। हे परमेश्वर, ऐसे
ये लोग तेरे विषय में सोचते भी नहीं।
4देखो, मेरा परमेश्वर मेरी सहायता करेगा। मेरा स्वामी
मुझको सहारा देगा।
5मेरा परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा, जो मेरे
विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं। परमेश्वर मेरे प्रति सच्चा सिद्ध
होगा, और वह उन लोगों को नष्ट कर देगा।

6हे परमेश्वर, मैं स्वेच्छा से तुझे बलियाँ अर्पित करुँगा। हे परमेश्वर, मैं तेरे नेक भजन की प्रशंसा करुँगा।

7किन्तु, मैं यह तुझसे विनय करता हूँ, कि मुझको तू मेरे दुःखों से बचा ले। तू मुझको मेरे शत्रुओं को हारा हुआ दिखा दे।

भजन 55

वाद्यों की संगीत पर संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक भक्ति गीत।

1हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन। कृपा करके मुझसे तू दूर मत हो।

2हे परमेश्वर, कृपा करके मेरी सुन और मुझे उत्तर दे। तू मुझको अपनी व्यथा तुझसे कहने दे।

3मेरे शत्रु ने मुझसे दुर्वचन बोले हैं। दुष्ट जनों ने मुझ पर चीखा। मेरे शत्रु क्रोध कर मुझ पर टूट पड़े हैं। वे मुझे नाश करने विपत्ति ढाते हैं।

4मेरा मन भीतर से चूर-चूर हो रहा है, और मुझको मृत्यु से बहुत डर लग रहा है।

5मैं बहुत डरा हुआ हूँ। मैं थरथर काँप रहा हूँ। मैं भयभीत हूँ।

6ओह, यदि कपोत के समान मेरे पंख होते, यदि मैं पंख पाता तो दूर कोई चैन पाने के स्थान को उड़ जाता।

7मैं उड़कर दूर निर्जन में जाता।

8मैं दूर चला जाऊँगा और इस विपत्ति की आँधी से बचकर दूर भाग जाऊँगा।

9हे मेरे स्वामी, इस नगर में हिँसा और बहुत दंगे और उनके झूठों को रोक जो मुझको दिख रही है।

10इस नगर में, हर कहीं मुझे रात-दिन विपत्ति घेरे है। इस नगर में भयंकर घटनायें घट रही हैं।

11गलियों में बहुत अधिक अपराध फैला है। हर कहीं लोग झूठ बोल बोल कर छलते हैं।

12यदि यह मेरा शत्रु होता और मुझे नीचा दिखाता तो मैं इसे सह लेता। यदि ये मेरे शत्रु होते, और मुझ पर वार करते तो मैं छिप सकता था।

13ओ! मेरे साथी, मेरे सहचर, मेरे मित्र, यह किन्तु तू है और तू ही मुझे कष्ट पहुँचाता है।

14हमने आपस में राज की बातें बाँटी थी। हमने परमेश्वर के मन्दिर में साथ-साथ उपासना की।

15काश मेरे शत्रु अपने समय से पहले ही मर जायें। काश उन्हें जीवित ही गाड़ दिया जायें, क्योंकि वे अपने घरों में ऐसे भयानक कुचक्र रचा करते हैं।

16मैं तो सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारुँगा। यहोवा उसका उत्तर मुझे देगा।

17मैं तो अपने दुःख को परमेश्वर से प्रातः, दोपहर और रात में कहूँगा। वह मेरी सुनेगा!

18मैंने कितने ही युद्धों में लड़ायी लड़ी है। किन्तु परमेश्वर मेरे साथ है, और हर युद्ध से मुझे सुरक्षित लौटायेगा।

19वह शाश्वत सम्राट परमेश्वर मेरी सुनेगा और उन्हें नीचा दिखायेगा।

20मेरे शत्रु अपने जीवन को नहीं बदलेंगे। वे परमेश्वर से नहीं डरते, और न ही उसका आदर करते।

21मेरे शत्रु अपने ही मित्रों पर वार करते। वे उन बातों को नहीं करते, जिनके करने को वे सहमत हो गये थे।

22मेरे शत्रु सचमुच मीठा बोलते हैं, और सुशांति की बातें करते रहते हैं। किन्तु वास्तव में, वे युद्ध का कुचक्र रचते हैं। उनके शब्द काट करते छुरी की सी और फिसलन भरे हैं जैसे तेल होता है।

23अपनी चिंताये तुम यहोवा को सौंप दो। फिर वह तुम्हारी रखवाली करेगा। यहोवा सज्जन को कभी हारने नहीं देगा।

24इससे पहले कि उनकी आधी आयु बीते। हे परमेश्वर, उन हत्यारों को और उन झूठों को कब्रों में भेज! जहाँ तक मेरा है, मैं तो तुझ पर ही भरोसा रखूँगा।

भजन 56

संगीत निर्देशक के लिये सुदूर बाँझ वृक्ष का कपोत नामक धुन पर दाऊद का उस समय का एक प्रगीत जब नगर में उसे पलिश्तियों ने पकड़ लिया था।

1हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर क्योंकि लोगों ने मुझ पर वार किया है। वे रात दिन मेरा पीछा कर रहे हैं, और मेरे साथ झगड़ा कर रहे हैं।

2मेरे शत्रु सारे दिन मुझ पर वार करते रहे। वहाँ पर डटे हुए अनगिनत योद्धा हैं।

3जब भी डरता हूँ, तो मैं तेरा ही भरोसा करता हूँ। 4मैं परमेश्वर के भरोसे हूँ, सो मैं भयभीत नहीं हूँ। लोग मुझको हानि नहीं पहुँचा सकते! मैं परमेश्वर के वचनों के लिए उसकी प्रशंसा करता हूँ जो उसने मुझे दिये।

5मेरे शत्रु सदा मेरे शब्दों को तोड़ते मरोड़ते रहते हैं। मेरे विरुद्ध वे सदा कुचक्र रचते रहते हैं।

6वे आपस में मिलकर और लुक छिपकर मेरी हर बात की टोह लेते हैं। मेरे प्राण हरने की कोई राह सोचते हैं।

7हे परमेश्वर, उन्हें बचकर निकलने मत दे। उनके बुरे कामों का दण्ड उन्हें दे।

8तू यह जानता है कि मैं बहुत व्याकुल हूँ। तू यह जानता है कि मैंने तुझे कितना पुकारा है? तूने निश्चय ही मेरे सब आँसुओं का लेखा जोखा रखा हुआ है।

9सो अब मैं तुझे सहायता पाने को पुकारुँगा। मेरे शत्रुओं को तू पराजित कर दे। मैं यह जानता हूँ कि तू यह कर सकता है। क्योंकि तू परमेश्वर है!

10मैं परमेश्वर का गुण उसके वचनों के लिए गाता हूँ। मैं परमेश्वर के गुणों को उसके उस वचन के लिये गाता हूँ जो उसने मुझे दिया है।
11मुझको परमेश्वर पर भरोसा है, इसलिए मैं नहीं डरता हूँ। लोग मेरा बुरा नहीं कर सकते!
12हे परमेश्वर, मैंने जो तेरी मन्नतें मानी है, मैं उनको पूरा करुँगा। मैं तुझको धन्यवाद की भेंट चढ़ाऊँगा।
13क्योंकि तूने मुझको मृत्यु से बचाया है। तूने मुझको हार से बचाया है। सो मैं परमेश्वर की आराधना करुँगा, जिसे केवल जीवित व्यक्ति देख सकते हैं।

भजन 57

संगीत निर्देशक के लिये 'नाश मत कर' नामक धुन पर उस समय का दाऊद का एक भक्ति गीत जब वह शाऊल से भाग कर गुफा में जा छिपा था।

1हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर। मुझ पर दयालु हो क्योंकि मेरे मन की आस्था तुझमें है। मैं तेरे पास तेरी ओट पाने को आया हूँ। जब तक संकट दूर न हो।
2हे परमेश्वर, मैं सहायता पाने के लिये विनती करता हूँ। परमेश्वर मेरी पूरी तरह ध्यान रखता है!
3वह मेरी सहायता स्वर्ग से करता है, और वह मुझको बचा लेता है। जो लोग मुझको सताया करते हैं, वह उनको हराता है। परमेश्वर मुझ पर निज सच्चा प्रेम दर्शाता है।
4मेरे शत्रुओं ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है। मेरे प्राण संकट में हैं। वे ऐसे हैं, जैसे नरभक्षी सिंह और उनके तेज दाँत भालों और तीरों से और उनकी जीभ तेज तलवार की सी है।
5हे परमेश्वर, तू महान है। तेरी महिमा धरती पर छायी है, जो आकाश से ऊँची है।
6मेरे शत्रुओं ने मेरे लिए जाल फैलाया है। मुझको फँसाने का वे जतन कर रहे हैं। उन्होंने मेरे लिए गहरा गड्ढा खोदा है, कि मैं उसमें गिर जाऊँ।
7किन्तु परमेश्वर मेरी रक्षा करेगा। मेरा भरोसा है, कि वह मेरे साहस को बनाये रखेगा। मैं उसके यश गाथा को गाया करुँगा।
8मेरे मन खड़े हो! ओ सितारों और वीणाओं! बजना प्रारम्भ करो। आओ, हम मिलकर प्रभात को जगायें।
9हे मेरे स्वामी, हर किसी के लिए, मैं तेरा यश गाता हूँ। मैं तेरी यश गाथा हर किसी राष्ट्र को सुनाता हूँ।
10तेरा सच्चा प्रेम अम्बर के सर्वोच्च मेघों से भी ऊँचा है!
11परमेश्वर महान है, आकाश से ऊँची, उसकी महिमा धरती पर छा जाये।

भजन 58

'नाश मत कर' धुन पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भक्ति गीत।

1न्यायाधीशों, तुम पक्षपात रहित नहीं रहे। तुम लोगों का न्याय निज निर्णयों में निष्पक्ष नहीं करते हो।
2नहीं, तुम तो केवल बुरी बातें ही सोचते हो। इस देश में तुम हिंसापूर्ण अपराध करते हो।
3वे दुष्ट लोग जैसे ही पैदा होते हैं, बुरे कामों को करने लग जाते हैं। वे पैदा होते ही झूठ बोलने लग जाते हैं।
4वे उस भयानक साँप और नाग जैसे होते हैं, जो सुन नहीं सकता। वे दुष्ट जन भी अपने कान सत्य से मूंद लेते हैं।
5बुरे लोग वैसे ही होते हैं जैसे सपेरों के गीतों को या उनके संगीतों को काला नाग नहीं सुन सकता।
6हे यहोवा! वे लोग ऐसे होते हैं जैसे सिंह। इसलिए हे यहोवा, उनके दाँत तोड़।
7जैसे बहता जल विलुप्त हो जाता है, वैसे ही वे लोग लुप्त हो जायें। और जैसे राह की उगी दूब कुचल जाती है, वैसे वे भी कुचल जायें।
8वे घोंघे के समान हो जो चलने में गल जाते। वे उस शिशु से हो जो मरा ही पैदा हुआ, जिसने दिन का प्रकाश कभी नहीं देखा।
9वे उस बाड़ के काँटों कि तरह शीघ्र ही नष्ट हो, जो आग पर चढ़ी हाँड़ी गर्माने के लिए शीघ्र जल जाते हैं।
10जब सज्जन उन लोगों को दण्ड पाते देखता है जिन्होंने उसके साथ बुरा किया है, वह हर्षित होता है। वह अपना पाँव उन दुष्टों के खून में धोयेगा।
11जब ऐसा होता है, तो लोग कहने लगते है, "सज्जनों को उनका फल निश्चय मिलता है। सचमुच परमेश्वर जगत का न्यायकर्ता है!"

भजन 59

संगीत निर्देशक के लिये 'नाश मत कर' धुन पर दाऊद का उस समय का एक भक्ति गीत जब शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर पर निगरानी रखते हुए उसे मार डालने की जुगत करने के लिये भेजा था।

1हे परमेश्वर, तू मुझको मेरे शत्रुओं से बचा ले। मेरी सहायता उनसे विजयी बनने में कर जो मेरे विरुद्ध में युद्ध करने आये हैं।
2ऐसे उन लोगों से, तू मुझको बचा ले। तू उन हत्यारों से मुझको बचा ले जो बुरे कामों को करते रहते हैं।
3देख! मेरी घात में बलवान लोग हैं। वे मुझे मार डालने की बाट जोह रहे हैं। इसलिए नहीं कि मैंने कोई पाप किया अथवा मुझसे कोई अपराध बन पड़ा है।
4वे मेरे पीछे पड़े हैं, किन्तु मैंने कोई भी बुरा काम नहीं किया है। हे यहोवा, आ! तू स्वयं अपने आप देख ले!

5हे परमेश्वर! इस्राएल के परमेश्वर! तू सर्वशक्ति शाली है। तू उठ और उन लोगों को दण्डित कर। उन विश्वासघातियों उन दुर्जनों पर किंचित भी दया मत दिखा।

6वे दुर्जन साँझ के होते ही नगर में घुस आते हैं। वे लोग गुर्राते कुत्तों से नगर के बीच में घूमते रहते है।

7तू उनकी धमकियों और अपमानों को सुन। वे ऐसी क्रूर बातें कहा करते हैं। वे इस बात की चिंता तक नहीं करते कि उनकी कौन सुनता है।

8हे यहोवा, तू उनका उपहास करके उन सभी लोगों को मजाक बना दे।

9हे परमेश्वर, तू मेरी शक्ति है। मैं तेरी बाट जोह रहा हूँ। हे परमेश्वर, तू ऊँचे पहाड़ों पर मेरा सुरक्षा स्थान है।

10परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है, और वह जीतने में मेरा सहाय होगा। वह मेरे शत्रुओं को पराजित करने में मेरी सहायता करेगा।

11हे परमेश्वर, बस उनको मत मार डाल। नहीं तो सम्भव है मेरे लोग भूल जायें। हे मेरे स्वामी और संरक्षक, तू अपनी शक्ति से उनको बिखेर दे और हरा दे।

12वे बुरे लोग कोसते और झूठ बोलते रहते हैं। उन बुरी बातों का दण्ड उनको दे, जो उन्होंने कही हैं। उनको अपने अभिमान में फँसने दे।

13तू अपने क्रोध से उनको नष्ट कर। उन्हें पूरी तरह नष्ट कर! लोग तभी जानेंगे कि परमेश्वर, याकूब के लोगों का और वह सारे संसार का राजा है!

14फिर यदि वे लोग शाम को इधर उधर घूमते गुर्रातें कुत्तों से नगर में आवें,

15तो वे खाने को कोई वस्तु ढूँढते फिरेंगे, और खाने को कुछ भी नहीं पायेंगे और न ही सोने का कोई ठौर पायेंगे।

16किन्तु मैं तेरी प्रशंसा के गीत गाऊँगा। हर सुबह मैं तेरे प्रेम में आनन्दित होऊँगा। क्यों? क्योंकि तू पर्वतों के ऊपर मेरा शरणस्थल है। मैं तेरे पास आ सकता हूँ, जब मुझे विपत्तियाँ घेरेंगी। 17मैं अपने गीतों को तेरी प्रशंसा में गाऊँगा क्योंकि पर्वतों के उपर तू मेरा शरणस्थल है। तू परमेश्वर है, जो मुझको प्रेम करता है!

भजन 60

संगीत निर्देशक के लिये 'वाचा की कुमुदिनी धुन पर उस समय का दाऊद का एक उपदेश गीत जब दाऊद ने अरमहरैन और अरमसोबा से युद्ध किया तथा जब योआब लौटा और उसने नमक की घाटी में बारह हजार स्वामी सैनिकों को मार डाला।

1हे परमेश्वर, तूने हमको बिसरा दिया। तूने हमको विनष्ट कर दिया। तू हम पर कुपित हुआ। तू कृपा करके वापस आ।

2तूने धरती कँपाई और उसे फाड़ दिया। हमारा जगत बिखर रहा कृपया तू इसे जोड़।

3तूने अपने लोगों को बहुत यातनाएँ दी है। हम दाखमधु पिये जन जैसे लड़खड़ा रहे और गिर रहे हैं।

4तूने उन लोगों को ऐसे चिताया, जो तुझको पूजते हैं। वे अब अपने शत्रु से बच निकल सकते हैं।

5तू अपने महाशक्ति का प्रयोग करके हमको बचा ले! मेरी प्रार्थना का उत्तर दे और उस जन को बचा जो तुझको प्यारा है!

6परमेश्वर ने अपने मन्दिर में कहा: "मेरी विजय होगी और मैं विजय पर हर्षित होऊँगा। मैं इस धरती को अपने लोगों के बीच बाँटूंगा। मैं शकेम और सुक्कोत घाटी का बँटवारा करुँगा।

7गिलाद और मनश्शे मेरे बनेंगे। एप्रैम मेरे सिर का कवच बनेगा। यहूदा मेरा राजदण्ड बनेगा।

8मैं मोआब को ऐसा बनाऊँगा, जैसा कोई मेरे चरण धोने का पात्र। एदोम एक दास सा जो मेरी जूतियाँ उठाता है। मैं पलिश्ती लोगों को पराजित करुँगा और विजय का उद्घोष करूँगा।"

9कौन मुझे उसके विरुद्ध युद्ध करने को सुरक्षित दृढ़ नगर में ले जायेगा? मुझे कौन एदोम तक ले जायेगा?

10हे परमेश्वर, बस तू ही यह करने में मेरी सहायता कर सकता है। किन्तु तूने तो हमको बिसरा दिया! परमेश्वर हमारे साथ में नहीं जायेगा! और वह हमारी सेना के साथ नहीं जायेगा।

11हे परमेश्वर, तू ही हमको इस संकट की भूमि से उबार सकता है! मनुष्य हमारी रक्षा नहीं कर सकते!

12किन्तु हमें परमेश्वर ही ही मजबूत बना सकता है। परमेश्वर हमारे शत्रुओं को पराजित कर सकता है!

भजन 61

तार के वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मेरा प्रार्थना गीत सुन। मेरी विनती सुन। 2जहाँ भी मैं कितनी ही निर्बलता में होऊँ, मैं सहायता पाने को तुझको पुकारुँगा! जब मेरा मन भारी हो और बहुत दुःखी हो, तू मुझको बहुत ऊँचे सुरक्षित स्थान पर ले चल।

3तू ही मेरा शरणस्थल है! तू ही मेरा सुदृढ़ गढ़ है, जो मुझे मेरे शत्रुओं से बचाता है।

4तेरे डेरे में, मैं सदा सदा के लिए निवास करुँगा। मैं वहाँ छिपूँगा जहाँ तू मुझे बचा सके।

5हे परमेश्वर, तूने मेरी वह मन्नत सुनी है, जिसे तुझ पर चढ़ाऊँगा, किन्तु तेरे भक्तों के पास हर वस्तु उन्हें तुझसे ही मिली है।

6राजा को लम्बी आयु दे। उसको चिरकाल तक जीने दे!

7उसको सदा परमेश्वर के साथ में बना रहने दे! तू
उसकी रक्षा निज सच्चे प्रेम से कर।
8मैं तेरे नाम का गुण सदा गाऊँगा। उन बातों को
करुँगा जिनके करने का वचन मैंने दिया है।

भजन 62

'यदूतून' राग पर संगीत निर्देशक के
लिये दाऊद का एक पद।

1मैं धीरज के साथ अपने उद्धार के लिए यहोवा का
बाट जोहता हूँ।
2परमेश्वर मेरा गढ़ है। परमेश्वर मुझको बचाता है।
ऊँचे पर्वत पर, परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थान है। मुझको
महा सेनायें भी पराजित नहीं कर सकतीं।
3तू मुझ पर कब तक वार करता रहेगा? मैं एक
झुकी दीवार सा हो गया हूँ, और एक बाड़े सा जो गिरने
ही वाला है।
4वे लोग मेरे नाश का कुचक्र रच रहें हैं। मेरे विषय
में वे झूठी बातें बनाते हैं। लोगों के बीच में, वे मेरी बड़ाई
करते, किन्तु वे मुझको लुके-छिपे कोसते हैं।
5मैं यहोवा की बाट धीरज के साथ जोहता हूँ। बस
परमेश्वर ही अपने उद्धार के लिए मेरी आशा है।
6परमेश्वर मेरा गढ़ है। परमेश्वर मुझको बचाता है।
ऊँचे पर्वत में परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थान है।
7महिमा और विजय, मुझे परमेश्वर से मिलती है।
वह मेरा सुदृढ़ गढ़ है। परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थल है।
8लोगों, परमेश्वर पर हर घड़ी भरोसा रखो! अपनी
सब समस्यायें परमेश्वर से कहो। परमेश्वर हमारा सुरक्षा
स्थल है।
9सचमुच लोग कोई मदद नहीं कर सकते। सचमुच
तुम उनके भरोसे सहायता पाने को नहीं रह सकते!
परमेश्वर की तुलना में वे हवा के झोंके के समान हैं।
10तुम बल पर भरोसा मत रखो कि तुम शक्ति के
साथ वस्तुओं को छीन लोगे। मत सोचो तुम्हें चोरी
करने से कोई लाभ होगा। और यदि धनवान भी हो
जाये तो कभी दौलत पर भरोसा मत करो, कि वह
तुमको बचा लेगी।
11एक बात ऐसी है जो परमेश्वर कहता है, जिसके
भरोसे तुम सचमुच रह सकते हो: 'शक्ति परमेश्वर से
आती है।' 12मेरे स्वामी, तेरा प्रेम सच्चा है। तू किसी जन
को उसके उन कामों का प्रतिफल अथवा दण्ड देता है।
जिन्हें वह करता है।

भजन 63

दाऊद का उस समय का एक पद जब
वह यहूदा की मरुभूमि में था।

1हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है। वैसे कितना मैं
तुझको चाहता हूँ। जैसे उस प्यासी क्षीण धरती जिस पर
जल न हो वैसे मेरी देह और मन तेरे लिए प्यासा है।
2हाँ, तेरे मन्दिर में मैंने तेरे दर्शन किये। तेरी शक्ति
और तेरी महिमा देख ली है।
3तेरी भक्ति जीवन से बढ़कर उत्तम है। मेरे होंठ तेरी
बड़ाई करते हैं।
4हाँ, मैं निज जीवन में तेरे गुण गाऊँगा। मैं हाथ उपर
उठाकर तेरे नाम पर तेरी प्रार्थना करुँगा।
5मैं तृप्त होऊँगा मानों मैंने उत्तम पदार्थ खा लिए हों।
मेरे होंठ तेरे गुण सदैव गायेंगे।
6मैं आधी रात में बिस्तर पर लेटा हुआ तुझको याद
करुँगा।

7सचमुच तूने मेरी सहायता की है! मैं प्रसन्न हूँ कि
तूने मुझको बचाया है!
8मेरा मन तुझमें समता है। तू मेरा हाथ थामे हुए
रहता है।
9कुछ लोग मुझे मारने का जतन कर रहे हैं। किन्तु
उनको नष्ट कर दिया जायेगा। वे अपनी कब्रों में समा
जायेंगे।
10उनको तलवारों से मार दिया जायेगा। उनके शवों
को जंगली कुत्ते खायेंगे।
11किन्तु राजा तो अपने परमेश्वर के साथ प्रसन्न
होगा। वे लोग जो उसके आज्ञा मानने के वचन बद्ध हैं,
उसकी स्तुति करेंगे। क्योंकि उसने सभी झूठों को पराजित
किया।

भजन 64

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मेरी सुन। मैं अपने शत्रुओं से भयभीत
हूँ। मैं अपने जीवन के लिए डरा हुआ हूँ।
2तू मुझको मेरे शत्रुओं के गहरे षड़यन्त्रों से बचा ले।
मुझको तू उन दुष्ट लोगों से छिपा ले।
3मेरे विषय में उन्होंने बहुत बुरा झूठ बोला है। उनकी
जीभे तेज तलवार सी और उनके कटुशब्द बाणों से हैं।
4वे छिप जाते हैं, और अपने बाणों का प्रहार सरल
सच्चे जन पर फिर करते हैं। इसके पहले कि उसको
पता चले, वह घायल हो जाता है।
5वे उसको हराने को बुरे काम करते हैं। वे झूठ
बोलते और अपने जाल फैलाते हैं। और वे सुनिश्चित हैं
कि उन्हें कोई नहीं पकड़ेगा।
6लोग बहुत कुटिल हो सकते हैं। वे लोग क्या सोच
रहे हैं? इसका समझ पाना कठिन है।
7किन्तु परमेश्वर निज "बाण" मार सकता है! और
इसके पहले कि उनको पता चले, वे दुष्ट लोग घायल हो
जाते हैं।
8दुष्ट जन दुसरों के साथ बुरा करने की योजना बनाते
हैं। किन्तु परमेश्वर उनके कुचक्रों को चौपट कर
सकता है। वह उन बुरी बातों कों स्वयं उनके उपर

घटा देता है। फिर हर कोई जो उन्हें देखता अचरज से भरकर अपना सिर हिलाता है।

9जो परमेश्वर ने किया है, लोग उन बातों को देखेंगे और वे उन बातों का वर्णन दूसरो से करेंगे, फिर तो हर कोई परमेश्वर के विषय में और अधिक जानेगा। वे उसका आदर करना और डरना सीखेंगे।

10सज्जनों को चाहिए कि वे यहोवा में प्रसन्न हो। वे उस पर भरोसा रखे। अरे! ओ सज्जनों! तुम सभी यहोवा के गुण गाओ।

भजन 65

1हे सिय्योन के परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति करता हूँ। मैंने जो मन्नत मानी, तुझपर चढ़ाता हूँ।

2मैं तेरे उन कामों का बखान करता हूँ, जो तूने किये हैं। हमारी प्रार्थनायें तू सुनता रहता हैं। तू हर किसी व्यक्ति की प्रार्थनायें सुनता है, जो तेरी शरण में आता है।

3जब हमारे पाप हम पर भारी पड़ते हैं, हमसे सहन नहीं हो पाते, तो तू हमारे उन पापों को हर कर ले जाता है।

4हे परमेश्वर, तूने अपने भक्त चुने हैं। तूने हमको चुना है कि हम तेरे मन्दिर में आयें और तेरी उपासना करें। हम तेरे मन्दिर में बहुत प्रसन्न हैं। सभी अद्‌भुत वस्तुएं हमारे पास है।

5हे परमेश्वर, तू हमारी रक्षा करता है। सज्जन तेरी प्रार्थना करते, और तू उनकी विनतियों का उत्तर देता है। उनके लिए तू अचरज भरे काम करता है। सारे संसार के लोग तेरे भरोसे हैं।

6परमेश्वर ने अपनी महाशक्ति का प्रयोग किया और पर्वत रच डाले। उसकी शक्ति हम अपने चारों तरफ देखते हैं।

7परमेश्वर ने उफनते हुए सागर शांत किया। परमेश्वर ने जगत के सभी असंख्य लोगों को बनाया है।

8जिन अद्‌भुत बातों को परमेश्वर करता है, उनसे धरती का हर व्यक्ति डरता है। परमेश्वर तू ही हर कहीं सूर्य को उगाता और छिपाता है। लोग तेरा गुणगान करते हैं।

9पृथ्वी की सारी रखवाली तू करता है। तू ही इसे सींचता और तू ही इससे बहुत सारी वस्तुएं उपजाता है। हे परमेश्वर, नदियों को पानी से तू ही भरता है। तू ही फसलों की बढ़वार करता है। तू यह इस विधि से करता है।

10तू जुते हुए खेतों पर वर्षा कराता है। तू खेतों को जल से सराबोर कर देता, और धरती को वर्षा से नरम बनाता है, और तू फिर पौधों की बढ़वार करता है।

11तू नये साल का आरम्भ उत्तम फसलों से करता है। तू भरपूर फसलों से गाड़ियाँ भर देता है।

12वन और पर्वत दूब घास से ढक जाते हैं।

13भेड़ों से चरागाहें भर गयी। फसलों से घाटियाँ भरपूर हो रही हैं। हर कोई गा रहा और आनन्द में ऊँचा पुकार रहा है।

भजन 66

1हे धरती की हर वस्तु, आनन्द के साथ परमेश्वर की जय बोलो।

2उसके महिमामय नाम की स्तुति करों! उसका आदर उसके स्तुति गीतों से करों!

3उसके अति अद्‌भुत कामों से परमेश्वर को बखानों! हे परमेश्वर, तेरी शक्ति बहुत बड़ी है। तेरे शत्रु झुक जाते और वे तुझसे डरते हैं।

4जगत के सभी लोग तेरी उपासना करें और तेरे नाम का हर कोई गुण गायें।

5तुम उनको देखो जो आश्चर्यपूर्ण काम परमेश्वर ने किये! वे वस्तुएँ हमको अचरज से भर देती है।

6परमेश्वर ने धरती सूखी होने को सागर को विवश किया और उसके आनन्दित जन पैदल महानद को पार कर गये।

7परमेश्वर अपनी महाशक्ति से इस संसार का शासन करता है। परमेश्वर हर कहीं लोगों पर दृष्टि रखता है। कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध नहीं हो सकता।

8लोगों, हमारे परमेश्वर का गुणगान तुम ऊँचे स्वर में करो।

9परमेश्वर ने हमको यह जीवन दिया है। वह हमारी रक्षा करता है।

10परमेश्वर ने हमारी परीक्षा ली है। परमेश्वर ने हमें वैसे ही परखा, जैसे लोग आग में डालकर चाँदी परखते हैं।

11हे परमेश्वर, तूने हमें फँदों में फँसने दिया। तूने हम पर भारी बोझ लाद दिया।

12तूने हमें शत्रुओं से पैरों तले रौंदवाया। तूने हमको आग और पानी में से घसीटा। किन्तु तू फिर भी हमें सुरक्षित स्थान पर ले आया।

13-14 इसलिए मैं तेरे मन्दिर में बलियाँ चढ़ाने लाऊँगा। जब मैं विपत्ति में था, मैंने तेरी शरण माँगी और मैंने तेरी बहुतेरी मन्नत मानी। अब उन सब वस्तुओं को जिनकी मैंने मन्नत मानी, अर्पित करता हूँ।

15तुझको पापबलि अर्पित कर रहा हूँ, और मेढ़ों के साथ सुगन्ध अर्पित करता हूँ। तुझको बैलों और बकरों की बलि अर्पित करता हूँ।

16ओ सभी लोगों, परमेश्वर के आराधकों। आओ, मैं तुम्हें बताऊँगा कि परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है।

17मैंने उसकी विनती की। मैंने उसका गुणगान किया।

18मेरा मन पवित्र था, मेरे स्वामी ने मेरी बात सुनी।

19परमेश्वर ने मेरी सुनी। परमेश्वर ने मेरी विनती
सुन ली।
20परमेश्वर के गुण गाओ। परमेश्वर ने मुझसे मुँह
नहीं मोड़ा। उसने मेरी प्रार्थना को सुन लिया। परमेश्वर
ने निज करुणा मुझपर दर्शायी।

भजन 67

तार वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिए एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर, और मुझे आशीष
दे। कृपा कर के, हमको स्वीकार कर।
2हे परमेश्वर, धरती पर हर व्यक्ति तेरे विषय में
जाने। हर राष्ट्र यह जान जाये कि लोगों की तू कैसे
रक्षा करता है।
3हे परमेश्वर, लोग तेरे गुण गायें! सभी लोग तेरी
प्रशंसा करें।
4सभी राष्ट्र आनन्द मनावें और आनन्दित हो! क्योंकि
तू लोगों का न्याय निष्पक्ष करता। और हर राष्ट्र पर तेरा
शासन है।
5हे परमेश्वर, लोग तेरे गुण गायें! सभी लोग तेरी
प्रशंसा करें।
6हे परमेश्वर, हे हमारे परमेश्वर, हमको आशीष दे।
हमारी धरती हमको भरपूर फसल दें।
7हे परमेश्वर, हमको आशीष दे। पृथ्वी के सभी लोग
परमेश्वर से डरे, उसका आदर करे।

भजन 68

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का
एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, उठ, अपने शत्रु को तितर बितर कर।
उसके सभी शत्रु उसके पास से भाग जायें।
2जैसे वायु से उड़ाया हुआ धुँआ बिखर जाता है, वैसे
ही तेरे शत्रु बिखर जायें। जैसे अग्नि में मोम पिघल जाता
है, वैसे ही तेरे शत्रुओं का नाश हो जाये।
3परमेश्वर के साथ सज्जन सुखी होते हैं, और सज्जन
सुखद पल बिताते। सज्जन अपने आप आनन्द मनाते
और स्वयं अति प्रसन्न रहते हैं।
4परमेश्वर के गीत गाओ। उसके नाम का गुणगान
करों। परमेश्वर के निमित्त राह तैयार करों। निज रथ
पर सवार होकर, वह मरुभूमि पार करता। याह के
नाम का गुण गाओ!
5परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में, पिता के समान
अनाथों का और विधवाओं का ध्यान रखता है।
6जिसका कोई घर नहीं होता, ऐसे अकेले जन को
परमेश्वर घर देता है। निज भक्तों को परमेश्वर बंधन
मुक्त करता है। वे अति प्रसन्न रहते हैं। किन्तु जो
परमेश्वर के विरुद्ध होते, उनको तपती हुयी धरती पर
रहना होगा।
7हे परमेश्वर, तूने निज भक्तों को मिस्र से निकाला,
और मरुभूमि से पैदल ही पार निकाला।
8इस्राएल का परमेश्वर जब सिय्योन पर्वत पर आया
था, धरती काँप उठी थी, और आकाश पिघला था।
9हे परमेश्वर, वर्षा को तूने भेजा था, और पुरानी
तथा दुर्बल पड़ी धरती को तूने फिर सशक्त किया।
10उसी धरती पर तेरे पशु वापस आ गये। हे परमेश्वर,
वहाँ के दीन लोगों को तूने उत्तम वस्तुएँ दी।
11परमेश्वर ने आदेश दिया और बहुत जन सुसन्देश
को सुनाने गये:
12"बलशाली राजाओं की सेनाएं इधर-उधर भाग
गयी! युद्ध से जिन वस्तुओं को सैनिक लातें हैं, उनको
घर पर रुकी स्त्रियाँ बाँट लेंगी। जो लोग घर में रुके हैं,
वे उस धन को बाँट लेंगे।
13वे चाँदी से मढ़े हुए कबूतर के पंख पायेंगे। वे सोने
से चमकते हुए पंखों को पायेंगे।"
14परमेश्वर ने जब सल्मून पर्वत पर शत्रु राजाओं
को बिखेरा, तो वे ऐसे छितराये जैसे हिम गिरता है।
15बाशान पर्वत महान पर्वत है, जिसकी चोटियाँ बहुत
सी हैं।
16बाशान पर्वत, तुम क्यों सिय्योन पर्वत को छोटा
समझते हो? परमेश्वर उससे प्रेम करता है। परमेश्वर
ने उसे वहाँ सदा रहने के लिए चुना है।
17यहोवा पवित्र पर्वत सिय्योन पर आ रहा है। और
उसके पीछे उसके लाखों ही रथ हैं
18वह ऊँचे पर चढ़ गया। उसने बंदियों कि अगुवाई
की; उसने मनुष्यों से यहाँ तक कि अपने विरोधियों से
भी भेंटे ली। यहोवा परमेश्वर वहाँ रहने गया।
19यहोवा के गुण गाओ! वह प्रति दिन हमारी, हमारे
संग भार उठाने में सहायता करता है। परमेश्वर हमारी
रक्षा करता है!
20वह हमारा परमेश्वर है। वह वही परमेश्वर है जो
हमको बचाता है। हमारा यहोवा परमेश्वर मृत्यु से हमारी
रक्षा करता है।
21परमेश्वर दिखा देगा कि अपने शत्रुओं को उसने
हरा दिया है। ऐसे उन व्यक्तियों को जो उसके विरुद्ध
लड़े, वह दण्ड देगा।
22मेरे स्वामी ने कहा, "मैं बाशान से शत्रु को वापस
लाऊँगा, मैं शत्रु को समुद्र की गहराई से वापस लाऊँगा,
23ताकि तुम उनके रक्त में विचर सको, तुम्हारे कुत्ते
उनका रक्त चाट जायें।"
24लोग देखते हैं, परमेश्वर को विजय अभियान की
अगुवाई करते हुए। लोग मेरे पवित्र परमेश्वर, मेरे राजा
को विजय अभियान का अगुवाई करते देखते हैं।
25आगे-आगे गायकों की मण्डली चलती है, पीछे-पीछे
वादकों की मण्डली आ रही हैं, और बीच में कुमारियाँ
तम्बूरें बजा रही है।

26परमेश्वर की प्रशंसा महासभा के बीच करो! इस्राएल
के लोगों, तुम यहोवा के गुण गाओ!
27छोटा बिन्यामीन उनकी अगुवायी कर रहा है। यहूदा
का बड़ा परिवार वहाँ है। जबूलून तथा नपताली के नेता
वहाँ पर हैं।
28हे परमेश्वर, हमें निज शक्ति दिखा। हमें वह निज
शक्ति दिखा जिसका उपयोग तूने हमारे लिए बीते हुए
काल में किया था।
29राजा लोग, यरुशलेम में तेरे मन्दिर के लिए निज
सम्पत्ति लायेंगे।
30उन "पशुओं" से काम वांछित कराने के लिये निज
छड़ी का प्रयोग कर। उन जातियों के "बैलों" और
"गायों" को आज्ञा मानने वालें बना। तूने जिन राष्ट्रों को
युद्ध में हराया। अब तू उनसे चाँदी मंगवा ले।
31तू उनसे मिस्र से धन मँगवा ले। हे परमेश्वर, तू
अपने धन कूश से मँगवा ले।
32धरती के राजाओं, परमेश्वर के लिए गाओं! हमारे
स्वामी के लिए तुम यशगान गाओ!
33परमेश्वर के लिये गाओ! वह रथ पर चढ़कर
सनातन आकाशों से निकलता है। तुम उसके शक्तिशाली
स्वर को सुनों!
34इस्राएल का परमेश्वर, तुम्हारे किसी भी देवों से
अधिक बलशाली है। वह जो निज भक्तों को सुदृढ़
बनाता।
35परमेश्वर अपने मन्दिर में अद्‌भुत है। इस्राएल का
परमेश्वर भक्तों को शक्ति और सामर्थ्य देता है। परमेश्वर
के गुण गाओ!

भजन 69

'कुमुदिनी' नामक धुन पर संगीत निर्देशक के
लिये दाऊद का एक भजन।

1हे परमेश्वर, मुझको मेरी सब विपत्तियों से बचा! मेरे
मुँह तक पानी चढ़ आया है।
2कुछ भी नहीं है जिस पर मैं खड़ा हो जाऊँ। मैं
दलदल के बीच नीचे धँसता ही चला जा रहा हूँ। मैं नीचे
धंस रहा हूँ। मैं अगाध जल में हूँ और मेरे चारों तरफ
लहरें पछाड़ खा रही है। बस, मैं डूबने को हूँ।
3सहायता को पुकारते मैं दुर्बल होता जा रहा हूँ। मेरा
गला दुःख रहा है। मैं बाट जोह रहा हूँ तुझसे सहायता
पाने और देखते-देखते मेरी आँखें दुःख रही है।
4मेरे शत्रु! मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं। वे
मुझसे व्यर्थ बैर रखते हैं। वे मेरे विनाश की जुगत बहुत
करते हैं। मेरे शत्रु मेरे विषय में झूठी बातें बनाते हैं।
उन्होंने मुझको झूठे ही चोर बताया। और उन वस्तुओं
की भरपायी करने को मुझे विवश किया, जिनको मैंने
चुराया नहीं था।
5हे परमेश्वर, तू तो जानता है कि मैंने कुछ अनुचित
नहीं किया। मैं अपने पाप तुझसे नहीं छिपा सकता।
6हे मेरे स्वामी, हे सर्वशक्तिमान यहोवा, तू अपने
भक्तों को मेरे कारण लज्जित मत होने दें। हे इस्राएल के
परमेश्वर, ऐसे उन लोगों को मेरे लिए असमंजस में मत
डाल जो तेरी उपासना करते हैं।
7मेरा मुख लाज से झुक गया। यह लाज मैं तेरे लिए
ढोता हूँ।
8मेरे ही भाई, मेरे साथ यूँ ही बर्ताव करते हैं। जैसे
बर्ताव किसी अजनबी से करते हों। मेरे ही सहोदर, मुझे
पराया समझते है।
9तेरे मन्दिर के प्रति मेरी तीव्र लगन ही मुझे जलाये
डाल रही है। वे जो तेरा उपहास करते हैं वह मुझ पर
आन पडा है।
10मैं तो पुकारता हूँ और उपवास करता हूँ, इसलिए
वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।
11मैं निज शोक दर्शाने के लिए मोटे वस्त्रों को पहनता
हूँ, और लोग मेरा मजाक उड़ाते हैं।
12वे जनता के बीच मेरी चर्चायें करते, और पियक्कड़
मेरे गीत रचा करते हैं।
13हे यहोवा, जहाँ तक मेरी बात है, मेरी तुझसे यह
विनती है कि मैं चाहता हूँ: तू मुझे अपना ले! हे परमेश्वर,
मैं चाहता हूँ कि तू मुझको प्रेम भरा उत्तर दे। मैं जानता
हूँ कि मैं तुझ पर सुरक्षा का भरोसा कर सकता हूँ।
14मुझको दलदल से उबार ले। मुझको दलदल के
बीच मत डूबने दे। मुझको मेरे बैरी लोगों से तू बचा ले।
तू मुझको इस गहरे पानी से बचा ले।
15बाढ की लहरों को मुझे डुबाने न दे। गहराई को
मुझे निगलने न दे। कब्र को मेरे ऊपर अपना मुँह बन्द
न करने दे।
16हे यहोवा, तेरी करुणा खरी है। तू मुझको निज
सम्पूर्ण प्रेम से उत्तर दे। मेरी सहायता के लिए अपनी
सम्पूर्ण कृपा के साथ मेरी ओर मुख कर!
17अपने दास से मत मुख मोड़। मैं संकट में पड़ा हूँ!
मुझको शीघ्र सहारा दे।

18आ, मेरे प्राण बचा ले। तू मुझको मेरे शत्रुओं से
छुड़ा ले।
19तू मेरा निरादर जानता है। तू जानता है कि मेरे
शत्रुओं ने मुझे लज्जित किया है। उन्हें मेरे संग ऐसा
करते तूने देखा है।
20निन्दा ने मुझको चकनाचूर कर दिया है! बस
निन्दा के कारण मैं मरने पर हूँ। मैं सहानुभूति की बाट
जोहता रहा, मैं सान्त्वना की बाट जोहता रहा, किन्तु
मुझको तो कोई भी नहीं मिला।
21उन्होंने मुझे विष दिया, भोजन नहीं दिया। सिरका
मुझे दे दिया, दाखमधु नहीं दिया।

22उनकी मेज खानों से भरी है वे इतना विशाल
सहभागिता भोज कर रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि वे
खाना उन्हें नष्ट करें।
23वे अंधे हो जायें और उनकी कमर झुक कर
दोहरी हो जाये।
24ऐसे लगे कि उन पर तेरा भरपूर क्रोध टूट पड़ा है।
25उनके घरों को तू खाली बना दे। वहाँ कोई जीवित
न रहे।
26उनको दण्ड दे, और वे दूर भाग जायें। फिर उनके
पास, उनकी बातों के विषय में उनके दर्द और घाव हो।
27उनके बुरे कर्मों का उनको दण्ड दे, जो उन्होंने
किये हैं। उनको मत दिखला कि तू और कितना भला
हो सकता है।
28जीवन की पुस्तक से उनके नाम मिटा दे। सज्जनों
के नामों के साथ तू उनके नाम उस पुस्तक में मत
लिख।
29मैं दुःखी हूँ और दर्द में हूँ। हे परमेश्वर, मुझको
उबार ले। मेरी रक्षा कर!
30मैं परमेश्वर के नाम का गुण गीतों में गाऊँगा। मैं
उसका यश धन्यवाद के गीतों से गाऊँगा।
31परमेश्वर इससे प्रसन्न हो जायेगा। ऐसा करना एक
बैल की बलि या पूरे पशु की ही बलि चढ़ाने से अधिक
उत्तम है।
32अरे दीन जनों, तुम परमेश्वर की आराधना करने
आये हो। अरे दीन लोगों! इन बातों को जानकर तुम
प्रसन्न हो जाओगे।
33यहोवा, दीनों और असहायों की सुना करता
है। यहोवा उन्हें अब भी चाहता है, जो लोग बंधन में
पड़े हैं।
34हे स्वर्ग और हे धरती, हे सागर और इसके बीच
जो भी समाया है। परमेश्वर की स्तुति करो!
35यहोवा सिय्योन की रक्षा करेगा! यहोवा यहूदा के
नगर का फिर निर्माण करेगा। वे लोग जो इस धरती के
स्वामी हैं, फिर वहाँ रहेंगे!
36उसके सेवकों की संताने उस धरती को पायेगी।
और ऐसे वे लोग निवास करेंगे जिन्हें उसका नाम प्यारा
है।

भजन 70

लोगों को याद दिलाने के लिये संगीत
निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर! हे परमेश्वर, जल्दी
कर और मुझको सहारा दे!
2लोग मुझे मार डालने का जतन कर रहे हैं। उन्हें
निराश और अपमानित कर दे! ऐसा चाहते हैं कि लोग
मेरा बुरा कर डाले। उनका पतन ऐसा हो जाये कि वे
लज्जित हो।
3लोगों ने मुझको हँसी ठट्टों में उड़ाया। मैं उनकी
पराजय की आस करता हूँ और इस बात की कि उन्हें
लज्जा अनुभव हो।
4मुझको यह आस है कि ऐसे वे सभी लोग जो तेरी
आराधना करते हैं, वह अति प्रसन्न हों। वे सभी लोग
तेरी सहायता की आस रहते हैं वे तेरी सदा स्तुति करते
रहें।
5हे परमेश्वर, मैं दीन और असहाय हूँ। जल्दी कर!
आ, और मुझको सहारा दे! हे परमेश्वर, तू ही बस ऐसा
है जो मुझको बचा सकता है,अधिक देर मत कर!

भजन 71

1हे यहोवा, मुझको तेरा भरोसा है, इसलिए मैं कभी
निराश नहीं होऊँगा।
2अपनी नेकी से तू मुझको बचायेगा। तू मुझको छुड़ा
लेगा। मेरी सुन। मेरा उद्धार कर।
3तू मेरा गढ़ बन। सुरक्षा के लिए ऐसा गढ़ जिसमें मैं
दौड़ जाऊँ। मेरी सुरक्षा के लिए तू आदेश दे, क्योंकि तू
ही तो मेरी चट्टान है; मेरा शरणस्थल है।
4मेरे परमेश्वर, तू मुझको दुष्ट जनों से बचा ले। तू
मुझको क्रूरों कुटिल जनों से छुड़ा ले।
5मेरे स्वामी, तू मेरी आशा है। मैं अपने बचपन से ही
तेरे भरोसे हूँ।
6जब मैं अपनी माता के गर्भ में था,तभी से तेरे भरोसे
था। जिस दिन से जिस दिन से मैंने जन्म धारण किया, मैं
तेरे भरोसे हूँ। मैं तेरी प्रार्थना सदा करता रहा हूँ।
7मैं दूसरे लोगों के लिए एक उदाहरण रहा हूँ। क्योंकि
तू मेरा शक्ति स्रोत रहा है।
8उन अद्भुत कर्मों को सदा गाता रहा हूँ, जिनको तू
करता है।
9केवल इस कारण की मैं बूढ़ा हो गया हूँ मुझे निकाल
कर मत फेंक। मैं कमजोर हो गया हूँ मुझे मत छोड़।
10सचमुच, मेरे शत्रुओं ने मेरे विरुद्ध कुचक्र रच
डाले हैं। सचमुच वे सब इकटठे हो गये हैं, और उनकी
योजना मुझको मार डालने की है।
11मेरे शत्रु कहते हैं, "परमेश्वर ने उसको त्याग दिया
है। जा, उसको पकड़ ला! कोई भी व्यक्ति उसे सहायता
न देगा।"
12हे परमेश्वर, तू मुझको मत बिसरा! हे परमेश्वर,
जल्दी कर! मुझको सहारा दे!
13मेरे शत्रुओं को तू पूरी तरह से पराजित कर दे! तू
उनका नाश कर दे! मुझे कष्ट देने का वे यत्न कर रहे
हैं। वे लज्जा अनुभव करें और अपमान भोगें।
14फिर मैं तो तेरे ही भरोसे, सदा रहूँगा। और तेरे गुण
मैं अधिक और अधिक गाऊँगा।
15सभी लोगों से, मैं तेरा बखान करुँगा कि तू कितना
उत्तम है। उस समय की बातें मैं उनको बताऊँगा, जब

तूने ऐसे मुझको एक नहीं अनगिनित अवसर पर बचाया था।

16हे यहोवा, मेरे स्वामी। मैं तेरी महानता का वर्णन करुँगा। बस केवल मैं तेरी और तेरी ही अच्छाई की चर्चा करुँगा।

17हे परमेश्वर, तूने मुझको बचपन से ही शिक्षा दी। मैं आज तक बखानता रहा हूँ, उन अद्‌भुत कर्मो को जिनको तू करता है!

18मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे केश श्वेत है। किन्तु मैं जानता हूँ कि तू मुझको नहीं तजेगा। हर नयी पीढ़ी से, मैं तेरी शक्ति का और तेरी महानता का वर्णन करुँगा।

19हे परमेश्वर, तेरी धार्मिकता आकाशों से ऊँची है। हे परमेश्वर, तेरे समान अन्य कोई नहीं। तूने अदभुत आश्चर्यपूर्ण काम किये हैं।

20तूने मुझे बुरे समय और कष्ट देखने दिये। किन्तु तूने ही मुझे उन सब से बचा लिया और जीवित रखा है। इसका कोई अर्थ नहीं, मैं कितना ही गहरा डूबा तूने मुझको मेरे संकटों से उबार लिया।

21तू ऐसे काम करने की मुझको सहायता दे जो पहले से भी बड़े हो। मुझको सुख चैन देता रह।

22वीणा के संग, मैं तेरे गुण गाऊँगा। हे मेरे परमेश्वर, मैं यह गाऊँगा कि तुझ पर भरोसा रखा जा सकता है। मैं उसके लिए गीत अपनी सितार पर बजाया करुँगा जो इस्राएल का पवित्र यहोवा है।

23मेरे प्राणों की तूने रक्षा की है। मेरा मन मगन होगा और अपने होंठों से, मैं प्रशंसा का गीत गाऊँगा।

24मेरी जीभ हर घड़ी तेरी धार्मिकता के गीत गाया करेगी। ऐसे वे लोग जो मुझको मारना चाहते हैं, वे पराजित हो जायेंगे और अपमानित होंगे।

भजन 72

दाऊद के लिये।

1हे परमेश्वर, राजा की सहायता कर ताकि वह भी तेरी तरह से विवेकपूर्ण न्याय करे। राजपुत्र की सहायता कर ताकि वह तेरी धार्मिकता जान सके।

2राजा की सहायता कर कि तेरे भक्तों का वह निष्पक्ष न्याय करें। सहायता कर उसकी कि वह दीन जनों के साथ उचित व्यवहार करे।

3धरती पर हर कहीं शांति और न्याय रहे।

4राजा, निर्धन लोगों के प्रति न्यायपूर्ण रहे। वह असहाय लोगों की सहायता करे। वे लोग दण्डित हो जो उनको सताते हो।

5मेरी यह कामना है कि जब तक सूर्य आकाश में चमकता है, और चन्द्रमा आकाश में है। लोग राजा का भय मानें। मेरी आशा है कि लोग उसका भय सदा मानेंगे।

6राजा की सहायता, धरती पर पड़ने वाली बरसात बनने में कर।उसकी सहायता कर कि वह खेतों में पडने वाली बौछार बने।

7जब तक वह राजा है, भलाई फूले-फले। जब तक चन्द्रमा है, शांति बनी रहे।

8उसका राज्य सागर से सागर तक तथा परात नदी से लेकर सुदूर धरती तक फैल जाये।

9मरुभूमि के लोग उसके आगे झुके। और उसके सब शत्रु उसके आगे औंधे मुँह गिरे हुए धरती पर झुकें।

10तर्शीश का राजा और दूर देशों के राजा उसके लिए उपहार लायें। शेबा के राजा और सबा के राजा उसको उपहार दे।

11सभी राजा हमारे राजा के आगे झुके। सभी राष्ट्र उसकी सेवा करते रहें।

12हमारा राजा असहायों का सहायक है। हमारा राजा दीनों और असहाय लोगों को सहारा देता है।

13दीन, असहाय जन उसके सहारे हैं। यह राजा उनको जीवित रखता है।

14यह राजा उनको उन लोगों से बचाता है, जो क्रूर हैं और जो उनको दुःख देना चाहते हैं। राजा के लिये उन दीनों का जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

15राजा दीर्घायु हो! और शेबा से सोना प्राप्त करें। राजा के लिए सदा प्रार्थना करते रहो, और तुम हर दिन उसको आशीष दो।

16खेत भरपूर फसल दे। पहाड़ियाँ फसलों से ढक जायें। ये खेत लबानोन के खेतों से उपजाऊँ हो जायें। नगर लोगों की भीड़ से भर जाये, जैसे खेत घनी घास से भर जाते हैं।

17राजा का यश सदा बना रहे। लोग उसके नाम का स्मरण तब तक करते रहें, जब तक सूर्य चमकता है। उसके कारण सारी प्रजा धन्य हो जाये और वे सभी उसको आशीष दे।

18यहोवा परमेश्वर के गुण गाओं, जो इस्राएल का परमेश्वर है! वही परमेश्वर ऐसे आश्चर्यकर्म कर सकता है।

19उसके महिमामय नाम की प्रशंसा सदा करो! उसकी महिमा समस्त संसार में भर जाये! आमीन और आमीन!

20यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुई।

तीसरा भाग

भजन 73

आसाप का स्तुति गीत।

1सचमुच, इस्राएल के प्रति परमेश्वर भला है। परमेश्वर उन लोगों के लिए भला होता है जिनके हृदय स्वच्छ है।

2मैं तो लगभग फिसल गया था और पाप करने लगा।

3जब मैंने देखा कि पापी सफल हो रहे हैं और शांति
से रह रहे हैं, तो उन अभिमानी लोगों से मुझको जलन
हुयी।
4वे लोग स्वस्थ हैं उन्हें जीवन के लिए संघर्ष नहीं
करना पड़ता है।
5वे अभिमानी लोग पीड़ायें नहीं उठाते है। जैसे हमलोग
दुःख झेलते हैं, वैसे उनको औरों की तरह यातनाएँ नहीं
होती।
6इसलिए वे अहंकार से भरे रहते हैं। और वे घृणा से
भरे हुए रहते हैं। ये वैसा ही साफ दिखता है, जैसे रत्न
और वे सुन्दर वस्त्र जिनको वे पहने हैं।
7वे लोग ऐसे है कि यदि कोई वस्तु देखते हैं और
उनको पसन्द आ जाती है, तो उसे बढ़कर झपट लेते हैं।
वे वैस ही करते हैं, जैसे उन्हें भाता है।
8वे दूसरों के बारें में क्रूर बातें और बुरी बुरी बातें
कहते है। वे अहंकारी और हठी है। वे दूसरे लोगों से
लाभ उठाने का रास्ता बनाते है।
9अभिमानी मनुष्य सोचते हैं वे देवता हैं! वे अपने
आप को धरती का शासक समझते हैं।
10यहाँ तक कि परमेश्वर के जन, उन दुष्टों की ओर
मुड़ते और जैसा वे कहते है, वैसा विश्वास कर लेते हैं।
11वे दुष्ट जन कहते हैं, "हमारे उन कर्मो को परमेश्वर
नहीं जानता! जिनकों हम कर रहे हैं!"
12वे मनुष्य अभिमान और कुटिल हैं, किन्तु वे निरन्तर
धनी और अधिक धनी होते जा रहे हैं।
13सो मैं अपना मन पवित्र क्यों बनाता रहूँ? अपने
हाथों को सदा निर्मल क्यों करता रहूँ?
14हे परमेश्वर, मैं सारे ही दिन दुःख भोगा करता हूँ।
तू हर सुबह मुझको दण्ड देता है।
15हे परमेश्वर, मैं ये बातें दूसरो को बताना चाहता
था। किन्तु मैं जानता था और मैं ऐसे ही तेरे भक्तों के
विरुद्ध हो जाता था।
16इन बातों को समझने का, मैंने जतन किया किन्तु
इनका समझना मेरे लिए बहुत कठिन था,
17जब तक मैं तेरे मन्दिर में नहीं गया। मैं परमेश्वर
के मन्दिर में गया और तब मैं समझा।
18हे परमेश्वर, सचमुच तूने उन लोगों को भयंकर
परिस्थिति में रखा है। उनका गिर जाना बहुत ही सरल
है। उनका नष्ट हो जाना बहुत ही सरल है।
19सहसा उन पर विपत्ति पड़ सकती है, और वे अहंकारी
जन नष्ट हो जाते हैं। उनके साथ भयंकर घटनाएँ घट
सकती हैं, और फिर उनका अंत हो जाता है।
20हे यहोवा, वे मनुष्य ऐसे होंगे जैसे स्वप्न जिसको
हम जागते ही भूल जाते हैं। तू ऐसे लोगों को हमारे स्वप्न
के भयानक जन्तु की तरह अदृश्य कर दे।
21-22 मैं अज्ञान था। मैंने धनिकों और दुष्ट लोगों पर
विचारा, और मैं व्याकुल हो गया। हे परमेश्वर, मैं तुझ
पर क्रोधित हुआ! मैं निर्बुद्धि जानवर सा व्यवहार
किया।
23वह सब कुछ मेरे पास है, जिसकी मुझे अपेक्षा है।
मैं तेरे साथ हरदम हूँ। हे परमेश्वर, तू मेरा हाथ थामें
है।
24हे परमेश्वर, तू मुझे मार्ग दिखलाता, और मुझे
सम्मति देता है। अंत में तू अपनी महिमा में मेरा नेतृत्व
करेगा।
25हे परमेश्वर, स्वर्ग में बस तू ही मेरा है, और धरती
पर मुझे क्या चाहिए, जब तू मेरे साथ है?
26चाहे मेरा मन टूट जाये और मेरी काया नष्ट हो
जाये किन्तु वह चट्टान मेरे पास है, जिसे मैं प्रेम करता
हूँ। परमेश्वर मेरे पास सदा है!
27हे परमेश्वर, जो लोग तुझको त्यागते हैं, वे नष्ट हो
जाते है। जिनका विश्वास तुझमें नहीं तू उन लोगों को
नष्ट कर देगा।
28किन्तु, मैं परमेश्वर के निकट आया। मेरे साथ
परमेश्वर भला है, मैंने अपना सुरक्षास्थान अपने स्वामी
यहोवा को बनाया है। हे परमेश्वर, मैं उन सभी बातों
का बखान करूँगा जिनको तूने किया है।

भजन 74

आसाप का एक प्रगीत।

1हे परमेश्वर, क्या तूने हमें सदा के लिये बिसराया
है? क्योंकि तू अभी तक अपने निज जनों से क्रोधित
है?
2उन लोगों को स्मरण कर जिनको तूने बहुत पहले
मोल लिया था। हमको तूने बचा लिया था। हम तेरे
अपने हैं। याद कर तेरा निवास सिय्योन के पहाड़ पर
था।
3हे परमेश्वर, आ और इन अति प्राचीन खण्डहरों से
हो कर चल। तू उस पवित्र स्थान पर लौट कर आजा
जिसको शत्रु ने नष्ट कर दिया है।
4मन्दिर में शत्रुओं ने विजय उद्घोष किया। उन्होंने
मन्दिर में निज झंडों को यह प्रकट करने के लिये गाड़
दिया है कि उन्होंने युद्ध जीता है।
5शत्रुओं के सैनिक ऐसे लग रहे थे, जैसे कोई खुरपी
खरपतवार पर चलाती हो।
6हे परमेश्वर, इन शत्रु सैनिकों ने निज कुल्हाडे और
फरसों का प्रयोग किया, और तेरे मन्दिर की नक्काशी
फाड़ फेंकी।
7परमेश्वर इन सैनिकों ने तेरा पवित्र स्थान जला
दिया। तेरे मन्दिर को धूल में मिला दिया, जो तेरे नाम
को मान देने हेतु बनाया गया था।
8उस शत्रु ने हमको पूरी तरह नष्ट करने की ठान
ली थी। सो उन्होंने देश के हर पवित्र स्थल को फूँक
दिया।

9कोई संकेत हम देख नहीं पाये। कोई भी नबी बच
नहीं पाया था। कोई भी जानता नहीं था क्या किया
जाये।
10हे परमेश्वर, ये शत्रु कब तक हमारी हँसी उड़ायेंगे?
क्या तू इन शत्रुओं को तेरे नाम का अपमान सदा सर्वदा
करने देगा?
11हे परमेश्वर, तूने इतना कठिन दण्ड हमकों क्यों
दिया? तूने अपनी महाशक्ति का प्रयोग किया और हमें
पूरी तरह नष्ट किया!
12हे परमेश्वर, बहुत दिनों से तू ही हमारा शासक
रहा। इस देश में तूने अनेक युद्ध जीतने में हमारी
सहायता की।
13हे परमेश्वर, तूने अपनी महाशक्ति से लाल सागर
के दो भाग कर दिये।
14तूने विशालकाय समुद्री दानवों को पराजित किया!
तूने लिव्यातान के सिर कुचल दिये, और उसके शरीर
को जंगली पशुओं को खाने के लिये छोड़ दिया।
15तूने नदी, झरने रचे, फोड़कर जल बहाया। तूने
उफनती हुई नदियों को सुखा दिया।
16हे परमेश्वर, तू दिन का शासक है, और रात का
भी शासक तू ही है। तूने ही चाँद और सूरज को बनाया।
17तू धरती पर सब की सीमाएँ बाँधता है। तूने ही गर्मी
और सर्दी को बनाया।
18हे परमेश्वर, इन बातों को याद कर। और याद
कर की शत्रु ने तेरा अपमान किया है। वे मूर्ख लोग तेरे
नाम से बैर रखते हैं!
19हे परमेश्वर, उन जंगली पशुओं को निज कपोत
मत लेने दे! अपने दीन जनों को तू सदा मत बिसरा।
20हमने जो आपस में वाचा की है उसको याद कर,
इस देश में हर किसी अँधेरे स्थान पर हिंसा है।
21हे परमेश्वर, तेरे भक्तों के साथ अत्याचार किये
गये, अब उनको और अधिक मत सताया जाने दे। तेरे
असहाय दीन जन, तेरे गुण गाते है।
22हे परमेश्वर, उठ और प्रतिकार कर! स्मरण कर
की उन मूर्ख लोगों ने सदा ही तेरा अपमान किया है।
23वे बुरी बातें मत भूल जिन्हें तेरे शत्रुओं ने प्रतिदिन
तेरे लिये कही। भूल मत कि वे किस तरह तेरे से युद्ध
करते समय गुर्राये।

भजन 75

*'नष्ट मत कर' नामक धुन पर संगीत निर्देशक के
लिये आसाप का एक स्तुति गीत।*

1हे परमेश्वर, हम तेरी प्रशंसा करते हैं! हम तेरे नाम
का गुणगान करते हैं! तू समीप है और लोग तेरे उन
अद्‌भुत कर्मों का जिनको तू करता है, बखान करते हैं।
2परमेश्वर कहता है, "मैंने न्याय का समय चुन लिया,
मैं निष्पक्ष होकर के न्याय करुँगा।
3धरती और धरती की हर वस्तु डगमगा सकती है
और गिरने को तैयार हो सकती है, किन्तु मैं ही उसे
स्थिर रखता हूँ।"
4-5"कुछ लोग बहुत ही अभिमानी होते हैं, वे सोचते
रहते है कि वे बहुत शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण है।
लेकिन उन लोगों को बता दो, 'डींग मत हाँकों!' 'इतने
अभिमानी मत बने रह!'"
6इस धरती पर सचमुच, कोई भी मनुष्य नीच को
महान नहीं बना सकता।
7परमेश्वर न्याय करता है। परमेश्वर इसका निर्णय
करता है कि कौन व्यक्ति महान होगा। परमेश्वर ही
किसी व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण पद पर बिठाता है। और
किसी दूसरे को नीची दशा में पहुँचाता है।
8परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देने को तत्पर है। परमेश्वर
के पास विष मिला हुआ मधु पात्र है। परमेश्वर इस
दाखमधु (दण्ड) को उण्डेलता है और दुष्ट जन उसे
अंतिम बूँद तक पीते हैं।
9मैं लोगों से इन बातों का सदा बखान करुँगा। मैं
इस्राएल के परमेश्वर के गुण गाऊँगा।
10मैं दुष्ट लोगों की शक्ति को छीन लूँगा, और मैं
सज्जनों को शक्ति दूँगा।

भजन 76

*तार वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिये
आसाप का एक गीत।*

1यहूदा के लोग परमेश्वर को जानते हैं। इस्राएल
जानता है कि सचमुच परमेश्वर का नाम बड़ा है।
2परमेश्वर का मन्दिर शालेम में स्थित है। परमेश्वर
का घर सिय्योन के पर्वत पर है।
3उस जगह पर परमेश्वर ने धनुष-बाण, ढाल, तलवारे
और युद्ध के दूसरे शस्त्रों को तोड़ दिया।
4हे परमेश्वर, जब तू उन पर्वतों से लौटता है, जहाँ
तूने अपने शत्रुओं को हरा दिया था, तू महिमा से
मण्डित रहता है।
5उन सैनिकों ने सोचा की वे बलशाली है। किन्तु वे
अब रणक्षेत्रों में मरे पड़े हैं। उनके शव जो कुछ भी
उनके साथ था, उस सब कुछ के रहित पड़े हैं। उन
बलशाली सैनिकों में कोई ऐसा नहीं था, जो आप स्वयं
का रक्षा कर पाता।
6याकूब का परमेश्वर उन सैनिकों पर गरजा और
वह सेना रथों और अश्वों सहित गिरकर मर गयी।
7हे परमेश्वर, तू भय विस्मयपूर्ण है! जब तू कुपित
होता है तेरे सामने कोई व्यक्ति टिक नहीं सकता।
8-9न्यायकर्ता के रुप में यहोवा ने खड़े होकर अपना
निर्णय सुना दिया। परमेश्वर ने धरती के नम्र लोगों को
बचाया। स्वर्ग से उसने अपना निर्णय दिया और सम्पूर्ण
धरती शब्द रहित और भयभीत हो गई।

10हे परमेश्वर, जब तू दुष्टों को दण्ड देता है। लोग तेरा
गुण गाते हैं। तू अपना क्रोध प्रकट करता है और शेष
बचे लोग बलशाली हो जाते हैं।
11लोग परमेश्वर की मन्नतें मानेंगे और वे उन वस्तुओं
को जिनकी मन्नतें उन्होंने मानीं हैं, यहोवा को अर्पण
करेंगे। लोग हर किसी स्थान से उस परमेश्वर को
उपहार लायेंगे।
12परमेश्वर बड़े बड़े सम्राटों को हराता है। धरती के
सभी शासकों उसका भय मानों।

भजन 77

यदूतून राग पर संगीत निर्देशक के
लिये आसाप का एक पद।

1मैं सहायता पाने के लिये परमेश्वर को पुकारुँगा। हे
परमेश्वर, मैं तेरी विनती करता हूँ, तू मेरी सुन ले!
2हे मेरे स्वामी, मुझ पर जब दुःख पड़ता है, मैं तेरी
शरण में आता हूँ। मैं सारी रात तुझ तक पहुँचने में
जुझा हूँ। मेरा मन चैन पाने को नहीं माना।
3मैं परमेश्वर का मनन करता हूँ, और मैं जतन
करता रहता हूँ कि मैं उससे बात करुँ और बता दूँ कि
मुझे कैसा लग रहा है। किन्तु हाय मैं ऐसा नहीं कर
पाता।
4तू मुझे सोने नहीं देगा। मैंने जतन किया है कि मैं
कुछ कह डालूँ, किन्तु मैं बहुत घबराया था।
5मैं अतीत की बातें सोचते रहा। बहुत दिनों पहले जो
बातें घटित हुई थी उनके विषय में मैं सोचता ही रहा।
6रात में, मैं निज गीतों के विषय में सोचता हूँ। मैं
अपने आप से बातें करता हूँ, और मैं समझने का यत्न
करता हूँ।
7मुझको यह हैरानी है, "क्या हमारे स्वामी ने हमे
सदा के लिये त्यागा है? क्या वह हमको फिर नहीं
चाहेगा?
8क्या परमेश्वर का प्रेम सदा को जाता रहा? क्या वह
हमसे फिर कभी बात करेगा?
9क्या परमेश्वर भूल गया है कि दया क्या होती है?
क्या उसकी करुणा क्रोध में बदल गयी है?"
10फिर यह सोचा करता हूँ, "वह बात जो मुझे खाये
डाल रही है: 'क्या परम परमेश्वर अपना निज शक्ति
खो बैठा है?'"
11याद करो वे शक्ति भरे काम जिनको यहोवा ने
किये। हे परमेश्वर, जो काम तूने बहुत समय पहले
किये मुझको याद है।
12मैंने उन सभी कामों को जिनको तूने किये है
मनन किया। जिन कामों को तूने किया मैंने सोचा है।
13हे परमेश्वर, तेरी राहें पवित्र हैं। हे परमेश्वर, कोई
भी महान नहीं है, जैसा तू महान है।
14तू ही वह परमेश्वर है जिसने अद्‌भुत कार्य किये।
तू ने लोगों को अपनी निज महाशक्ति दर्शायी।
15तूने निज शक्ति का प्रयोग किया और भक्तों को
बचा लिया। तूने याकूब और यूसुफ की संताने बचा ली।
16हे परमेश्वर, तुझे सागर ने देखा और वह डर गया।
गहरा समुद्र भय से थर थर काँप उठा।
17सघन मेघों से उनका जल छूट पड़ा था। ऊँचे मेघों
से तीव्र गर्जन लोगों ने सुना। फिर उन बादलों से बिजली
के तेरे बाण सारे बादलों में कौंध गये।
18कौंधती बिजली में झँझावान ने तालियाँ बजायी जगत
चमक-चमक उठा। धरती हिल उठी और थर थर
काँप उठी।
19हे परमेश्वर, तू गहरे समुद्र में ही पैदल चला। तूने
चलकर ही सागर पार किया। किन्तु तूने कोई पद चिन्ह
नहीं छोड़ा।
20तूने मूसा और हारुन का उपयोग निज भक्तों की
अगुवाई भेड़ों के झुण्ड की तरह करने में किया।

भजन 78

आसाप का एक गीत।

1मेरे भक्तों, तुम मेरे उपदेशों को सुनो। उन बातों पर
कान दो जिन्हें मैं बताता हूँ।
2मैं तुम्हें यह कथा सुनाऊँगा। मैं तुम्हें पुरानी कथा
सुनाऊँगा।
3हमने यह कहानी सुनी है, और इसे भली भाँति
जानते हैं। यह कहानी हमारे पूर्वजों ने कही।
4इस कहानी को हम नहीं भूलेंगे। हमारे लोग इस
कथा को अगली पीढ़ी को सुनाते रहेंगे। हम सभी
यहोवा के गुण गायेंगे। हम उन का अद्‌भुत कर्मों का
जिनको उसने किया है बखान करेंगे।
5यहोवा ने याकूब से वाचा किया। परमेश्वर ने इस्राएल
को व्यवस्था का विधान दिया, और परमेश्वर ने हमारे
पूर्वजों को आदेश दिया। उसने हमारे पूर्वजों को व्यवस्था
का विधान अपने संतानों को सिखाने को कहा।
6इस तरह लोग व्यवस्था के विधान को जानेंगे। यहाँ
तक कि अन्तिम पीढ़ी तक इसे जानेगी। नयी पीढ़ी जन्म
लेगी और पल भर में बढ़ कर बड़े होंगे, और फिर वे
इस कहानी को अपनी संतानों को सुनायेंगे।
7अत: वे सभी लोग यहोवा पर भरोसा करेंगे। वे उन
शक्तिपूर्ण कामों को नहीं भूलेंगे जिनको परमेश्वर ने
किया था। वे ध्यान से रखवाली करेंगे और परमेश्वर
के आदेशों का अनुसरण करेंगे।
8अत: लोग अपनी संतानों को परमेश्वर के आदेशों
को सिखायेंगे, तो फिर वे संतानें उनके पूर्वजों जैसे नहीं
होंगे। उनके पूर्वजों ने परमेश्वर से अपना मुख मोड़ा
और उसका अनुसरण करने से इन्कार किया, वे लोग
हठी थे। वे परमेश्वर के आत्मा के भक्त नहीं थे।

9एप्रैम के लोग शस्त्र धारी थे, किन्तु वे युद्ध से पीठ
दिखा गये।
10उन्होंने जो यहोवा से वाचा किया था पाला नहीं। वे
परमेश्वर के सीखों को मानने से मुकर गये।
11एप्रैम के वे लोग उन बड़ी बातों को भूल गए जिन्हें
परमेश्वर ने किया था। वे उन अद्भुत बातों को भूल
गए जिन्हें उसने उन्हें दिखायी थी।

12परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को मिस्र के सोअन में
निज महाशक्ति दिखायी।
13परमेश्वर ने लाल सागर को चीर कर लोगों को
पार उतार दिया। पानी पक्की दीवार सा दोनों ओर खड़ा
रहा।
14हर दिन उन लोगों को परमेश्वर ने महा बादल के
साथ अगुवाई की। हर रात परमेश्वर ने आग के लाट
के प्रकाश से राह दिखाया।
15परमेश्वर ने मरुस्थल में चट्टान को फाड़ कर
गहरे धरती के नीचे से जल दिया।
16परमेश्वर चट्टान से जलधारा वैसे लाया जैसे कोई
नदी हो!
17किन्तु लोग परमेश्वर के विरोध में पाप करते रहे।
वे मरुस्थल तक में, परम परमेश्वर के विरुद्ध हो गए।
18फिर उन लोगों ने परमेश्वर को परखने का निश्चय
किया। उन्होंने बस अपनी भूख मिटाने के लिये परमेश्वर
से भोजन माँगा।
19परमेश्वर के विरुद्ध वे बतियाने लगे, वे कहने
लगे, "क्या मरुभूमि में परमेश्वर हमें खाने को दे सकता
है?
20परमेश्वर ने चट्टान पर चोट की और जल का
एक रेला बाहर फूट पड़ा। निश्चय ही वह हमको कुछ
रोटी और माँस दे सकता है।"
21यहोवा ने सुन लिया जो लोगों ने कहा था। याकूब
से परमेश्वर बहुत ही कुपित था। इस्राएल से परमेश्वर
बहुत ही कुपित था।
22क्यों? क्योंकि लोगों ने उस पर भरोसा नहीं रखा
था, उन्हें भरोसा नहीं था, कि परमेश्वर उन्हें बचा
सकता है।
23-24किन्तु तब भी परमेश्वर ने उन पर बादल को
उघाड़ दिया, उनके खाने के लिये नीचे मन्ना बरसा
दिया। यह ठीक वैसे ही हुआ जैसे अम्बर के द्वार खुल
जाये और आकाश के कोठे से बाहर अन्न उँडेला हो।
25लोगों ने वह स्वर्गदूत का भोजन खाया। उन लोगों
को तृप्त करने के लिये परमेश्वर ने भरपूर भोजन
भेजा।
26-27फिर परमेश्वर ने पूर्व से तीव्र पवन चलाया
और उन पर बटेरे वर्षा जैसे गिरने लगे। तिमान की
दिशा से परमेश्वर की महाशक्ति ने एक आँधी उठायी
और नीला आकाश काला हो गया क्योंकि वहाँ अनगिनत
पक्षी छाए थे।
28वे पक्षी ठीक डेरे के बीच में गिरे थे। वे पक्षी उन
लोगों के डेरों के चारों तरफ गिरे थे।
29उनके पास खाने को भरपूर हो गया, किन्तु उनकी
भूख ने उनसे पाप करवाये।
30उन्होंने अपनी भूख पर लगाम नहीं लगायी। सो
उन्होंने उन पक्षियों को बिना ही रक्त निकाले, बटेरो
को खा लिया।
31सो उन लोगों पर परमेश्वर अति कुपित हुआ और
उनमें से बहुतों को मार दिया। उसने बलशाली युवकों
को मृत्यु का ग्रास बना दिया।
32फिर भी लोग पाप करते रहे! वे उन अद्भुत कर्मों
के भरोसे नहीं रहे, जिनको परमेश्वर कर सकता है।
33सो परमेश्वर ने उनके व्यर्थ जीवन को किसी
विनाश से अंत किया।
34जब कभी परमेश्वर ने उनमें से किसी को मारा।
वे बाकि परमेश्वर की ओर लौटने लगे। वे दौड़कर
परमेश्वर की ओर लौट गये।
35वे लोग याद करेंगे कि परमेश्वर उनकी चट्टान
रहा था। वे याद करेंगे की परम परमेश्वर ने उनकी
रक्षा की।
36वैसे तो उन्होंने कहा था कि वे उससे प्रेम रखते हैं।
उन्होंने झूठ बोला था। ऐसा कहने में वे सच्चे नहीं थे।
37वे सचमुच मन से परमेश्वर के साथ नहीं थे। वे
वाचा के लिये सच्चे नहीं थे।
38किन्तु परमेश्वर करुणापूर्ण था। उसने उन्हें उनके
पापों के लिये क्षमा किया, और उसने उनका विनाश
नहीं किया। परमेश्वर ने अनेकों अवसर पर अपना
क्रोध रोका। परमेश्वर ने अपने को अति कुपित होने
नहीं दिया। 39परमेश्वर को याद रहा कि वे मात्र मनुष्य
हैं। मनुष्य केवल हवा जैसे है जो बह कर चली जाती है
और लौटती नहीं।
40हाय, उन लोगों ने मरुभूमि में परमेश्वर को कष्ट
दिया! उन्होंने उसको बहुत दुःखी किया था!
41परमेश्वर के धैर्य को उन लोगों ने फिर परखा,
सचमुच इस्राएल के उस पवित्र को उन्होंने कष्ट दिया।
42वे लोग परमेश्वर की शक्ति को भूल गये। वे लोग
भूल गये कि परमेश्वर ने उनको कितनी ही बार
शत्रुओं से बचाया।
43वे लोग मिस्र की अद्भुत बातों को और सोअन के
क्षेत्रों के चमत्कारों को भूल गये।
44उनकी नदियों को परमेश्वर ने खून में बदल दिया
था! जिनका जल मिस्र के लोग पी नहीं सकते थे।
45परमेश्वर ने भिड़ों के झुण्ड भेजे थे जिन्होंने मिस्र
के लोगों को डसा। परमेश्वर ने उन मेढकों को भेजा
जिन्होंने मिस्रियों के जीवन को उजाड़ दिया।

46परमेश्वर ने उनके फसलों को टिड्डों को दे डाला।
उनके दूसरे पौधे टिड्डियों को दे दिये।
47परमेश्वर ने मिस्रियों के अंगूर के बाग ओलों से
नष्ट किये, और पाला गिरा कर के उनके वृक्ष नष्ट कर
दिये।
48परमेश्वर ने उनके पशु ओलों से मार दिये और
बिजलियाँ गिरा कर पशु धन नष्ट किये।
49परमेश्वर ने मिस्र के लोगों को अपना प्रचण्ड क्रोध
दिखाया। उनके विरोध में उसने अपने विनाश के दूत
भेजे।
50परमेश्वर ने क्रोध प्रकट करने के लिये एक राह
पायी। उनमें से किसी को जीवित रहने नहीं दिया।
हिंसक महामारी से उसने सारे ही पशुओं को मर जाने
दिया।
51परमेश्वर ने मिस्र के हर पहले पुत्र को मार
डाला। हाम के घराने के हर पहले पुत्र को उसने
मार डाला।
52फिर उसने इस्राएल की चरवाहे के समान अगुवाई
की। परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसे राह दिखाई जैसे
जंगल में भेड़ों कि अगुवाई की है।
53वह अपने निज लोगों को सुरक्षा के साथ ले चला।
परमेश्वर के भक्तों को किसी से डर नहीं था। परमेश्वर
ने उनके शत्रुओं को लाल सागर में डुबाया।
54परमेश्वर अपने निज भक्तों को अपनी पवित्र धरती
पर ले आया। उसने उन्हें उस पर्वत पर लाया जिसे उसने
अपनी ही शक्ति से पाया।
55परमेश्वर ने दूसरी जातियों को वह भूमि छोड़ने को
विवश किया। परमेश्वर ने प्रत्येक घराने को उनका
भाग उस भूमि में दिया। इस तरह इस्राएल के घराने
अपने ही घरों में बस गये।
56इतना होने पर भी इस्राएल के लोगों ने परम परमेश्वर
को परखा और उसको बहुत दुःखी किया। वे लोग
परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे।
57इस्राएल के लोग परमेश्वर से भटक कर विमुख
हो गये थे। वे उसके विरोध में ऐसे ही थे, जैसे उनके
पूर्वज थे। वे इतने बुरे थे जैसे मुड़ा धनुष।
58इस्राएल के लोगों ने ऊँचे पूजा स्थल बनाये और
परमेश्वर को कुपित किया। उन्होंने देवताओं की मूर्तियाँ
बनाई और परमेश्वर को ईर्ष्यालु बनाया।
59परमेश्वर ने यह सुना और बहुत कुपित हुआ।
उसने इस्राएल को पूरी तरह नकारा!
60परमेश्वर ने शिलोह के पवित्र तम्बू को त्याग
दिया। यह वही तम्बू था जहाँ परमेश्वर लोगों के बीच में
रहता था।
61फिर परमेश्वर ने उसके निज लोगों को दूसरी
जातियों को बंदी बनाने दिया। परमेश्वर के "सुन्दर
रत्न" को शत्रुओं ने छीन लिया।
62परमेश्वर ने अपने ही लोगों (इस्राएली) पर निज
क्रोध प्रकट किया। उसने उनको युद्ध में मार दिया।
63उनके युवक जलकर राख हुए, और वे कन्याएँ
जो विवाह योग्य थीं, उनके विवाह गीत नहीं गाये गए।
64याजक मार डाले गए, किन्तु उनकी विधवाएँ उनके
लिए नहीं रोई।
65अंत में, हमारा स्वामी उठ बैठा जैसे कोई नींद से
जागकर उठ बैठता हो। या कोई योद्धा दाखमधु के नशे
से होश में आया हो।
66फिर तो परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को मारकर
भगा दिया और उन्हें पराजित किया। परमेश्वर ने अपने
शत्रुओं को हरा दिया और सदा के लिये अपमानित
किया।
67किन्तु परमेश्वर ने यूसुफ के घराने को त्याग
दिया। परमेश्वर ने इब्राहीम परिवार को नहीं चुना।
68परमेश्वर ने यहूदा के गोत्र को नहीं चुना और
परमेश्वर ने सिय्योन के पहाड़ को चुना जो उसको प्रिय
है।
69उस ऊँचे पर्वत पर परमेश्वर ने अपना पवित्र
मन्दिर बनाया। जैसे धरती अडिग है वैसे ही परमेश्वर ने
निज पवित्र मन्दिर को सदा बने रहने दिया।
70परमेश्वर ने दाऊद को अपना विशेष सेवक बनाने
में चुना। दाऊद तो भेड़ों कि देखभाल करता था, किन्तु
परमेश्वर उसे उस काम से ले आया।
71परमेश्वर दाऊद को भेड़ों को रखवाली से ले आया
और उसने उसे अपने लोगों कि रखवाली का काम
सौंपा, याकूब के लोग, यानी इस्राएल के लोग जो परमेश्वर
की सम्पती थे।
72और फिर पवित्र मन से दाऊद ने इस्राएल के लोगों
की अगुवाई की। उसने उन्हें पूरे विवेक से राह दिखाई।

भजन 79

आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, कुछ लोग तेरे भक्तों के साथ लड़ने
आये हैं। उन लोगों ने तेरे पवित्र मन्दिर को ध्वस्त
किया, और यरुशलेम को उन्होंने खण्डहर बना
दिया।
2तेरे भक्तों के शवों को उन्होंने गिद्धों को खाने के
लिये डाल दिया। तेरे अनुयायिओं के शव उन्होंने पशुओं
के खाने के लिये डाल दिया।

3हे परमेश्वर, शत्रुओं ने तेरे भक्तों को तब तक मार
जब तक उनका रक्त पानी सा नहीं फैल गया। उनके
शव दफनाने को कोई भी नहीं बचा।
4हमारे पड़ोसी देशों ने हमें अपमानित किया है। हमारे
आस पास के लोग सभी हँसते हैं, और हमारी हँसी
उड़ाते हैं।

5हे परमेश्वर, क्या तू सदा के लिये हम पर कुपित रहेगा? क्या तेरे तीव्र भाव अग्नि के समान धधकते रहेंगे?

6हे परमेश्वर, अपने क्रोध को उन राष्ट्रों के विरोध में जो तुझको नहीं पहचानते मोड़, अपने क्रोध को उन राष्ट्रों के विरोध में मोड़ जो तेरे नाम की आराधना नहीं करते।

7क्योंकि उन राष्ट्रों ने याकूब को नाश किया। उन्होंने याकूब के देश को नाश किया।

8हे परमेश्वर, तू हमारे पूर्वजों के पापों के लिये कृपा करके हमको दण्ड मत दे। जल्दी कर, तू हम पर निज करुणा दर्शा! हम को तेरी बहुत उपेक्षा है!

9हमारे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, हमको सहारा दे! अपने ही नाम की महिमा के लिये हमारी सहायता कर! हमको बचा ले! निज नाम के गौरव निमित्त हमारे पाप मिटा।

10दूसरी जाति के लोगों को तू यह मत कहने दे, "तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है? क्या वह तुझको सहारा नहीं दे सकता है?" हे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे ताकि उस दण्ड को हम भी देख सकें। उन लोगों को तेरे भक्तों को मारने का दण्ड दे।

11बंदी गृह में पड़े हुओं कि कृपया तू कराह सुन ले! हे परमेश्वर, तू निज महाशक्ति प्रयोग में ला और उन लोगों को बचा ले जिनको मरने के लिये ही चुना गया है।

12हे परमेश्वर, हम जिन लोगों से घिरे हैं, उनको उन अत्यचारों का दण्ड सात गुणा दे। हे परमेश्वर, उन लोगों को इतनी बार दण्ड दे जितनी बार वे तेरा अपमान किये है।

13हम तो तेरे भक्त हैं। हम तेरे रेवड़ की भेड़ हैं। हम तेरा गुणगान सदा करेंगे। हे परमेश्वर अंत काल तक तेरा गुण गायेंगे।

भजन 80

वाचा की कुमुदिनी धुन पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे इस्राएल के चरवाहे, तू मेरी सुन ले। तूने यूसुफ के भेड़ों (लोगों)की अगुवाई की। तू राजा सा करुब पर विराजता है। हमको निज दर्शन दे।

2हे इस्राएल के चरवाहे, एप्रैम, बिन्यामीन और मनश्शे के सामने तू अपनी महिमा दिखा, और हमको बचा ले।

3हे परमेश्वर, हमको स्वीकार कर। हमको स्वीकार कर और हमारी रक्षा कर!

4सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा , क्या तू सदा के लिये हम पर कुपित रहेगा? हमारी प्रार्थनाओं को तू कब सुनेगा?

5अपने भक्तों को तूने बस खाने को आँसू दिये है। तूने अपने भक्तों को पीने के लिये आँसुओं से लबालब प्याले दिये।

6तूने हमें हमारे पड़ोसियों के लिये कोई ऐसी वस्तु बनने दिया जिस पर वे झगड़ा करे। हमारे शत्रु हमारी हँसी उड़ाते हैं।

7हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, फिर हमको स्वीकार कर। हमको स्वीकार कर और हमारी रक्षा कर।

8प्राचीन काल में, तूने हमें एक अति महत्त्वपूर्ण पौधे सा समझा। तू अपनी दाखलता मिस्र से बाहर लाया। तूने दूसरे लोगों को यह धरती छोड़ने को विवश किया और यहाँ तूने अपनी निज दाखलता रोप दी।

9तूने दाखलता रोपने को धरती को तैयार किया, उसकी जड़ों को पक्की करने के लिये तूने सहारा दिया और फिर शीघ्र ही दाखलता धरती पर हर कहीं फैल गई।

10उसने पहाड़ ढक लिया। यहाँ तक कि उसके पत्तों ने विशाल देवदार वृक्ष को भी ढक लिया।

11इसकी दाखलताएँ भूमध्य सागर तक फैल गई। इसकी जड़ परात नदी तक फैल गई।

12हे परमेश्वर, तूने वे दीवारें क्यों गिरा दी, जो तेरी दाखलता की रक्षा करती थी। अब वह हर कोई जो वहाँ से गुजरता है, वहाँ से अंगूर को तोड़ लेते हैं।

13बनैले सुअर आते हैं, और तेरी दाखलता को रौंदते हुए गुजर जाते हैं। जंगली पशु आते हैं, और उसकी पत्तियाँ चर जाते हैं।

14सर्वशक्तिमान परमेश्वर, वापस आ। अपनी दाखलता पर स्वर्ग से नीचे देख, और इसकी रक्षा कर।

15हे परमेश्वर, अपनी उस दाखलता को देख जिसको तूने स्वयं निज हाथों से रोपा था। इस बच्चे पौधे को देख जिसे तूने बढ़ाया।

16तेरी दाखलता को सूखे हुए उपलों सा आग में जलाया गया। तू इससे क्रोधित था और तूने उजाड़ दिया।

17हे परमेश्वर, तू अपना हाथ उस पुत्र पर रख जो तेरे दाहिनी ओर खड़ा है। उस पुत्र पर हाथ रख जिसे तूने उठाया।

18फिर वह कभी तुझको नहीं त्यागेगा। तू उसको जीवित रख, और वह तेरे नाम की आराधना करेगा।

19सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर, हमारे पास लौट आ हमको अपना ले, और हमारी रक्षा कर।

भजन 81

गित्तीथ क संगत पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक पद।

1परमेश्वर जो हमारी शक्ति है आनन्द के साथ तुम उसके गीत गाओ, तुम उसका जो इस्राएल का परमेश्वर है, जय जयकार जोर से बोलो।

2संगीत आरम्भ करो। तम्बूरे बजाओ। वीणा सारंगी से
मधुर धुन निकालो।
3नये चाँद के समय में तुम नरसिंगा फूँको। पूर्णमासी
के अवसर पर तुम नरसिंगा फूँको। यह वह काल है
जब हमारे विश्राम के दिन शुरु होते हैं।
4इस्राएल के लोगों के लिये ऐसा ही नियम है। यह
आदेश परमेश्वर ने याकूब को दिये है।
5परमेश्वर ने यह वाचा यूसुफ के साथ तब किया था
जब परमेश्वर उसे मिस्र से दूर ले गया। मिस्र में हमने
वह भाषा सुनी थी जिसे हम लोग समझ नहीं पाये थे।
6परमेश्वर कहता है, "तुम्हारे कन्धों का बोझ मैंने ले
लिया है। मजदूर की टोकरी मैं उतार फेंकने देता हूँ।
7जब तुम विपत्ति में थे तुमने सहायता को पुकारा
और मैंने तुम्हें छुड़ाया। मैं तूफानी बादलों में छिपा हुआ
था और मैंने तुमको उत्तर दिया। मैंने तुम्हें मरिबा के
जल के पास परखा।
8अरे मेरे लोगों, तुम मेरी बात सुनों। और मैं तुमको
अपना वाचा दूँगा। इस्राएल, तू मुझ पर अवश्य कान दे!
9तू किसी मिथ्या देव जिनको विदेशी लोग पूजते हैं,
पूजा मत कर।
10मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं वही परमेश्वर
जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया था। हे इस्राएल, तू अपना
मुख खोल, मैं तुझको निवाला दूँगा।
11किन्तु मेरे लोगों ने मेरी नहीं सुनी। इस्राएल ने मेरी
आज्ञा नहीं मानी।
12इसलिए मैंने उन्हें वैसा ही करने दिया, जैसा वे
करना चाहते थे। इस्राएल ने वो सब किया जो उन्हें
भाता था।
13भला होता मेरे लोग मेरी बात सुनते, और काश!
इस्राएल वैसा ही जीवन जीता जैसा मैं उससे चाहता था।
14तब मैं फिर इस्राएल के शत्रुओं को हरा देता। मैं
उन लोगों को दण्ड देता जो इस्राएल को दुःख देते।
15यहोवा के शत्रु डर से थर थर काँपते हैं। वे सदा
सर्वदा को दण्डित होंगे।
16परमेश्वर निज भक्तों को उत्तम गेहूँ देगा। चट्टान
उन्हें शहद तब तक देगी जब तक तृप्त नहीं होंगे।"

भजन 82

आसाप का एक स्तुति गीत।

1परमेश्वर देवों की सभा के बीच विराजता है। उन
देवों की सभा का परमेश्वर न्यायाधीश है।
2परमेश्वर कहता है, "कब तक तुम लोग अन्यायपूर्ण
न्याय करोगे? कब तक तुम लोग दुराचारी लोगों को यूँ
ही बिना दण्ड दिए छोड़ते रहोगे?
3अनाथों और दीन लोगों की रक्षा कर। जिन्हें उचित
व्यवहार नहीं मिलता तू उनके अधिकारों कि रक्षा
कर।
4दीन और असहाय जन की रक्षा कर। दुष्टों के
चंगुल से उनको बचा ले।
5इस्राएल के लोग नहीं जानते क्या कुछ घट रहा है।
वे समझते नहीं! वे जानते नहीं वे क्या कर रहे हैं।
उनका जगत उनके चारों ओर गिर रहा है।"
6मैंने (परमेश्वर) कहा, "तुम लोग ईश्वर हो, तुम
परम परमेश्वर के पुत्र हो।
7किन्तु तुम भी वैसे ही मर जाओगे जैसे निश्चय ही
सब लोग मर जाते हैं। तुम वैसे मरोगे जैसे अन्य नेता मर
जाते हैं।"
8हे परमेश्वर, खड़ा हो! तू न्यायाधीश बन जा! हे
परमेश्वर, तू सारे ही राष्ट्रों का नेता बन जा!

भजन 83

आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, तू मौन मत रह! अपने कानों को बंद
मत कर! हे परमेश्वर, कृपा करके कुछ बोल।
2हे परमेश्वर, तेरे शत्रु तेरे विरोध में कुचक्र रच रहे
हैं। तेरे शत्रु शीघ्र ही वार करेंगे।
3वे तेरे भक्तों के विरुद्ध षड़यन्त्र रचते हैं। तेरे शत्रु
उन लोगों के विरोध में जो तुझको प्यारे हैं योजनाएँ
बना रहे हैं।
4वे शत्रु कह रहे हैं, "आओ, हम उन लोगों को पूरी
तरह मिटा डाले, फिर कोई भी व्यक्ति 'इस्राएल' का
नाम याद नहीं करेगा।"
5हे परमेश्वर, वे सभी लोग तेरे विरोध में और तेरे
उस वाचा के विरोध में जो तूने हमसे किया है। युद्ध
करने के लिये एक जुट हो गए।
6 ये शत्रु हमसे युद्ध करने के लिये एक जुट हुए हैं:
एदोमी, इश्माएली, मोआबी और हाजिरा की संताने,
गबाली और
7अम्मोनी, अमालेकी और पलिश्ती के लोग, और
सूर के निवासी लोग। ये सभी लोग हमसे युद्ध करने जुट
आये।

8यहाँ तक कि अश्शूरी भी उन लोगों से मिल गये।
उन्होंने लूत के वंशजों को अति बलशाली बनाया।
9हे परमेश्वर, तू शत्रु वैसे हरा जैसे तूने मिद्यानी
लोगों, सिसरा, याबीन को किशोन नदी के पास
हराया।
10तूने उन्हें एन्दोर में हराया। उनकी लाशें धरती पर
पड़ी सड़ती रहीं।
11हे परमेश्वर, तू शत्रुओं के सेनापति को वैसे पराजित
कर जैसे तूने ओरेब और जायेब के साथ किया था,
कर जैसे तूने जेबह और सलमुन्ना के साथ किया।
12हे परमेश्वर, वे लोग हमको धरती छोड़ने के लिये
दबाना चाहते थे!

13उन लोगों को तू उखड़े हुए पौधा सा बना जिसको
पवन उड़ा ले जाता है। उन लोगों को ऐसे बिखेर दे जैसे
भूसे को आँधी बिखेर देती है।
14शत्रु को ऐसे नष्ट कर जैसे वन को आग नष्ट कर
देती है, और जंगली आग पहाड़ों को जला डालती है।
15हे परमेश्वर, उन लोगों का पीछा कर भगा दे, जैसे
आँधी से धूल उड़ जाती है। उनको कँपा और फूँक में
उड़ा दे जैसे चक्रवात करता है।
16हे परमेश्वर, उनको ऐसा पाठ पढ़ा दे, कि उनको
अहसास हो जाये कि वे सचमुच दुर्बल हैं। तभी वे तेरे
काम को पूजना चाहेंगे!
17हे परमेश्वर, उन लोगों को भयभीत कर दे और
सदा के लिये अपमानित करके उन्हें नष्ट कर दे।
18वे लोग तभी जानेंगे कि तू परमेश्वर है। तभी वे
जानेंगे तेरा नाम यहोवा है। तभी वे जानेंगे तू ही सारे
जगत का परम परमेश्वर है!

भजन 84

*मित्तिथ की संगत पर संगीत निर्देशक के
लिये कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।*

1सर्वशक्तिमान यहोवा, सचमुच तेरा मन्दिर कितना
मनोहर है।
2हे यहोवा, मैं तेरे मन्दिर में रहना चाहता हूँ। मैं तेरी
बाट जोहते थक गया हूँ! मेरा अंग अंग जीवित यहोवा
के संग होना चाहता है।
3सर्वशक्तिमान यहोवा, मेरे राजा, मेरे परमेश्वर, गौरेया
और शूपाबेनी तक के अपने घोंसले होते हैं। ये पक्षी
तेरी वेदी के पास घोंसले बनाते हैं और उन्हीं घोंसलों में
उनके बच्चे होते हैं।

4जो लोग तेरे मन्दिर में रहते हैं, अति प्रसन्न रहते हैं।
वे तो सदा ही तेरा गुण गाते हैं।
5वे लोग अपने हृदय में गीतों के साथ जो तेरे मन्दिर
में आते हैं, बहुत आनन्दित हैं।
6वे प्रसन्न लोग बाका घाटी जिसे परमेश्वर ने झरने
सा बनाया है गुजरते हैं। गर्मी की गिरती हुई वर्षा की बूँदे
जल के सरोवर बनाती है।
7लोग नगर नगर होते हुए सिय्योन पर्वत की यात्रा
करते हैं जहाँ वे अपने परमेश्वर से मिलेंगे।
8सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन!
याकूब के परमेश्वर तू मेरी सुन ले।
9हे परमेश्वर, हमारे संरक्षक की रक्षा कर। अपने
चुने हुए राजा पर दयालु हो।
10हे परमेश्वर, कहीं और हजार दिन ठहरने से तेरे
मन्दिर में एक दिन ठहरना उत्तम है। दुष्ट लोगों के बीच
वास करने से, अपने परमेश्वर के मन्दिर के द्वार के
पास खड़ा रहूँ यही उत्तम है।
11यहोवा हमारा संरक्षक और हमारा तेजस्वी राजा
है। परमेश्वर हमें करुणा और महिमा के साथ आशीर्वाद
देता है। जो लोग यहोवा का अनुसरण करते हैं और
उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उनको वह हर उत्तम
वस्तु देता है।
12सर्वशक्तिमान यहोवा, जो लोग तेरे भरोसे हैं वे
सचमुच प्रसन्न हैं!

भजन 85

*संगीत निर्देशक के लिये कोरह वंशियों
का एक स्तुति गीत।*

1हे यहोवा, तू अपने देश पर कृपालु हो। विदेश में
याकूब के लोग कैदी बने हैं। उन बंदियों को छुड़ाकर
उनके देश में वापस ला।
2हे यहोवा, अपने भक्तों के पापों को क्षमा कर। तू
उनके पाप मिटा दे।
3हे यहोवा, कुपित होना त्याग। आवेश से उन्मत मत
हो।
4हमारे परमेश्वर, हमारे संरक्षक, हम पर तू कुपित
होना छोड़ दे और फिर हमको स्वीकार कर ले।
5क्या तू सदा के लिये हमसे कुपित रहेगा?
6कृपा करके हमको फिर जिला दे! अपने भक्तों को
तू प्रसन्न कर दे।
7हे यहोवा, तू हमें दिखा दे कि तू हमसे प्रेम करता है।
हमारी रक्षा कर।
8जो परमेश्वर ने कहा, मैंने उस पर कान दिया।
यहोवा ने कहा कि उसके भक्तों के लिये वहाँ शांति
होगी। यदि वे अपने जीवन की मूर्खता की राह पर नहीं
लौटेंगे तो वे शांति को पायेंगे।
9परमेश्वर शीघ्र अपने अनुयायियों को बचाएगा। अपने
स्वदेश में हम शीघ्र ही आदर के साथ वास करेंगे।
10परमेश्वर का सच्चा प्रेम उनके अनुयायियों को
मिलेगा। नेकी और शांति चुम्बन के साथ उनका स्वागत
करेंगी।
11धरती पर बसे लोग परमेश्वर पर विश्वास करेंगे,
और स्वर्ग का परमेश्वर उनके लिये भला होगा।
12यहोवा हमें बहुत सी उत्तम वस्तुएँ देगा। धरती अनेक
उत्तम फल उपजायेगी।
13परमेश्वर के आगे आगे नेकी चलेगी, और वह
उसके लिये राह बनायेगी।

भजन 86

दाऊद की प्रार्थना।

1मैं एक दीन, असहाय जन हूँ। हे यहोवा, तू कृपा
करके मेरी सुन ले, और तू मेरी विनती का उत्तर दे।
2हे यहोवा, मैं तेरा भक्त हूँ। कृपा करके मुझको बचा
ले। मैं तेरा दास हूँ। तू मेरा परमेश्वर है। मुझको तेरा
भरोसा है, सो मेरी रक्षा कर।

3मेरे स्वामी, मुझ पर दया कर। मैं सारे दिन तेरी
विनती करता रहा हूँ।
4हे स्वामी, मैं अपना जीवन तेरे हाथ सौंपता हूँ।
मुझको तू सुखी बना मैं तेरा दास हूँ।
5हे स्वामी, तू दयालु और खरा है। तू सचमुच अपने
उन भक्तों को प्रेम करता है, जो सहारा पाने को तुझको
पुकारते हैं।
6हे यहोवा, मेरी विनती सुन। मैं दया के लिये जो
प्रार्थना करता हूँ, उस पर तू कान दे।
7हे यहोवा, अपने संकट की घड़ी में मैं तेरी विनती
कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ तू मुझको उत्तर देगा।
8हे परमेश्वर, तेरे समान कोई नहीं। जैसे काम तूने
किये हैं वैसा काम कोई भी नहीं कर सकता।
9हे स्वामी, तूने ही सब लोगों को रचा है। मेरी कामना
यह है कि वे सभी लोग आयें और तेरी आराधना करें!
वे सभी तेरे नाम का आदर करें!
10हे परमेश्वर, तू महान है! तू अद्‌भुत कर्म करता
है! बस तू ही परमेश्वर है!
11हे यहोवा, अपनी राहों की शिक्षा मुझको दे,। मैं
जीऊँगा और तेरे सत्य पर चलूँगा। मेरी सहायता कर।
मेरे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण यही है, कि मैं तेरे नाम
की उपासना करुँ।
12हे परमेश्वर, मेरे स्वामी, मैं सम्पूर्ण मन से तेरे गुण
गाता हूँ। मैं तेरे नाम का आदर सदा सर्वदा करुँगा।
13हे परमेश्वर, तू मुझसे कितना अधिक प्रेम करता
है। तूने मुझे मृत्यु के गर्त से बचाया।
14हे परमेश्वर, मुझ पर अभिमानी वार कर रहे हैं।
क्रूर जनों का दल मुझे मार डालने का यत्न कर रहे हैं,
और वे मनुष्य तेरा आदर नहीं करते हैं।
15हे स्वामी, तू दयालु और कृपापूर्ण परमेश्वर है। तू
धैर्यपूर्ण, विश्वासी और प्रेम से भरा हुआ है।
16हे परमेश्वर, दिखा दे कि तू मेरी सुनता है, और
मुझ पर कृपालु बन। मैं तेरा दास हूँ। तू मुझको शक्ति
दे। मैं तेरा सेवक हूँ, मेरी रक्षा कर।
17हे परमेश्वर, कुछ ऐसा कर जिससे यह प्रमाणित हो
कि तू मेरी सहायता करेगा। फिर इससे मेरे शत्रु निराश
हो जायेंगे। क्योंकि यहोवा इससे यह प्रकट होगा तेरी
दया मुझ पर है और तूने मुझे सहारा दिया।

भजन 87

कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1परमेश्वर ने यरुशलेम के पवित्र पहाड़ियों पर अपना
मन्दिर बनाया।
2यहोवा को इस्राएल के किसी भी स्थान से सिय्योन
के द्वार अधिक भाते हैं।
3हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय में लोग अद्‌भुत
बातें बताते है।
4परमेश्वर अपने लोगों की सूची रखता है। परमेश्वर
के कुछ भक्त मिस्र और बाबेल में रहते है। कुछ लोग
पलिश्ती, सोर और कूश तक में रहते हैं।
5परमेश्वर हर एक जन को जो सिय्योन में पैदा हुए
जानता है। इस नगर को परम परमेश्वर ने बनाया है।
6परमेश्वर अपने भक्तों कि सूची रखता है। परमेश्वर
जानता है कौन कहाँ पैदा हुआ।
7परमेश्वर के भक्त उत्सवों को मनाने यरुशलेम
जाते हैं। परमेश्वर के भक्त गाते, नाचते और अति
प्रसन्न रहते हैं। वे कहा करते हैं, "सभी उत्तम वस्तुएं
यरुशलेम से आई।"

भजन 88

कोरह वंशियों के ओर से संगीत निर्देशक के लिये
यातना पूर्ण व्याधि के विषय में एज्रा वंशी
हेमान का एक कलापूर्ण स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर यहोवा, तू मेरा उद्धारकर्ता है। मैं तेरी
रात दिन विनती करता रहा हूँ।
2कृपा करके मेरी प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। मुझ पर
दया करने को मेरी प्रार्थनाएँ सुन।
3मैं अपनी पीड़ाओं से तंग आ चुका हूँ। बस मैं जल्दी
ही मर जाऊँगा।
4लोग मेरे साथ मुर्दे सा व्यवहार करने लगे हैं। उस
व्यक्ति की तरह जो जीवित रहने के लिये अति बलहीन
हैं।
5मेरे लिये मरे व्यक्तियों में ढूँढ़। मैं उस मुर्दे सा हूँ जो
कब्र में लेटा है, और लोग उसके बारे में सबकुछ ही
भूल गए।
6हे यहोवा, तूने मुझे धरती के नीचे कब्र में सुला
दिया। तूने मुझे उस अँधेरी जगह में रख दिया।
7हे परमेश्वर, तुझे मुझ पर क्रोध था, और तूने मुझे
दण्डित किया।
8मुझको मेरे मित्रों ने त्याग दिया है। वे मुझसे बचते
फिरते हैं जैसा मैं कोई ऐसा व्यक्ति हूँ जिसको कोई भी
छूना नहीं चाहता। घर के ही भीतर बंदी बन गया हूँ। मैं
बाहर तो जा ही नहीं सकता।
9मेरे दुःखों के लिये रोते रोते मेरी आँखे सूज गई हैं।
हे यहोवा, मैं तुझसे निरतंर प्रार्थना करता हूँ। तेरी ओर
मैं अपने हाथ फैला रहा हूँ।
10हे यहोवा, क्या तू अद्‌भुत कर्म केवल मृतकों के
लिये करता है? क्या भूत (मृत आत्माएँ) जी उठा करते
हैं और तेरी स्तुति करते हैं? नहीं।
11मरे हुए लोग अपनी कब्रों के बीच तेरे प्रेम की बातें
नहीं कर सकते। मरे हुए व्यक्ति मृत्युलोक के भीतर
तेरी भक्ति की बातें नहीं कर सकते।
12अंधकार में सोये हुए मरे व्यक्ति उन अद्‌भुत बातों
को जिनको तू करता है, नहीं देख सकते हैं। मरे हुए

व्यक्ति भूले बिसरों के जगत में तेरे खरेपन की बातें नहीं कर सकते।

13हे यहोवा, मेरी विनती है, मुझको सहारा दे! हर अलख सुबह मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ।

14हे यहोवा, क्या तूने मुझको त्याग दिया? तूने मुझ पर कान देना क्यों छोड़ दिया?

15मैं दुर्बल और रोगी रहा हूँ। मैंने बचपन से ही तेरे क्रोध को भोगा है। मेरा सहारा कोई भी नहीं रहा।

16हे यहोवा, तू मुझ पर क्रोधित है और तेरा दण्ड मुझको मार रहा है।

17मुझे ऐसा लगता है, जैसे पीड़ा और यातनाएँ सदा मेरे संग रहती हैं। मै अपनी पीड़ाओं और यातनाओं में डूबा जा रहा हूँ।

18हे यहोवा, तूने मेरे मित्रों और प्रिय लोगों को मुझे छोड़ चले जाने को विवश कर दिया। मेरे संग बस केवल अंधकार रहता है।

भजन 89

एज्रा वंश के एतान का एक भक्ति गीत।

1मैं यहोवा, की करुणा के गीत सदा गाऊँगा। मैं उसके भक्ति के गीत सदा अनन्त काल तक गाता रहूँगा।

2हे यहोवा, मुझे सचमुच विश्वास है, तेरा प्रेम अमर है। तेरी भक्ति फैले हुए अम्बर से भी विस्तृत है।

3परमेश्वर ने कहा था, "मैंने अपने चुने हुए राजा के साथ एक वाचा किया है। अपने सेवक दाऊद को मैंने वचन दिया है।

4दाऊद तेरा वंश को मैं सतत् अमर बनाऊँगा। मैं तेरे राज्य को सदा सर्वदा के लिये अटल बनाऊँगा।"

5हे यहोवा, तेरे उन अद्भुत कर्मों की अम्बर स्तुति करते हैं। स्वर्गदूतों की सभा तेरी निष्ठा के गीत गाते हैं।

6स्वर्ग में कोई व्यक्ति यहोवा के विरोध नहीं कर सकता। कोई भी देवता यहोवा के समान नहीं।

7परमेश्वर पवित्र लोगों के साथ एकत्रित होता है। वे स्वर्गदूत उसके चारो ओर रहते हैं। वे उसका भय और आदर करते हैं। वे उसके सम्मान में खड़े होते हैं।

8सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा, जितना तू समर्थ है कोई नहीं है। तेरे भरोसे हम पूरी तरह रह सकते हैं।

9तू गरजते समुद्र पर शासन करता है। तू उसकी कुपित तरंगों को शांत करता है।

10हे परमेश्वर, तूने ही राहाब को हराया था। तूने अपने महाशक्ति से अपने शत्रु बिखरा दिये।

11हे परमेश्वर, जो कुछ भी स्वर्ग और धरती पर जन्मी है तेरी ही है। तूने ही जगत और जगत में की हर वस्तु रची है।

12तूने ही सब कुछ उत्तर दक्षिण रचा है। ताबोर और हर्मोन पर्वत तेरे गुण गाते हैं।

13हे परमेश्वर, तू समर्थ है। तेरी शक्ति महान है। तेरी ही विजय है।

14तेरा राज्य सत्य और न्याय पर आधारित है। प्रेम और भक्ति तेरे सिंहासन के सैनिक हैं।

15हे परमेश्वर, तेरे भक्त सचमुच प्रसन्न है। वे तेरी करुणा के प्रकाश में जीवित रहते हैं।

16तेरा नाम उनको सदा प्रसन्न करता है। वे तेरे खरेपन की प्रशंसा करते हैं।

17तू उनकी अद्भुत शक्ति है। उनको तुमसे बल मिलता है।

18हे यहोवा, तू हमारा रक्षक है। इस्राएल का वह पवित्र हमारा राजा है।

19इसलिए तूने निज सच्चे भक्तों को दर्शन दिये और कहा, "फिर मैंने लोगों के बीच से एक युवक को चुना, और मैंने उस युवक को महत्त्वपूर्ण बना दिया, और मैंने उस युवक को बलशाली बना दिया।

20मैंने निज सेवक दाऊद को पा लिया, और मैंने उसका अभिषेक अपने निज विशेष तेल से किया।

21मैंने निज दाहिने हाथ से दाऊद को सहारा दिया, और मैंने उसे अपने शक्ति से बलवान बनाया।

22शत्रु चुने हुए राजा को नहीं हरा सका। दुष्ट जन उसको पराजित नहीं कर सके।

23मैंने उसके शत्रुओं को समाप्त कर दिया। जो लोग चुने हुए राजा से बैर रखते थे, मैंने उन्हें हरा दिया।

24मैं अपने चुने हुए राजा को सदा प्रेम करुँगा और उसे समर्थन दूँगा। मैं उसे सदा ही शक्तिशाली बनाऊँगा।

25मैं अपने चुने हुए राजा को सागर का अधिकारी नियुक्त करुँगा। नदियों पर उसका ही नियन्त्रण होगा।

26वह मुझसे कहेगा, 'तू मेरा पिता है। तू मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान मेरा उद्धारकर्ता है।'

27मैं उसको अपना पहलौठा पुत्र बनाऊँगा। वह धरती पर महानतम राजा बनेगा।

28मेरा प्रेम चुने हुए राजा की सदा सर्वदा रक्षा करेगा। मेरी वाचा उसके साथ कभी नहीं मिटेगी।

29उसका वंश सदा अमर बना रहेगा। उसका राज्य जब तक स्वर्ग टिका है, तब तक टिका रहेगा।

30यदि उसके वंशजों ने मेरी व्यवस्था का पालन छोड़ दिया है और यदि उन्होंने मेरे आदेशों को मानना छोड़ दिया है, तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।

31यदि मेरे चुने हुए राजा के वंशजों ने मेरे विधान को तोड़ा और यदि मेरे आदेशो की उपेक्षा की,

32तो मैं उन्हें दण्ड दूंगा, जो बहुत बड़ा होगा।

33किन्तु मैं उन लोगों से अपना निज प्रेम दूर नहीं करुँगा। मैं सदा ही उनके प्रति सच्चा रहूँगा।

34जो वाचा मेरी दाऊद के साथ है, मैं उसको नहीं तोड़ूँगा। मैं अपनी वाचा को नहीं बदलूँगा।

35अपनी पवित्रता को साक्षी कर मैंने दाऊद से एक
विशेष प्रतिज्ञा की थी, सो मैं दाऊद से झूठ नहीं बोलूँगा!
36दाऊद का वंश सदा बना रहेगा, जब तक सूर्य
अटल है उसका राज्य भी अटल रहेगा।
37यह सदा चन्द्रमा के समान चलता रहेगा। आकाश
साक्षी है कि यह वाचा सच्ची है। इस प्रमाण पर भरोसा
कर सकता है।"
38किन्तु हे परमेश्वर, तू अपने चुने हुए राजा पर
क्रोधित हो गया। तूने उसे एक दम अकेला छोड़ दिया।
39तूने अपनी वाचा को रद्द कर दिया। तूने राजा का
मुकुट धूल में फेंक दिया।
40तूने राजा के नगर का परकोटा ध्वस्त कर दिया,
तूने उसके सभी दुर्गों को तहस नहस कर दिया।
41राजा के पड़ोसी उस पर हँस रहे हैं, और वे लोग जो
पास से गुजरते हैं, उसकी वस्तुओं को चुरा ले जाते हैं।
42तूने राजा के शत्रुओं को प्रसन्न किया। तूने उसके
शत्रुओं को युद्ध में जिता दिया।
43हे परमेश्वर, तूने उन्हें स्वयं को बचाने का सहारा
दिया, तूने अपने राजा की युद्ध को जीतने में सहायता
नहीं की।
44तूने उसे जीतने नहीं दिया, उसका पवित्र सिंहासन
तूने धरती पर पटक दिया।
45तूने उसके जीवन को कम कर दिया, और उसे
लज्जित किया।
46हे यहोवा, तू हमसे क्या सदा छिपा रहेगा? क्या तेरा
क्रोध सदा आग सा धधकेगा?
47याद कर मेरा जीवन कितना छोटा है। तूने ही हमें
छोटा जीवन जीने और फिर मर जाने को रचा है।
48ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो सदा जीवित रहेगा और
कभी मरेगा नहीं। कब्र से कोई व्यक्ति बच नहीं पाया।
49हे परमेश्वर, वह प्रेम कहाँ है जो तूने अतीत में
दिखाया था? तूने दाऊद को वचन दिया था कि तू
उसके वंश पर सदा अनुग्रह करेगा।
50-51हे स्वामी, कृपा करके याद कर कि लोगों ने
तेरे सेवकों को कैसे अपमानित किया। हे यहोवा, मुझको
सारे अपमान सुनने पड़े हैं। तेरे चुने हुए राजा को
उन्होंने अपमानित किया।
52यहोवा, सदा ही धन्य है! आमीन, आमीन!

चौथा भाग

भजन 90

परमेश्वर के भक्त मूसा की प्रार्थना।

1हे स्वामी, तू अनादि काल से हमारा घर (सुरक्षास्थल)
रहा है।
2हे परमेश्वर, तू पर्वतों से पहले, धरती से पहले था,
कि इस जगत के पहले ही परमेश्वर था। तू सर्वदा ही
परमेश्वर रहेगा।
3तू ही इस जगत में लोगों को लाता है। फिर से तू ही
उनको धूल में बदल देता है।
4तेरे लिये हजार वर्ष बीते हुए कल जैसे है, व पिछली
रात जैसे हैं।
5तू हमारा जीवन सपने जैसा बुहार देता है और सुबह
होते ही हम चले जाते है। हम ऐसे घास जैसे है,
6जो सुबह उगती है और वह शाम को सूख कर
मुरझा जाती है।
7हे परमेश्वर, जब तू कुपित होता है हम नष्ट हो जाते
हैं। हम तेरे प्रकोप से घबरा गये हैं।
8तू हमारे सब पापों को जानता है। हे परमेश्वर, तू
हमारे हर छिपे पाप को देखा करता है।
9तेरा क्रोध हमारे जीवन को खत्म कर सकता है।
हमारे प्राण फुसफुसाहट की तरह विलीन हो जाते है।
10हम सत्तर साल तक जीवित रह सकते हैं। यदि हम
शक्तिशाली हैं तो अस्सी साल। हमारा जीवन परिश्रम
और पीड़ा से भरा है। अचानक हमारा जीवन समाप्त
हो जाता है! हम उड़कर कहीं दूर चले जाते हैं।
11हे परमेश्वर, सचमुच कोई भी व्यक्ति तेरे क्रोध की
पूरी शक्ति नहीं जानता। किन्तु हे परमेश्वर, हमारा भय
और सम्मान तेरे लिये उतना ही महान है, जितना
क्रोध।
12तू हमको सिखा दे कि हम सचमुच यह जाने कि
हमारा जीवन कितना छोटा है। ताकि हम बुद्धिमान बन
सकें।
13हे यहोवा, तू सदा हमारे पास लौट आ। अपने
सेवकों पर दया कर।
14प्रति दिन सुबह हमें अपने प्रेम से परिपूर्ण कर,
आओ हम प्रसन्न हो और अपने जीवन का रस लें।
15तूने हमारे जीवनों में हमें बहुत पीड़ा और यातना दी
है, अब हमें प्रसन्न कर दे।
16तेरे दासों को उन अद्भुत बातों को देखने दे जिनको
तू उनके लिये कर सकता है, और अपनी सन्तानों को
अपनी महिमा दिखा।
17हमारे परमेश्वर, हमारे स्वामी, हम पर कृपालु हो।
जो कुछ हम करते हैं तू उसमें सफलता दे।

भजन 91

1तुम परम परमेश्वर की शरण में छिपने के लिये जा
सकते हो। तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में
संरक्षण पाने को जा सकते हो।
2मैं यहोवा से विनती करता हूँ, "तू मेरा सुरक्षा स्थल
है मेरा गढ़ हे परमेश्वर, मैं तेरे भरोसे हूँ।"
3परमेश्वर तुझको सभी छिपे खतरों से बचाएगा।
परमेश्वर तुझको सब भयानक व्याधियों से बचाएगा।
4तुम परमेश्वर की शरण में संरक्षण पाने को जा
सकते हो। और वह तुम्हारी ऐसे रक्षा करेगा जैसे एक

पक्षी अपने पंख फैला कर अपने बच्चों कि रक्षा करता है। परमेश्वर तुम्हारे लिये ढाल और दीवार सा तुम्हारी रक्षा करेगा।

5रात में तुमको किसी का भय नहीं होगा, और शत्रु के बाणों से तू दिन में भयभीत नहीं होगा।

6तुझको अंधेरे में आने वाले रोगों और उस भयानक रोग से जो दोपहर में आता है भय नहीं होगा।

7तू हजार शत्रुओं को पराजित कर देगा। तेरा स्वयं दाहिना हाथ दस हजार शत्रुओं को हरायेगा। और तेरे शत्रु तुझको छू तक नहीं पायेंगे।

8जरा देख, और तुझको दिखाई देगा कि वे कुटिल व्यक्ति दण्डित हो चुके हैं।

9क्यों? क्योंकि तू यहोवा के भरोसे है। तूने परम परमेश्वर को अपना शरणस्थल बनाया है।

10तेरे साथ कोई भी बुरी बात नहीं घटेगी। कोई भी रोग तेरे घर में नहीं होगा।

11क्योंकि परमेश्वर स्वर्गदूतों को तेरी रक्षा करने का आदेश देगा। तू जहाँ भी जाएगा वे तेरी रक्षा करेंगे।

12परमेश्वर के दूत तुझको अपने हाथों पर ऊपर उठायेंगे। ताकि तेरा पैर चट्टान से न टकराए।

13तुझमें वह शक्ति होगी जिससे तू सिंहों को पछाडेगा और विष नागों को कुचल देगा।

14यहोवा कहता है, "यदि कोई जन मुझ में भरोसा रखता है तो मैं उसकी रक्षा करुँगा। मैं उन भक्तों को जो मेरे नाम की आराधना करते हैं, संरक्षण दूँगा।"

15मेरे भक्त मुझको सहारा पाने को पुकारेंगे और मैं उनकी सुनूँगा। वे जब कष्ट में होंगे मैं उनके साथ रहूँगा। मैं उनका उद्धार करुँगा और उन्हें आदर दूँगा।

16मैं अपने अनुयायियों को एक लम्बी आयु दूँगा और मैं उनकी रक्षा करुँगा।

भजन 92

सब्त के दिन के लिये एक स्तुति गीत।

1यहोवा का गुण गाना उत्तम है। हे परम परमेश्वर, तेरे नाम का गुणगान उत्तम है।

2भोर में तेरे प्रेम के गीत गाना और रात में तेरे भक्ति के गीत गाना उत्तम है।

3हे परमेश्वर, तेरे लिये वीणा, दस तार वाद्य और सारंगी पर संगीत बजाना उत्तम है।

4हे यहोवा, तू सचमुच हमको अपने किये कर्मों से आनन्दित करता है। हम आनन्द से भर कर उन गीतों को गाते हैं, जो कार्य तूने किये हैं।

5हे यहोवा, तूने महान कार्य किये, तेरे विचार हमारे लिये समझ पाने में गंभीर हैं।

6तेरी तुलना में मनुष्य पशुओं जैसे हैं। हम तो मूर्ख जैसे कुछ भी नहीं समझ पाते।

7दुष्ट जन घास की तरह जीते और मरते हैं। वे जो भी कुछ व्यर्थ कार्य करते हैं, उन्हें सदा सर्वदा के लिये मिटाया जायेगा।

8किन्तु हे यहोवा, अनन्त काल तक तेरा आदर रहेगा।

9हे यहोवा, तेरे सभी शत्रु मिटा दिये जायेंगे। वे सभी व्यक्ति जो बुरा काम करते हैं, नष्ट किये जायेंगे।

10किन्तु तू मुझको बलशाली बनाएगा। मैं शक्तिशाली मेढ़े सा बन जाऊँगा जिसे कड़े सींग होते हैं। तूने मुझे विशेष काम के लिए चुना है। तूने मुझ पर अपना तेल ऊँडेला है जो शीतलता देता है।

11मैं अपने चारों ओर शत्रु देख रहा हूँ। वे ऐसे हैं जैसे विशालकाय सांड़ मुझ पर प्रहार करने को तत्पर है। वे जो मेरे विषय में बाते करते हैं उनको मैं सुनता हूँ।

12-13सज्जन लोग तो लबानोन के विशाल देवदार वृक्ष की तरह है जो यहोवा के मन्दिर में रोपे गए हैं। सज्जन लोग बढ़ते हुऐ ताड़ के पेड़ की तरह हैं, जो यहोवा के मन्दिर के आँगन में फलवन्त हो रहे हैं।

14वे जब तक बूढ़े होंगे तब तक वे फल देते रहेंगे। वे हरे भरे स्वस्थ वृक्षों जैसे होंगे।

15वे हर किसी को यह दिखाने के लिये वहाँ है कि यहोवा उत्तम है। वह मेरी चट्टान है! वह कभी बुरा नहीं करता।

भजन 93

1यहोवा राजा है। वह सामर्थ्य और महिमा का वस्त्र पहने है। वह तैयार है, सो संसार स्थिर है। वह नहीं टलेगा।

2हे परमेश्वर, तेरा साम्राज्य अनादि काल से टिका हुआ है। तू सदा जीवित है।

3हे यहोवा, नदियों का गर्जन बहुत तीव्र है। पछाड़ खाती लहरों का शब्द घनघोर है।

4समुद्र की पछाड़ खाती लहरे गरजती हैं, और वे शक्तिशाली हैं। किन्तु ऊपर वाला यहोवा अधिक शक्तिशाली है।

5हे यहोवा, तेरा विधान सदा बना रहेगा। तेरा पवित्र मन्दिर चिरस्थायी होगा।

भजन 94

1हे यहोवा, तू ही एक परमेश्वर है जो लोगों को दण्ड देता है। तू ही एक परमेश्वर है जो आता है और लोगों के लिये दण्ड लाता है।

2तू ही समूची धरती का न्यायकर्ता है। तू अभिमानी को वह दण्ड देता है जो उसे मिलना चाहिए।

3हे यहोवा, दुष्ट जन कब तक मजे मारते रहेंगे? उन बुरे कर्मों की जो उन्होंने किये हैं।

4वे अपराधी कब तक डींग मारते रहेंगे उन बुरे कर्मो को जो उन्होंने किये हैं।

5हे यहोवा, वे लोग तेरे भक्तों को दुःख देते हैं। वे तेरे
भक्तों को सताया करते हैं।
6वे दुष्ट लोग विधवाओं और उन अतिथियों की जो
उनके देश में ठहरे हैं, हत्या करते हैं। वे उन अनाथ
बालकों की जिनके माता पिता नहीं हैं हत्या करते हैं।
7वे कहा करते हैं, यहोवा उनको बुरे काम करते
हुए देख नहीं सकता। और कहते हैं, इस्राएल का परमेश्वर
उन बातों को नहीं समझता है, जो घट रही हैं।
8अरे ओ दुष्ट जनों तुम बुद्धिहीन हो। तुम कब अपना
पाठ सीखोगे? अरे ओ दुर्जनों तुम कितने मूर्ख हो! तुम्हें
समझने का जतन करना चाहिए।
9परमेश्वर ने हमारे कान बनाएँ हैं, और निश्चय ही
उसके भी कान होंगे। सो वह उन बातों को सुन सकता
है, जो घटित हो रहीं हैं। परमेश्वर ने हमारी आँखें
बनाई हैं, सो निश्चय ही उसके भी आँख होंगे। सो वह
उन बातों को देख सकता है, जो घटित हो रही है।
10परमेश्वर उन लोगों को अनुशासित करेगा।
परमेश्वर उन लोगों को उन सभी बातों की शिक्षा देगा
जो उन्हें करनी चाहिए।
11सो जिन बातों को लोग सोच रहे हैं, परमेश्वर
जानता है, और परमेश्वर यह जानता है कि लोग हवा
की झोंके हैं।
12वह मनुष्य जिसको यहोवा सुधारता, अति प्रसन्न
होगा। परमेश्वर उस व्यक्ति को खरी राह सिखायेगा।
13हे परमेश्वर, जब उस जन पर दुःख आयेंगे तब तू
उस जन को शांत होने में सहायक होगा। तू उसको
शांत रहने में सहायता देगा जब तक दुष्ट लोग कब्र में
नहीं रख दिये जायेंगे।
14यहोवा निज भक्तों को कभी नहीं त्यागेगा। वह बिन
सहारे उसे रहने नहीं देगा।
15न्याय लौटेगा और अपने साथ निष्पक्षता लायेगा,
और फिर लोग सच्चे होंगे और खरे बनेंगे।
16मुझको दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करने में किसी व्यक्ति
ने सहारा नहीं दिया। कुकर्मियों के विरुद्ध युद्ध करने में
किसी ने मेरा साथ नहीं दिया।
17यदि यहोवा मेरा सहायक नहीं होता, तो मुझे शब्द
हीन (चुपचुप) होना पड़ता।
18मुझको पता है मैं गिरने को था, किन्तु यहोवा ने
भक्तों को सहारा दिया।
19मैं बहुत चिंतित और व्याकुल था, किन्तु यहोवा
तूने मुझको चैन दिया और मुझको आनन्दित किया।
20हे यहोवा, तू कुटिल न्यायाधीशों की सहायता नहीं
करता। वे बुरे न्यायाधीश नियम का उपयोग लोगों का
जीवन कठिन बनाने में करते हैं।
21वे न्यायाधीश सज्जनों पर प्रहार करते हैं। वे कहते
हैं कि निर्दोष जन अपराधी हैं। और वे उनको मार
डालते हैं।
22किन्तु यहोवा ऊँचे पर्वत पर मेरा सुरक्षास्थल है,
परमेश्वर मेरी चट्टान और मेरा शरणस्थल है।
23परमेश्वर उन न्यायाधीशों को उनके बुरे कामों
का दण्ड देगा। परमेश्वर उनको नष्ट कर देगा। क्योंकि
उन्होंने पाप किया है। हमारा परमेश्वर यहोवा उन दुष्ट
न्यायाधीशों को नष्ट कर देगा।

भजन 95

1आओ हम यहोवा के गुण गाएं! आओ हम उस
चट्टान का जय जयकार करें जो हमारी रक्षा करता
है।
2आओ हम यहोवा के लिये धन्यवाद के गीत गाएं।
आओ हम उसके प्रशंसा के गीत आनन्दपूर्वक गायें।
3क्यों? क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है। वह महान
राजा सभी अन्य "देवताओं" पर शासन करता है।
4गहरी गुफाएँ और ऊँचे पर्वत यहोवा के हैं।
5सागर उसका है, उसने उसे बनाया है। परमेश्वर ने
स्वयं अपने हाथों से सूखी धरती को बनाया है।
6आओ, हम उसको प्रणाम करें और उसकी उपासना
करें। आओ हम परमेश्वर के गुण गाये जिसने हमें
बनाया है।
7वह हमारा परमेश्वर और हम उसके भक्त हैं। यदि
हम उसकी सुने तो हम आज उसकी भेड़ हैं।
8परमेश्वर कहता है, "तुम जैसे मरिबा और मरुस्थल
के मस्सा में कठोर थे वैसे कठोर मत बनो।
9तेरे पूर्वजों ने मुझको परखा था। उन्होंने मुझे परखा,
पर तब उन्होंने देखा कि मैं क्या कर सकता हूँ।
10मैं उन लोगों के साथ चालीस वर्ष तक धीरज
बनाये रखा। मैं यह भी जानता था कि वे सच्चे नहीं हैं।
उन लोगों ने मेरी सीख पर चलने से नकारा।
11सो मैं क्रोधित हुआ और मैंने प्रतिज्ञा की वे मेरे
विशाल कि धरती पर कभी प्रवेश नहीं कर पायेंगे।"

भजन 96

1उन नये कामों के लिये जिन्हें यहोवा ने किया है
नया गीत गाओ। अरे ओ समूचे जगत यहोवा के लिये
गीत गा।
2यहोवा के लिये गाओ! उसके नाम को धन्य कहो!
उसके सुसमाचार को सुनाओ! उन अद्‌भुत बातों का
बखान करो जिन्हें परमेश्वर ने किया है।
3अन्य लोगों को बताओ कि परमेश्वर सचमुच ही
अद्‌भुत है। सब कहीं के लोगों में उन अद्‌भुत बातों का
जिन्हें परमेश्वर करता है बखान करो।
4यहोवा महान है और प्रशंसा योग्य है। वह किसी भी
अधिक "देवताओं" से डरने योग्य है।
5अन्य जातियों के सभी "देवता" केवल मूर्तियाँ हैं,
किन्तु यहोवा ने आकाशों को बनाया।

6उसके सम्मुख सुन्दर महिमा दीप्त है। परमेश्वर के
पवित्र मन्दिर सामर्थ्य और सौन्दर्य हैं।
7अरे! ओ वंशों, और हे जातियों यहोवा के लिये
महिमा और प्रशंसा के गीत गाओ।
8यहोवा के नाम के गुणगान करो। अपनी भेंटे उठाओ
और मन्दिर में जाओ।
9यहोवा का उसके भव्य, मन्दिर में उपासना करो।
अरे ओ पृथ्वी के मनुष्यों, यहोवा की उपासना करो।
10राष्ट्रों को बता दो कि यहोवा राजा है! सो इससे
जगत का नाश नहीं होगा। यहोवा मनुष्यों पर न्याय से
शासन करेगा।
11अरे आकाश, प्रसन्न हो! हे धरती, आनन्द मना! हे
सागर, और उसमें कि सब वस्तुओं आनन्द से ललकारो।
12अरे ओ खेतों और उसमें उगने वाली हर वस्तु
आनन्दित हो जाओ! हे वन के वृक्षो गाओ और आनन्द
मनाओ!
13आनन्दित हो जाओ क्योंकि यहोवा आ रहा है,
यहोवा जगत का शासन (न्याय) करने आ रहा है, वह
खरेपन से न्याय करेगा।

भजन 97

1यहोवा शासन करता है, और धरती प्रसन्न हैं। और
सभी दूर के देश प्रसन्न हैं।
2यहोवा को काले गहरे बादल घेरे हुए हैं। नेकी और
न्याय उसके राज्य को दृढ़ किये हैं।
3यहोवा के सामने आग चला करती है, और वह
उसके बैरियों का नाश करती है।
4उसकी बिजली गगन में कौंधा करती है। लोग उसे
देखते हैं और भयभीत रहते हैं।
5यहोवा के सामने पहाड़ ऐसे पिघल जाते हैं, जैसे मोम
पिघल जाता है। वे धरती के स्वामी के सामने पिघल
जाते हैं।
6अम्बर उसकी नेकी का बखान करते हैं। हर कोई
परमेश्वर की महिमा देख ले।
7लोग उनके मूर्तियों का पूजा करते हैं। वे अपने
"देवताओं" की डींग हाँकते हैं। लेकिन वे लोग लज्जित
होंगे। उनके "देवता" यहोवा के सामने झुकेंगे और
उपासना करेंगे।
8हे सिय्योन, सुन और प्रसन हो! यहूदा के नगरों,
प्रसन्न हो! क्यों? क्योंकि यहोवा विवेकपूर्ण न्याय करता
है।
9हे सर्वोच्च यहोवा, सचमुच तू ही धरती पर शासन
करता है। तू दूसरे "देवताओं" से अधिक उत्तम है।
10जो लोग यहोवा से प्रेम रखते हैं, वे पाप से घृणा
करते हैं। इसलिए परमेश्वर अपने अनुयायियों की रक्षा
करता है। परमेश्वर अपने अनुयायियों को दुष्ट लोगों से
बचाता है।
11ज्योति और आनन्द सज्जनों पर चमकते हैं।
12हे सज्जनों परमेश्वर में प्रसन्न रहो! उसके पवित्र
नाम का आदर करते रहो!

भजन 98

एक स्तुति गीत।

1यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने
नयी और अद्‌भुत बातों को किया है।
2उसकी पवित्र दाहिनी भुजा उसके लिये फिर विजय
लाई।
3यहोवा ने राष्ट्रों के सामने अपनी वह शक्ति प्रकटायी
है जो रक्षा करती है। यहोवा ने उनको अपनी धार्मिकता
दिखाई है।
4परमेश्वर के भक्तों ने परमेश्वर का अनुराग याद
किया, जो उसने इस्राएल के लोगों से दिखाये थे। सुदूर
देशो के लोगों ने हमारे परमेश्वर की महाशक्ति देखी।
5हे धरती के हर व्यक्ति, प्रसन्नता से यहोवा का जय
जयकार कर। स्तुति गीत गाना शीघ्र आरम्भ करो।
6हे वीणाओं, यहोवा की स्तुति करो! हे वीणा, के
मधुर संगीत उसके गुण गाओ!
7बाँसुरी बजाओ और नरसिंगों को फूँको। आनन्द से
यहोवा, हमारे राजा का जय जयकार करो।
8हे सागर और धरती, और उनमें की सब वस्तुओं
ऊँचे स्वर में गाओ।
9हे नदियों, ताली बजाओ! हे पर्वतो, अब सब साथ
मिलकर गाओ!
10तुम यहोवा के सामने गाओ, क्योंकि वह जगत का
शासन (न्याय) करने जा रहा है, वह जगत का न्याय
नेकी और सच्चाई से करेगा।

भजन 99

1यहोवा राजा है। सो हे राष्ट्र, भय से काँप उठो।
परमेश्वर राजा के रुप में करुब दूतों पर विराजता है।
सो हे विश्व भय से काँप उठो।
2यहोवा सिय्योन में महान है। सारे मनुष्यों का वही
महान राजा है।
3सभी मनुष्य तेरे नाम का गुण गाऐं। परमेश्वर का
नाम भय विस्मय है। परमेश्वर पवित्र है।
4शक्तिशाली राजा को न्याय भाता है। परमेश्वर तूने
ही नेकी बनाया है। तू ही याकूब (इस्राएल) के लिये
खरापन और नेकी लाया।
5यहोवा हमारे परमेश्वर का गुणगान करो, और
उसके पवित्र चरण चौकी की आराधना करो।
6मूसा और हारुन परमेश्वर के याजक थे। शमूएल
परमेश्वर का नाम लेकर प्रार्थना करने वाला था।
उन्होंने यहोवा से विनती की और यहोवा ने उनको
उसका उत्तर दिया।

7परमेश्वर ने ऊँचे उठे बादल में से बातें कीं। उन्होंने
उसके आदेशों को माना। परमेश्वर ने उनको व्यवस्था
का विधान दिया।
8हमारे परमेश्वर यहोवा, तूने उनकी प्रार्थनाओं का
उत्तर दिया। तूने उन्हें यह दर्शाया कि तू क्षमा करने
वाला परमेश्वर है, और तू लोगों को उनके बुरे कर्मों
के लिये दण्ड देता है।
9हमारे परमेश्वर यहोवा के गुण गाओ। उसके पवित्र
पर्वत की ओर झुककर उसकी उपासना करो। हमारा
परमेश्वर यहोवा सचमुच पवित्र है।

भजन 100

धन्यवाद का एक गीत।

1हे धरती, तुम यहोवा के लिये गाओ।
2आनन्दित रहो जब तुम यहोवा की सेवा करो। प्रसन्न
गीतों के साथ यहोवा के सामने आओ।
3तुम जान लो कि यह यहोवा ही परमेश्वर है। उसने
हमें रचा है और हम उसके भक्तहैं। हम उसकी भेड़ हैं।
4धन्यवाद के गीत संग लिये यहोवा के नगर में आओ,
गुणगान के गीत संग लिये यहोवा के मन्दिर में आओ।
उसका आदर करो और नाम धन्य करो।
5यहोवा उत्तम है। उसका प्रेम सदा सर्वदा है।
हम उस पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा कर
सकते हैं!

भजन 101

दाऊद का एक गीत।

1मैं प्रेम और खरेपन के गीत गाऊँगा। यहोवा मैं तेरे
लिये गाऊँगा।
2मैं पूरी सावधानी से शुद्ध जीवन जीऊँगा। मैं अपने
घर में शुद्ध जीवन जीऊँगा। हे यहोवा तू मेरे पास कब
आयेगा?
3मैं कोई भी प्रतिमा सामने नहीं रखूँगा। जो लोग इस
प्रकार तेरे विमुख होते हैं, मुझे उनसे घृणा है। मैं कभी
भी ऐसा नहीं करुँगा।
4मैं सच्चा रहूँगा। मैं बुरे काम नहीं करुँगा।
5यदि कोई व्यक्ति छिपे छिपे अपने पड़ोसी के लिये
दुर्वचन कहे, मैं उस व्यक्ति को ऐसा करने से रोकूँगा।
मैं लोगों को अभिमानी बनने नहीं दूँगा और मैं उन्हें
सोचने नहीं दूँगा, कि वे दूसरे लोगों से उत्तम हैं।
6मैं सारे ही देश में उन लोगों पर दृष्टि रखूँगा। जिन
पर भरोसा किया जा सकता और मैं केवल उन्हीं लोगों
को अपने लिये काम करने दूँगा। बस केवल ऐसे लोग
मेरे सेवक हो सकते जो शुद्ध जीवन जीते हैं।
7मैं अपने घर में ऐसे लोगों को रहने नहीं दूँगा जो झूठ
बोलते हैं। मैं झूठों को अपने पास भी फटकने नहीं
दूँगा।
8मैं उन दुष्टों को सदा ही नष्ट करुँगा, जो इस देश में
रहते है। मैं उन दुष्ट लोगों को विवश करुँगा, कि वे
यहोवा के नगर को छोड़े।

भजन 102

*एक पीड़ित व्यक्ति की उस समय की प्रार्थना। जब
वह अपने को टूटा हुआ अनुभव करता है
और अपनी वेदनाओं कष्ट यहोवा से
कह डालना चाहता है।*

1यहोवा मेरी प्रार्थना सुन! तू मेरी सहायता के लिये
मेरी पुकार सुन।
2यहोवा जब मैं विपत्ति में होऊँ मुझ से मुख मत मोड़।
जब मैं सहायता पाने को पुकारुँ तू मेरी सुन ले, मुझे
शीघ्र उत्तर दे।
3मेरा जीवन वैसे बीत रहा जैसा उड़ जाता धुँआ। मेरा
जीवन ऐसे है जैसे धीरे धीरे बुझती आग।
4मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है। मैं वैसा ही हूँ जैसा
सूखी मुरझाती घास। अपनी वेदनाओं में मुझे भूख नहीं
लगती।
5निज दुःख के कारण मेरा भार घट रहा है।
6मैं अकेला हूँ जैसे कोई एकान्त निर्जन में उल्लू
रहता हो। मैं अकेला हूँ जैसै कोई पुराने खण्डर भवनों
में उल्लू रहता हो।
7मैं सो नहीं पाता। मैं उस अकेले पक्षी सा हो गया हूँ,
जो छत पर हो।
8मेरे शत्रु सदा मेरा अपमान करते है, और लोग मेरा
नाम लेकर मेरी हँसी उड़ाते हैं।
9मेरा गहरा दुःख बस मेरा भोजन है। मेरे पेयों में मेरे
आँसू गिर रहे हैं।
10क्यों? क्योंकि यहोवा तू मुझसे रुठ गया है। तूने ही
मुझे ऊपर उठाया था, और तूने ही मुझको फेंक दिया।
11मेरे जीवन का लगभग अंत हो चुका है। वैसे ही
जैसे शाम को लम्बी छायाएँ खो जाती है। मैं वैसा ही हूँ
जैसे सूखी और मुरझाती घास।
12किन्तु हे यहोवा, तू तो सदा ही अमर रहेगा। तेरा
नाम सदा और सर्वदा बना ही रहेगा।
13तेरा उत्थान होगा और तू सिय्योन को चैन देगा।
वह समय आ रहा है, जब तू सिय्योन पर कृपालु होगा।
14तेरे भक्त, उसके (यरुशलेम के) पत्थरों से प्रेम
करते हैं। वह नगर उनको भाता है।
15लोग यहोवा के नाम कि आराधना करेंगे। हे
परमेश्वर, धरती के सभी राजा तेरा आदर करेंगे।
16क्यों? क्योंकि यहोवा फिर से सिय्योन को बनायेगा।
लोग फिर उसके (यरुशलेम के) वैभव को देखेंगे।
17जिन लोगों को उसने जीवित छोड़ा है, परमेश्वर
उनकी प्रार्थनाएँ सुनेगा। परमेश्वर उनकी विनतियों का
उत्तर देगा।

18उन बातों को लिखो ताकि भविष्य के पीढ़ी पढ़े।
और वे लोग आने वाले समय में यहोवा के गुण गायेंगे।
19यहोवा अपने ऊँचे पवित्र स्थान से नीचे झाँकेगा
यहोवा स्वर्ग से नीचे धरती पर झाँकेगा।
20वह बंदी की प्रार्थनाएँ सुनेगा। वह उन व्यक्तियों को
मुक्त करेगा जिनको मृत्युदण्ड दिया गया।
21फिर सिय्योन में लोग यहोवा का बखान करेंगे।
यरुशलेम में लोग यहोवा का गुण गायेंगे।
22ऐसा तब होगा जब यहोवा लोगों को फिर एकत्र
करेगा, ऐसा तब होगा जब राज्य यहोवा की सेवा करेंगे।
23मेरी शक्ति ने मुझको बिसार दिया है। यहोवा ने
मेरा जीवन घटा दिया है।
24इसलिए मैंने कहा, "मेरा प्राण छोटी उम्र में मत
हरा। हे परमेश्वर, तू सदा और सर्वदा अमर रहेगा।
25बहुत समय पहले तूने संसार रचा! तूने स्वयं अपने
हाथों से आकाश रचा।
26यह जगत और आकाश नष्ट हो जायेंगे, किन्तु तू
सदा ही जीवित रहेगा! वे वस्त्रों के समान जीर्ण हो
जायेंगे। वस्त्रों के समान ही तू उन्हें बदलेगा। वे सभी
बदल दिये जायेंगे।
27हे परमेश्वर, किन्तु तू कभी नहीं बदलता; तू सदा
के लिये अमर रहेगा।
28आज हम तेरे दास है, हमारी संतान भविष्य में यही
रहेंगी और उनके संताने यहीं तेरी उपासना करेंगी।"

भजन 103

दाऊद का एक गीत।

1हे मेरी आत्मा, तू यहोवा का गुण गा! हे मेरी
अंग-प्रत्यंग, उसके पवित्र नाम की प्रशंसा कर।
2हे मेरी आत्मा, यहोवा को धन्य कह और मत भूल
की वह सचमुच कृपालु है!
3उन सब पापों के लिये परमेश्वर हमको क्षमा करता
है जिनको हम करते हैं। हमारी सब व्याधि को वह
ठीक करता है।
4परमेश्वर हमारे प्राण को कब्र से बचाता है, और
वह हमे प्रेम और करुणा देता है।
5परमेश्वर हमें भरपूर उत्तम वस्तुएँ देता है। वह हमें
फिर उकाब सा युवा करता है।
6यहोवा खरा है। परमेश्वर उन लोगों को न्याय देता
है, जिन पर दूसरे लोगों ने अत्याचार किये।
7परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था का विधान सिखाया।
परमेश्वर जो शक्तिशाली काम करता है, वह इस्राएलियों
के लिये प्रकट किये।
8यहोवा करुणापूर्ण और दयालु है। परमेश्वर सहनशील
और प्रेम से भरा है।
9यहोवा सदैव ही आलोचना नहीं करता। यहोवा हम
पर सदा को कुपित नहीं रहता है।
10हम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किये, किन्तु
परमेश्वर हमें दण्ड नहीं देता जो हमें मिलना चाहिए।
11अपने भक्तों पर परमेश्वर का प्रेम वैसे महान है
जैसे धरती पर है ऊँचा उठा आकाश।
12परमेश्वर ने हमारे पापों को हमसे इतनी ही दूर
हटाया जितनी पूरब कि दूरी पश्चिम से है।
13अपने भक्तों पर यहोवा वैसे ही दयालु है, जैसे पिता
अपने पुत्रों पर दया करता है।
14परमेश्वर हमारा सब कुछ जानता है। परमेश्वर
जानता है कि हम मिट्टी से बने हैं।
15परमेश्वर जानता है कि हमारा जीवन छोटा सा है।
वह जानता है हमारा जीवन घास जैसा है।
16परमेश्वर जानता है कि हम एक तुच्छ बनफूल से
हैं। वह फूल जल्दी ही उगता है। फिर गर्म हवा चलती है
और वह फूल मुरझाता है। और फिर शीघ्र ही तुम देख
नहीं पाते कि वह फूल कैसे स्थान पर उग रहा था।
17किन्तु यहोवा का प्रेम सदा बना रहता है। परमेश्वर
सदा-सर्वदा निज भक्तों से प्रेम करता है। परमेश्वर की
दया उसके बच्चों से बच्चों तक बनी रहती है।
18परमेश्वर ऐसे उन लोगों पर दयालु है, जो उसकी
वाचा को मानते हैं। परमेश्वर ऐसे उन लोगों पर दयालु
है जो उसके आदेशों का पालन करते हैं।
19परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में संस्थापित है। हर
वस्तु पर उसका ही शासन है।
20हे स्वर्गदूत, यहोवा के गुण गाओ। हे स्वर्गदूतों, तुम
वह शक्तिशाली सैनिक हो जो परमेश्वर के आदेशों पर
चलते हो। परमेश्वर की आज्ञाएँ सुनते और पालते हो।
21हे सब उसके सैनिकों, यहोवा के गुण गाओ, तुम
उसके सेवक हो। तुम वही करते हो जो परमेश्वर
चाहता है।
22हर कहीं हर वस्तु यहोवा ने रची है। परमेश्वर
का शासन हर कहीं वस्तु पर है। सो हे समूची सृष्टि,
यहोवा को तू धन्य कह। ओ मेरे मन यहोवा की प्रशंसा
कर।

भजन 104

1हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह! हे यहोवा, हे मेरे
परमेश्वर, तू है अतिमहान! तूने महिमा और आदर के
वस्त्र पहने हैं।
2तू प्रकाश से मण्डित है जैसे कोई व्यक्ति चोंगा पहने।
तूने व्योम जैसे फैलाये चंदोबा हो।
3हे परमेश्वर, तूने उनके ऊपर अपना घर बनाया,
गहरे बदलों को तू अपना रथ बनाता है, और पवन के
पंखों पर चढ़ कर आकाश पार करता है।
4हे परमेश्वर, तूने निज दूतों को वैसा बनाया जैसा
पवन होता है। तूने निज दासों को अग्नि के समान
बनाया।

5हे परमेश्वर, तूने ही धरती का उसकी नीवों पर
निर्माण किया। इसलिए उसका नाश कभी नहीं होगा।
6तूने जल की चादर से धरती को ढका। जल ने
पहाड़ों को ढक लिया।
7तूने आदेश दिया और जल दूर हट गया। हे परमेश्वर,
तू जल पर गरजा और जल दूर भागा।
8पर्वतों से नीचे घाटियों में जल बहने लगा, और फिर
उन सभी स्थानों पर जल बहा जो उसके लिये तूने रचा
था।
9तूने सागरों की सीमाएँ बाँध दी और जल फिर कभी
धरती को ढकने नहीं जाएगा।
10हे परमेश्वर, तूने ही जल बहाया। सोतों से नदियों से
नीचे पहाड़ी नदियों से पानी बह चला।
11सभी वन्य पशुओं को धाराएँ जल देती हैं, जिनमें
जंगली गधे तक आकर के प्यास बुझाते हैं।

12वन के परिंदे तालाबों के किनारे रहने को आते हैं
और पास खड़े पेड़ों की डालियों में गाते हैं।
13परमेश्वर पहाड़ों के ऊपर नीचे वर्षा भेजता है।
परमेश्वर ने जो कुछ रचा है, धरती को वह सब देता है
जो उसे चाहिए।
14परमेश्वर, पशुओं को खाने के लिये घास उपजाई,
हम श्रम करते हैं और वह हमें पौधे देता है। ये पौधे वह
भोजन है जिसे हम धरती से पाते हैं।
15परमेश्वर, हमें दाखमधु देता है, जो हमको प्रसन्न
करती है। हमारा चर्म नर्म रखने को तू हमें तेल देता है।
हमें पुष्ट करने को वह हमें खाना देता है।
16लबानोन के जो विशाल वृक्ष हैं वह परमेश्वर के
हैं। उन विशाल वृक्षों हेतु उनकी बढ़वार को बहुत जल
रहता है।
17पक्षी उन वृक्षों पर निज घोंसले बनाते। सनोवर के
वृक्षों पर सारस का बसेरा है।
18बनैले बकरों के घर ऊँचे पहाड़ में बने हैं। बिच्छुओं
के छिपने के स्थान बड़ी चट्टान है।
19हे परमेश्वर, तूने हमें चाँद दिया जिससे हम जान
पायें कि छुट्टियाँ कब है। सूरज सदा जानता है कि
उसको कहाँ छिपना है।
20तूने अंधेरा बनाया जिससे रात हो जाये और देखो
रात में बनैले पशु बाहर आ जाते और इधर-उधर
घूमते हैं।
21वे झपटते सिंह जब दहाड़ते हैं तब ऐसा लगता जैसे
वे यहोवा को पुकारते हों, जिसे माँगने से वह उनको
आहार देता।
22और पौ फटने पर जीवजन्तु वापस घरों को लौटते
और आराम करते हैं।
23फिर लोग अपना काम करने को बाहर निकलते
हैं। साँझ तक वे काम में लगे रहते हैं।
24हे यहोवा, तूने अचरज भरे बहुतेरे काम किये।
धरती तेरी वस्तुओं से भरी पड़ी है। तू जो कुछ करता
है, उसमें निज विवेक दर्शाता है।
25यह सागर देखो! यह कितना विशाल है! बहुतेरे
वस्तुएँ सागर में रहती हैं! उनमें कुछ विशाल है और
कुछ छोटी हैं! सागर में जो जीवजन्तु रहते हैं, वे अगणित
असंख्य हैं।
26सागर के ऊपर जलयान तैरते हैं, और सागर के
भीतर महामत्स्य जो सागर के जीव को तूने रचा था,
क्रीड़ा करता है।
27यहोवा, यह सब कुछ तुझपर निर्भर है। हे परमेश्वर,
उन सभी जीवों को खाना तू उचित समय पर देता है।
28हे परमेश्वर, खाना जिसे वे खाते है, वह तू सभी
जीवों को देता है। तू अच्छे खाने से भरे अपने हाथ
खोलता है, और वे तृप्त हो जाने तक खाते हैं।
29फिर जब तू उनसे मुख मोड़ लेता तब वे भयभीत
हो जाते हैं। उनकी आत्मा उनको छोड़ चली जाती है। वे
दुर्बल हो जाते और मर जाते हैं और उनकी देह फिर
धूल हो जाती है।
30हे यहोवा, निज आत्मा का अंश तू उन्हें दे। और
वह फिर से स्वस्थ हो जायेंगे। तू फिर धरती को नयी
सी बना दे।
31यहोवा की महिमा सदा सदा बनी रहे! यहोवा अपनी
सृष्टि से सदा आनन्दित रहे!
32यहोवा कि दृष्टि से यह धरती काँप उठेगी। पर्वतों से
धुआँ उठने लग जायेगा।
33मैं जीवन भर यहोवा के लिये गाऊँगा। मैं जब तक
जीता हूँ यहोवा के गुण गाता रहूँगा।
34मुझको यह आज्ञा है कि जो कुछ मैंने कहा है
वह उसे प्रसन्न करेगा। मैं तो यहोवा के संग में
प्रसन्न हूँ!
35धरती से पाप का लोप हो जाये और दुष्ट लोग सदा
के लिये मिट जाये। ओ मेरे मन यहोवा कि प्रशंसा कर।
यहोवा के गुणगान कर!

भजन 105

1यहोवा का धन्यवाद करो! तुम उसके नाम कि
उपासना करो। लोगों से उनका बखान करो जिन अद्भुत
कामों को वह किया करता है।

2यहोवा के लिये तुम गाओ। तुम उसके प्रशंसा गीत
गाओ। उन सभी आश्चर्यपूर्ण बातों का वर्णन करो
जिनको वह करता है।
3यहोवा के पवित्र नाम पर गर्व करो। ओ सभी लोगों
जो यहोवा के उपासक हो, तुम प्रसन्न हो जाओ।
4सामर्थ्य पाने को तुम यहोवा के पास जाओ। सहारा
पाने को सदा उसके पास जाओ।

5उन अद्‌भुत बातों को स्मरण करो जिनको यहोवा
करता है। उसके आश्चर्य कर्म और उसके विवेकपूर्ण
निर्णयों को याद रखो।
6तुम परमेश्वर के सेवक इब्राहीम के वंशज हो। तुम
याकूब के संतान हो, वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने चुना
था।
7यहोवा ही हमारा परमेश्वर है। सारे संसार पर यहोवा
का शासन है।
8परमेश्वर की वाचा सदा याद रखो। हजार पीढ़ियों
तक उसके आदेश याद रखो।
9इब्राहीम के साथ परमेश्वर ने वाचा बाँधा था!
परमेश्वर ने इसहाक को वचन दिया था।
10परमेश्वर ने याकूब (इस्राएल) को व्यवस्था विधान
दिया। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा किया। यह
सदा सर्वदा बना रहेगा।
11परमेश्वर ने कहा था, "कनान की भूमि मैं तुमको
दूँगा। वह धरती तुम्हारी हो जायेगी।"
12परमेश्वर ने वह वचन दिया था, जब इब्राहीम का
परिवार छोटा था और वे बस यात्री थे जब कनान में रह
रहे थे।
13वे राष्ट्र से राष्ट्र में, एक राज्य से दूसरे राज्य में घूमते
रहे।
14किन्तु परमेश्वर ने उस घराने को दूसरे लोगों से
हानि नहीं पहुँचने दी। परमेश्वर ने राजाओं को सावधान
किया कि वे उनको हानि न पहुँचाये।
15परमेश्वर ने कहा था, "मेरे चुने हुए लोगों को तुम
हानि मत पहुँचाओ। तुम मेरे कोई नबियों का बुरा मत
करो।"
16परमेश्वर ने उस देश में अकाल भेजा। और लोगों
के पास खाने को पर्याप्त खाना नहीं रहा।
17किन्तु परमेश्वर ने एक व्यक्ति को उनके आगे
जाने को भेजा जिसका नाम यूसुफ था। यूसुफ को एक
दास के समान बेचा गया था।
18उन्होंने यूसुफ के पाँव में रस्सी बाँधी। उन्होंने उसकी
गर्दन में एक लोहे का कड़ा डाल दिया।
19यूसुफ को तब तक बंदी बनाये रखा जब तक वे
बातें जो उसने कहीं थी सचमुच घट न गयी। यहोवा ने
सुसन्देश से प्रमाणित कर दिया कि यूसुफ उचित था।
20मिस्र के राजा ने इस तरह आज्ञा दी कि यूसुफ के
बंधनों से मुक्त कर दिया जाये। उस राष्ट्र के नेता ने
कारागार से उसको मुक्त कर दिया।
21यूसुफ को अपने घर बार का अधिकारी बना
दिया।यूसुफ राज्य में हर वस्तु का ध्यान रखने लगा।
22यूसुफ अन्य प्रमुखों को निर्देश दिया करता था।
यूसुफ ने वृद्ध लोगों को शिक्षा दी।
23फिर जब इस्राएल मिस्र में आया। याकूब हाम के
देश में रहने लगा।
24याकूब के वंशज बहुत से हो गये। वे मिस्र के लोगों
से अधिक बलशाली बन गये।
25इसलिए मिस्री लोग याकूब के घराने से घृणा करने
लगे। मिस्र के लोग अपने दासों के विरुद्ध कुचक्र रचने
लगे।
26इसलिए परमेश्वर ने निज दास मूसा और हारुन जो
नबी चुना हुआ था, भेजा।
27परमेश्वर ने हाम के देश में मूसा और हारुन से
अनेक आश्चर्य कर्म कराये।
28परमेश्वर ने गहन अधंकार भेजा था, किन्तु मिस्रियों
ने उनकी नहीं सुनी थी।
29सो फिर परमेश्वर ने पानी को खून में बदल दिया,
और उनकी सब मछलियाँ मर गयी।
30और फिर बाद में मिस्रियों का देश मेढ़कों से भर
गया। यहाँ तक की मेढ़क राजा के शयन कक्ष तक
भरे।
31परमेश्वर ने आज्ञा दी मक्खियाँ और पिस्सू आये।
वे हर कहीं फैल गये।
32परमेश्वर ने वर्षा को ओलों में बदल दिया। मिस्रियों
के देश में हर कहीं आग और बिजली गिरने लगी।
33परमेश्वर ने मिस्रियों की अंगूर की बाड़ी और
अंजीर के पेड़ नष्ट कर दिये। परमेश्वर ने उनके देश
के हर पेड़ को तहस नहस किया।
34परमेश्वर ने आज्ञा दी और टिड्डी दल आ गये।
टिड्डे आ गये और उनकी संख्या अनगिनत थी।
35टिड्डी दल और टिड्डे उस देश के सभी पौधे चट
कर गये। उन्होंने धरती पर जो भी फसलें खड़ी थी,
सभी को खा डाली।
36फिर परमेश्वर ने मिस्रियों के पहलौठी सन्तान को
मार डाला। परमेश्वर ने उनके सबसे बड़े पुत्रों को
मारा।

37फिर परमेश्वर निज भक्तों को मिस्र से निकाल
लाया। वे अपने साथ सोना और चाँदी ले आये। परमेश्वर
का कोई भी भक्त गिरा नहीं, न ही लड़खड़ाया।
38परमेश्वर के लोगों को जाते हुए देख कर मिस्र
आनन्दित था, क्योंकि परमेश्वर के लोगों से वे डरे हुए
थे।
39परमेश्वर ने कम्बल जैसा एक मेघ फैलाया। रात
में निज भक्तों को प्रकाश देने के लिये परमेश्वर ने
अपने आग के स्तम्भ को काम में लाया।
40लोगों ने खाने की माँग की और परमेश्वर उनके
लिये बटेरों को ले आया। परमेश्वर ने आकाश से
उनको भरपूर भोजन दिया।
41परमेश्वर ने चट्टान को फाड़ा और जल उछलता
हुआ बाहर फूट पड़ा। उस मरुभूमि के बीच एक नदी
बहने लगी।

42परमेश्वर ने अपना पवित्र वचन याद किया।
परमेश्वर ने वह वचन याद किया जो उसने अपने दास
इब्राहीम को दिया था।
43परमेश्वर अपने विशेष को मिस्र से बाहर निकाल
लाया। लोग प्रसन्न गीत गाते हुए और खुशियाँ मनाते हुए
बाहर आ गये!
44फिर परमेश्वर ने निज भक्तों को वह देश दिया
जहाँ और लोग रह रहे थे। परमेश्वर के भक्तों ने वे
सभी वस्तु पा ली जिनके लिये औरों ने श्रम किया था।
45परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि लोग उसकी
व्यवस्था माने। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि वे
उसकी शिक्षाओं पर चलें। यहोवा के गुण गाओ!

भजन 106

1यहोवा की प्रशंसा करो! यहोवा का धन्यवाद करो
क्योंकि वह उत्तम है! परमेश्वर का प्रेम सदा ही रहता
है!
2सचमुच यहोवा कितना महान है, इसका बखान
कोई व्यक्ति कर नहीं सकता। परमेश्वर की पूरी प्रशंसा
कोई नहीं कर सकता।
3जो लोग परमेश्वर का आदेश पालते हैं, वे प्रसन्न
रहते हैं। वे व्यक्ति हर समय उत्तम कर्म करते हैं।
4यहोवा, जब तू निज भक्तों पर कृपा करे। मुझको
याद कर। मुझको भी उद्धार करने को याद कर।
5यहोवा, मुझको भी उन भली बातों में हिस्सा बँटाने
दे जिन को तू अपने लोगों के लिये करता है। तू अपने
भक्तों के साथ मुझको भी प्रसन्न होने दे। तुझ पर तेरे
भक्तों के साथ मुझको भी गर्व करने दे।

6हमने वैसे ही पाप किये हैं जैसे हमारे पूर्वजों ने
किये। हम अधर्मी हैं, हमने बुरे काम किये है!
7हे यहोवा, मिस्र में हमारे पूर्वजों ने आश्चर्य कर्मों से
कुछ भी नहीं सीखा। उन्होंने तेरे प्रेम को और तेरी
करुणा को याद नहीं रखा। हमारे पूर्वज वहाँ लाल सागर
के किनारे तेरे विरुद्ध हुए।
8किन्तु परमेश्वर ने निज नाम के हेतु हमारे पूर्वजों
को बचाया था। परमेश्वर ने अपनी महान शक्ति दिखाने
को उनको बचाया था।
9परमेश्वर ने आदेश दिया और लाल सागर सूखा।
परमेश्वर हमारे पूर्वजों को उस गहरे समुद्र से इतनी
सूखी धरती से निकाल ले आया जैसे मरुभूमि हो।
10परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को उनके शत्रुओं से
बचाया! परमेश्वर उनको उनके शत्रुओं से बचा कर
निकाल लाया।
11और फिर उनके शत्रुओं को उसी सागर के बीच
ढाँप कर डुबा दिया। उनका एक भी शत्रु बच निकल
नहीं पाया।

12फिर हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर पर विश्वास किया।
उन्होंने उसके गुण गाये।
13किन्तु हमारे पूर्वज उन बातों को शीघ्र भूले जो
परमेश्वर ने की थी। उन्होंने परमेश्वर की सम्मति पर
कान नहीं दिया।
14हमारे पूर्वजों को जंगल में भूख लगी थी। उस
मरुभूमि में उन्होंने परमेश्वर को परखा।
15किन्तु हमारे पूर्वजों ने जो कुछ भी माँगा परमेश्वर
ने उनको दिया। किन्तु परमेश्वर ने उनको एक महामारी
भी दे दी थी।
16लोग मूसा से डाह रखने लगे और हारुन से वे डाह
रखने लगे जो यहोवा का पवित्र याजक था।
17सो परमेश्वर ने उन ईर्ष्यालु लोगों को दण्ड दिया।
धरती फट गयी और दातान को निगला और फिर
धरती बन्द हो गयी। उसने अविराम के समुह को निगल
लिया।
18फिर आग ने उन लोगों की भीड़ को भस्म किया।
उन दुष्ट लोगों को आग ने जला दिया।
19उन लोगों ने होरब के पहाड़ पर सोने का एक
बछड़ा बनाया और वे उस मूर्ति की पूजा करने लगे!
20उन लोगों ने अपने महिमावान परमेश्वर को एक
बहुत जो घास खाने वाले बछड़े का था उससे बेच दिया!
21हमारे पूर्वज परमेश्वर को भूले जिसने उन्हें बचाया
था। वे परमेश्वर के विषय में भुले जिसने मिस्र में
आश्चर्य कर्म किये थे।
22परमेश्वर ने हाम के देश में आश्चर्य कर्म किये
थे। परमेश्वर ने लाल सागर के पास भय विस्मय भरे
काम किये थे।
23परमेश्वर उन लोगों को नष्ट करना चाहता था,
किन्तु परमेश्वर के चुने दास मूसा ने उनको रोक
दिया। परमेश्वर बहुत कुपित था किन्तु मूसा आड़े आया
कि परमेश्वर उन लोगों का कहीं नाश न करे।
24फिर उन लोगों ने उस अद्‌भुत देश कनान में जाने
से मना कर दिया। लोगों को विश्वास नहीं था कि
परमेश्वर उन लोगों को हराने में सहायता करेगा जो
उस देश में रह रहे थे।
25अपने तम्बूओं में वे शिकायत करते रहे! हमारे
पूर्वजों ने परमेश्वर की बात मानने से नकारा।
26सो परमेश्वर ने शपथ खाई कि वे मरुभूमि में मर
जायेंगे।
27परमेश्वर ने कसम खाई कि उनकी सन्तानों को
अन्य लोगों को हराने देगा। परमेश्वर ने कसम उठाई
कि वह हमारे पूर्वजों को देशों में छितरायेगा।
28फिर परमेश्वर के लोग 'बालपोर' में 'बाल' के
पूजने में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर के लोग वह माँस
खाने लगे जिस को निर्जीव देवताओं पर चढ़ाया गया
था।

29परमेश्वर अपने जनों पर अति कुपित हुआ। और
परमेश्वर ने उनको अति दुर्बल कर दिया।
30किन्तु पीनहास ने विनती की और परमेश्वर ने
उस व्याधि को रोका
31किन्तु परमेश्वर जानता था कि पीनहास ने अति
उत्तम कर्म किया है। और परमेश्वर उसे सदा सदा याद
रखेगा।
32मरीबा में लोग भड़क उठे और उन्होंने मूसा से बुरा
काम कराया।
33उन लोगों ने मूसा को अति व्याकुल किया। सो
मूसा बिना ही विचारे बोल उठा।
34यहोवा ने लोगों से कहा कि कनान में रह रहे अन्य
लोगों को वे नष्ट करें। किन्तु इस्राएली लोगों ने परमेश्वर
की नहीं मानी।
35इस्राएल के लोग अन्य लोगों से हिल मिल गये, और
वे भी वैसे काम करने लगे जैसे अन्य लोग किया करते
थे।
36वे अन्य लोग परमेश्वर के जनों के लिये फँदा बन
गये। परमेश्वर के लोग उन देवों को पूजने लगे जिनकी
वे अन्य लोग पूजा किया करते थे।
37यहाँ तक कि परमेश्वर के जन अपने ही बालकों
की हत्या करने लगे। और वे उन बच्चों को उन दानवों
की प्रतिमा को अर्पित करने लगे।
38परमेश्वर के लोगों ने अबोध भोले जनों की हत्या
की। उन्होंने अपने ही बच्चों को मार डाला और उन
झूठे देवों को उन्हें अर्पित किया।
39इस तरह परमेश्वर के जन उन पापों से अशुद्ध हुए
जो अन्य लोगों के थे। वे लोग अपने परमेश्वर के
अविश्वासपात्र हुए। और वे लोग वैसे काम करने लगे
जैसे अन्य लोग करते थे।
40परमेश्वर अपने उन लोगों पर कुपित हुआ। परमेश्वर
उनसे तंग आ चुका था!
41फिर परमेश्वर ने अपने उन लोगों को अन्य जातियों
को दे दिया। परमेश्वर ने उन पर उनके शत्रुओं का
शासन करा दिया।
42परमेश्वर के जनों के शत्रुओं ने उन पर अधिकार
किया और उनका जीना बहुत कठिन कर दिया।
43परमेश्वर ने निज भक्तों को बहुत बार बचाया,
किन्तु उन्होंने परमेश्वर से मुख मोड़ लिया। और वे
ऐसी बातें करने लगे जिन्हें वे करना चाहते थे। परमेश्वर
के लोगों ने बहुत बहुत बुरी बातें की।
44किन्तु जब कभी परमेश्वर के जनों पर विपद पड़ी
उन्होंने सदा ही सहायता पाने को परमेश्वर को पुकारा।
परमेश्वर ने हर बार उनकी प्रार्थनाएँ सुनी।
45परमेश्वर ने सदा अपनी वाचा को याद रखा।
परमेश्वर ने अपने महा प्रेम से उनको सदा ही सुख चैन
दिया।
46परमेश्वर के भक्तों को उन अन्य लोगों ने बंदी
बना लिया, किन्तु परमेश्वर ने उनके मन में उनके
लिये दया उपजाई।
47यहोवा हमारे परमेश्वर, ने हमारी रक्षा की। परमेश्वर
उन अन्य देशों से हमको एकत्र करके ले आया, ताकि
हम उसके पवित्र नाम का गुण गान कर सके; ताकि
हम उसके प्रशंसा गीत गा सकें।
48इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहो।
परमेश्वर सदा ही जीवित रहता आया है। वह सदा ही
जीवित रहेगा। और सब जन बोले, "आमीन।" यहोवा के
गुण गाओ।

पाँचवाँ भाग
भजन 107

1यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह उत्तम है।
उसका प्रेम अमर है।
2हर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे यहोवा ने बचाया है, इन
राष्ट्रों को कहे। हर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे यहोवा ने
अपने शत्रुओं से छुड़ाया उसके गुण गाओ।
3यहोवा ने निज भक्तों को बहुत से अलग अलग देशों
से इकट्ठा किया है। उसने उन्हें पूर्व और पश्चिम से,
उत्तर और दक्षिण से जुटाया है।
4कुछ लोग निर्जन मरुभूमि में भटकते रहे। वे लोग
ऐसे एक नगर की खोज में थे जहाँ वे रह सकें। किन्तु
उन्हें कोई ऐसा नगर नहीं मिला।
5वे लोग भूखे थे और प्यासे थे और वे दुर्बल होते जा
रहे थे।
6ऐसे उस संकट में सहारा पाने को उन्होंने यहोवा को
पुकारा। यहोवा ने उन सभी लोगों को उनके संकट से
बचा लिया।
7परमेश्वर उन्हें सीधा उन नगरों में ले गया जहाँ वे
बसेंगे।
8परमेश्वर का धन्यवाद करो उसके प्रेम के लिये
और उन अद्‌भुत कर्मों के लिये जिन्हें वह अपने लोगों
के लिये करता है।
9प्यासी आत्मा को परमेश्वर सन्तुष्ट करता है।
परमेश्वर उत्तम वस्तुओं से भूखी आत्मा का पेट भरता
है।
10परमेश्वर के कुछ भक्त बन्दी बने ऐसे बन्दीगृह में,
वे तालों में बंद थे, जिसमें घना अंधकार था।
11क्यों? क्योंकि उन लोगों ने उन बातों के विरुद्ध
लड़ाईयाँ की थी जो परमेश्वर ने कहीं थी, परम परमेश्वर
की सम्मति को उन्होंने सुनने से नकारा था।
12परमेश्वर ने उनके कर्मों के लिये जो उन्होंने किये
थे उन लोगों के जीवन को कठिन बनाया। उन्होंने
ठोकर खाई और वे गिर पड़े, और उन्हें सहारा देने
कोई भी नहीं मिला।

13वे व्यक्ति संकट में थे, इसलिए सहारा पाने को
यहोवा को पुकारा। यहोवा ने उनके संकटों से उनकी
रक्षा की।
14परमेश्वर ने उनको उनके अंधेरे कारागारों से
उबार लिया। परमेश्वर ने वे रस्से काटे जिनसे उनको
बाँधा गया था।
15यहोवा का धन्यवाद करो। उसके प्रेम के लिये
और उन अद्‌भुत कामों के लिये जिन्हें वह लोगों के
लिये करता है उसका धन्यवाद करो।

16परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हराने में हमें सहायता
देता है। उनके काँसें के द्वारों को परमेश्वर तोड़ गिरा
सकता है। परमेश्वर उनके द्वारों पर लगी लोहे कि
आगलें छिन्न-भिन्न कर सकता है।
17कुछ लोग अपने अपराधों और अपने पापों से
जड़मति बने।
18उन लोगों ने खाना छोड़ दिया और वे मरे हुए से हो
गये।
19वे संकट में थे सो उन्होंने सहायता पाने को यहोवा
को पुकारा। यहोवा ने उन्हें उनके संकटों से बचा
लिया।
20परमेश्वर ने आदेश दिया और लोगों को चँगा
किया। इस प्रकार वे व्यक्ति कब्रों से बचाये गये।
21उसके प्रेम के लिये यहोवा का धन्यवाद करो उसके
वे अद्‌भुत कामों के लिये उसका धन्यवाद करो जिन्हें
वह लोगों के लिये करता है।
22यहोवा को धन्यवाद देने बलि अर्पित करो, सभी
कामों को जो उसने किये हैं। यहोवा ने जिनको किया
है, उन बातों को आनन्द के साथ बखानो।
23कुछ लोग अपने काम करने को अपनी नावों से
समुद्र पार कर गये।
24उन लोगों ने ऐसी बातों को देखा है जिनको यहोवा
कर सकता है। उन्होंने उन अद्‌भुत बातों को देखा है
जिन्हें यहोवा ने सागर पर किया है।
25परमेश्वर ने आदेश दिया, फिर एक तीव्र पवन
तभी चलने लगी। बड़ी से बड़ी लहरे आकार लेने लगी।
26लहरे इतनी ऊपर उठीं जितना आकाश हो तूफान
इतना भयानक था कि लोग भयभीत हो गये।
27लोग लड़खड़ा रहे थे, गिरे जा रहे थे जैसे नशे में
धुत्त हो। खिवैया उनकी बुद्धि जैसे व्यर्थ हो गयी हो।
28वे संकट में थे सो उन्होंने सहायता पाने को यहोवा
को पुकारा। तब यहोवा ने उनको संकटों से बचा लिया।
29परमेश्वर ने तूफान को रोका और लहरें शांत हो
गयी।
30खिवैया प्रसन्न थे कि सागर शांत हुआ था।। परमेश्वर
उनको उसी सुरक्षित स्थान पर ले गया जहाँ वे जाना
चाहते थे।
31यहोवा का धन्यवाद करो उसके प्रेम के लिये धन्यवाद
करो उन अद्‌भुत कामों के लिये जिन्हें वह लोगों के
लिये करता है।
32महासभा के बीच उसका गुणगान करो। जब बुजुर्ग
नेता आपस में मिलते हों उसकी प्रशंसा करों।
33परमेश्वर ने नदियाँ मरुभूमि में बदल दीं। परमेश्वर
ने झरनों के प्रवाह को रोका।
34परमेश्वर ने उपजाऊँ भूमि को व्यर्थ की रेही भूमि
में बदल दिया। क्यों? क्योंकि वहाँ बसे दुष्ट लोगों ने बुरे
कर्म किये थे।
35और परमेश्वर ने मरुभूमि को झीलों की धरती में
बदला। उसने सूखी धरती से जल के स्रोत बहा दिये।
36परमेश्वर भूखे जनों को उस अच्छी धरती पर ले
गया और उन लोगों ने अपने रहने को वहाँ एक नगर
बसाया।
37फिर उन लोगों ने अपने खेतों में बीजों को रोप
दिया। उन्होंने बगीचों में अंगूर रोप दिये, और उन्होंने
एक उत्तम फसल पा ली।
38परमेश्वर ने उन लोगों को आशीर्वाद दिया। उनके
परिवार फलने फूलने लगे। उनके पास बहुत सारे पशु
हुए।
39उनके परिवार विनाश और संकट के कारण छोटे
थे और वे दुर्बल थे।
40परमेश्वर ने उनके प्रमुखों को कुचला और
अपमानित किया था। परमेश्वर ने उनको पथहीन
मरुभूमि में भटकाया।
41किन्तु परमेश्वर ने तभी उन दीन लोगों को उनकी
याचना से बचा कर निकाल लिया। अब तो उनके
घराने बड़े हैं, उतने बड़े जितनी भेड़ों के झुण्ड।
42भले लोग इसको देखते हैं और आनन्दित होते हैं,
किन्तु कुटिल इसको देखते हैं और नहीं जानते कि वे
क्या कहें।
43यदि कोई व्यक्ति विवेकी है तो वह इन बातों को
याद रखेगा। यदि कोई व्यक्ति विवेकी है तो वह समझेगा
कि सचमुच परमेश्वर का प्रेम कैसा है।

भजन 108

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, मैं तैयार हूँ। मैं तेरे स्तुति गीतों को गाने
बजाने को तैयार हूँ।
2हे वीणाओं, और हे सारंगियों! आओ हम सूरज को
जगाये।
3हे यहोवा, हम तेरे यश को राष्ट्रों के बीच गायेंगे और
दूसरे लोगों के बीच तेरी स्तुति करेंगे।
4हे परमेश्वर, तेरा प्रेम आकाश से बढ़कर ऊँचा है,
तेरा सच्चा प्रेम ऊँचा, सबसे ऊँचे बादलों से बड़कर है।

5हे परमेश्वर, आकाशों से ऊपर उठ! ताकि सारा
जगत तेरी महिमा का दर्शन करे।
6हे परमेश्वर, निज प्रियों को बचाने ऐसा कर मेरी
विनती का उत्तर दे, और हमको बचाने को निज महाशक्ति
का प्रयोग कर।
7यहोवा अपने मन्दिर से बोला और उसने कहा, "मैं
युद्ध जीतूँगा। मैं अपने भक्तों को शोकेम प्रदान करुँगा।
मैं उनको सुक्कोत की घाटी दूँगा।
8गिलाद और मनश्शे मेरे हो जायेंगे। एप्रैम मेरा शिरबाण
होगा और यहूदा मेरा राजदण्ड बनेगा।
9मोआब मेरा चरण धोने का पात्र बनेगा। एदोम वह
दास होगा जो मेरा पादुका लेकर चलेगा, मैं पलिश्तियों
को पराजित करके विजय का जयघोष करुँगा।"
10मुझे शत्रु के दुर्ग में कौन ले जायेगा? एदोम को
हराने कौन मेरी सहायता करेगा?
11हे परमेश्वर, क्या यह सत्य है कि तूने हमें बिसारा
है? और तू हमारी सेना के साथ नहीं चलेगा!
12हे परमेश्वर, कृपा कर, हमारे शत्रु को हराने में
हमको सहायता दे! मनुष्य तो हमको सहारा नहीं दे
सकते।
13बस केवल परमेश्वर हमको सुदृढ़ कर सकता है।
बस केवल परमेश्वर हमारे शत्रुओं को पराजित कर
सकता है!

भजन 109

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, मेरी विनती कि ओर से अपने कान तू
मत मूँद!
2दुष्ट जन मेरे विषय में झूठी बातें कर रहे हैं। वे दुष्ट
लोग ऐसा कह रहें जो सच नहीं है।
3लोग मेरे विषय में घिनौनी बातें कह रहे हैं। लोग
मुझ पर व्यर्थ ही बात कर रहे हैं।
4मैंने उन्हें प्रेम किया, वे मुझसे बैर करते हैं। इसलिए,
परमेश्वर अब मैं तुझ से प्रार्थना कर रहा हूँ।
5मैंने उन व्यक्तियों के साथ भला किया था। किन्तु वे
मेरे लिये बुरा कर रहे हैं। मैंने उन्हें प्रेम किया, किन्तु वे
मुझसे बैर रखते हैं।
6मेरे उस शत्रु ने जो बुरे काम किये हैं उसको दण्ड
दे। ऐसा कोई व्यक्ति ढूँढ जो प्रमाणित करे कि वह सही
नहीं है।
7न्यायाधीश न्याय करे कि शत्रु ने मेरा बुरा किया है,
और मेरे शत्रु जो भी कहे वह अपराधी है और उसकी
बातें उसके ही लिये बिगड़ जायें।
8मेरे शत्रु को शीघ्र मर जाने दे। मेरे शत्रु का काम
किसी और को लेने दे।
9मेरे शत्रु की सन्तानों को अनाथ कर दे और उसकी
पत्नी को तू विधवा कर दे।
10उनका घर उनसे छुट जायें और वे भिखारी हो
जायें।
11जो कुछ मेरे शत्रु का हो उसका लेनदार छीन कर
ले जायें। उसके मेहनत का फल अनजाने लोग लूट कर
ले जायें।
12मेरी यही कामना है, मेरे शत्रु पर कोई दया न
दिखाये, और उसके सन्तानों पर कोई भी व्यक्ति दया
नहीं दिखलाये।
13पूरी तरह नष्ट कर दे मेरे शत्रु को। आने वाली
पीढ़ी को हर किसी वस्तु से उसका नाम मिटने दे।
14मेरी कामना यह है कि मेरे शत्रु के पिता और
माता के पापों को यहोवा सदा ही याद रखे।
15यहोवा सदा ही उन पापों को याद रखे और मुझे
आशा है कि वह मेरे शत्रु की याद मिटाने को लोगों को
विवश करेगा।
16क्यों? क्योंकि उस दुष्ट ने कोई भी अच्छा कर्म
कभी भी नहीं किया। उसने किसी को कभी भी प्रेम
नहीं किया। उसने दीनों असहायों का जीना कठिन कर
दिया।
17उस दुष्ट लोगों को शाप देना भाता था। सो वही शाप
उस पर लौट कर गिर जाये। उस बुरे व्यक्ति ने कभी
आशीष न दी कि लोगों के लिये कोई भी अच्छी बात
घटे। सो उसके साथ कोई भी भली बात मत होने दे।
18वह शाप को वस्त्रों सा ओढ़ लें। शाप ही उसके
लिये पानी बन जाये वह जिसको पीता रहे। शाप ही
उसके शरीर पर तेल बनें।
19शाप ही उस दुष्ट जन का वस्त्र बने जिनको वह
लपेटे, और शाप ही उसके लिये कमर बन्द बने।
20मुझको यह आशा है कि यहोवा मेरे शत्रु के साथ
इन सभी बातों को करेगा। मुझको यह आशा है कि
यहोवा इन सभी बातों को उनके साथ करेगा जो मेरी
हत्या का जतन कर रहे है।
21यहोवा तू मेरा स्वामी है। सो मेरे संग वैसा बर्ताव
कर जिससे तेरे नाम का यश बढ़े। तेरी करुणा महान
है, सो मेरी रक्षा कर।
22मैं बस एक दीन, असहाय जन हूँ। मैं सचमुच दुःखी
हूँ। मेरा मन टूट चुका है।
23मुझे ऐसा लग रहा जैसे मेरा जीवन साँझ के समय
की लम्बी छाया की भाँति बीत चुका है। मुझे ऐसा लग
रहा जैसे किसी खटमल को किसी ने बाहर किया।
24क्योंकि मैं भूखा हूँ इसलिए मेरे घुटने दुर्बल हो गये
हैं। मेरा भार घटता ही जा रहा है, और मैं सूखता जा
रहा हूँ।
25बुरे लोग मुझको अपमानित करते। वे मुझको घूरते
और अपना सिर मटकाते हैं।।
26यहोवा मेरा परमेश्वर, मुझको सहारा दे! अपना
सच्चा प्रेम दिखा और मुझको बचा ले!

27फिर वे लोग जान जायेंगे कि तूने ही मुझे बचाया है। उनको पता चल जायेगा कि वह तेरी शक्ति थी जिसने मुझको सहारा दिया।

28वे लोग मुझे शाप देते रहे। किन्तु यहोवा मुझको आशीर्वाद दे सकता है। उन्होंने मुझ पर वार किया, सो उनको हरा दे। तब मैं, तेरा दास, प्रसन्न हो जाऊँगा।

29मेरे शत्रुओं को अपमानित कर! वे अपने लाज से ऐसे ढक जायें जैसे परिधान का आवरण ढक लेता।

30मैं यहोवा का धन्यवाद करता हूँ। बहुत लोगों के सामने मैं उसके गुण गाता हूँ।

31क्यों? क्योंकि यहोवा असहाय लोगों का साथ देता है। परमेश्वर उनको दूसरे लोगों से बचाता है, जो प्राणदण्ड दिलवाकर उनके प्राण हरने का यत्न करते हैं।

भजन 110

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1यहोवा ने मेरे स्वामी से कहा, "तू मेरे दाहिने बैठ जा, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पाँव की चौकी नहीं कर दूँ।"

2तेरे राज्य के विकास में यहोवा सहारा देगा। तेरे राज्य का आरम्भ सिय्योन पर होगा, और उसका विकास तब तक होता रहेगा, जब तक तू अपने शत्रुओं पर उनके अपने ही देश में राज करेगा।

3तेरे पराक्रम के दिन तेरी प्रजा के लोग स्वेच्छा वलि बनेंगे। तेरे जवान पवित्रता से सुशोभित भोर के गर्भ से जन्मी ओस के समान तेरे पास है।

4यहोवा ने एक वचन दिया, और यहोवा अपना मन नहीं बदलेगा। "तू नित्य याजक है। किन्तु हारुन के परिवार समूह से नहीं। तेरी याजकी भिन्न है। तू मेल्कीसेदेक के समूह की रीति का याजक है।"

5मेरे स्वामी, तूने उस दिन अपना क्रोध प्रकट किया था। अपने महाशक्ति को काम में लिया था और दूसरे राजाओं को तूने हरा दिया था।

6परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय करेगा। परमेश्वर ने उस महान धरती पर शत्रुओं को हरा दिया। उनकी मृत देहों से धरती फट गयी थी। 7राह के झरने से जल पी के ही राजा अपना सिर उठायेगा और सचमुच बलशाली होगा!

भजन 111

1यहोवा के गुण गाओ! यहोवा का अपने सम्पूर्ण मन से ऐसी उस सभा में धन्यवाद करता हूँ जहाँ सज्जन मिला करते हैं।

2यहोवा ऐसे कर्म करता है, जो आश्चर्यपूर्ण होते हैं। लोग हर उत्तम वस्तु चाहते हैं, वही जो परमेश्वर से आती है।

3परमेश्वर ऐसे कर्म करता है जो सचमुच महिमावान और आश्चर्यपूर्ण होते हैं। उसका खरापन सदा-सदा बना रहता है।

4परमेश्वर अद्‌भुत कर्म करता है ताकि हम याद रखें कि यहोवा करुणापूर्ण और दया से भरा है।

5परमेश्वर निज भक्तों को भोजन देता है। परमेश्वर अपनी वाचा को याद रखता है।

6परमेश्वर के महान कार्य उसके प्रजा को यह दिखाया कि वह उनकी भूमि उन्हें दे रहा है।

7परमेश्वर जो कुछ करता है वह उत्तम और पक्षपात रहित है। उसके सभी आदेश पूरे विश्वास योग्य हैं।

8परमेश्वर के आदेश सदा ही बने रहेंगे। परमेश्वर के उन आदेशों को देने के प्रयोजन सच्चे थे और वे पवित्र थे।

9परमेश्वर निज भक्तों को बचाता है। परमेश्वर ने अपनी वाचा को सदा अटल रहने को रचा है, परमेश्वर का नाम आश्चर्यपूर्ण है और वह पवित्र है।

10विवेक भय और यहोवा के आदर से उपजता है। वे लोग बुद्धिमान होते हैं जो यहोवा का आदर करते हैं। यहोवा की स्तुति सदा सदा गायी जायेगी।

भजन 112

1यहोवा की प्रशंसा करो! ऐसा व्यक्ति जो यहोवा से डरता है। और उसका आदर करता है। वह अति प्रसन्न रहेगा। परमेश्वर के आदेश ऐसे व्यक्ति को भाते हैं।

2धरती पर ऐसे व्यक्ति की संतानें महान होंगी। अच्छे व्यक्तियों कि संतानें सचमुच धन्य होंगी।

3ऐसे व्यक्ति का घराना बहुत धनवान होगा और उसकी धार्मिकता सदा सदा बनी रहेगी।

4सज्जनों के लिये परमेश्वर ऐसा होता है जैसे अंधेरे में चमकता प्रकाश हो। परमेश्वर खरा है, और करुणापूर्ण है और दया से भरा है।

5मनुष्य को अच्छा है कि वह दयालु और उदार हो। मनुष्य को यह उत्तम है कि वह अपने व्यापार में खरा रहे।

6ऐसा व्यक्ति का पतन कभी नहीं होगा। एक अच्छे व्यक्ति को सदा याद किया जायेगा।

7सज्जन को विपद से डरने की जरुरत नहीं। ऐसा व्यक्ति यहोवा के भरोसे है और आश्वस्त रहता है।

8ऐसा व्यक्ति आश्वस्त रहता है। वह भयभीत नहीं होगा। वह अपने शत्रुओं को हरा देगा।

9ऐसा व्यक्ति दीन जनों को मुक्त दान देता है। उसके पुण्य कर्म जिन्हें वह करता रहता है वह सदा सदा बने रहेंगे।

10कुटिल जन उसको देखेंगे और कुपित होंगे। वे क्रोध में अपने दाँतों को पीसेंगे और फिर लुप्त हो जायेंगे। दुष्ट लोग उसको कभी नहीं पायेंगे जिसे वह सब से अधिक पाना चाहते हैं।

भजन 113

1हे यहोवा के सेवकों यहोवा की स्तुति करो! उसका
गुणगान करो! यहोवा के नाम की प्रशंसा करो।
2यहोवा का नाम आज और सदा सदा के लिये और
अधिक धन्य हो। यह मेरी कामना है।
3मेरी यह कामना है, यहोवा के नाम का गुण पूरब से
जहाँ सूरज उगता है, पश्चिम तक उस स्थान में जहाँ
सूरज डूबता है गाया जाये।
4यहोवा सभी राष्ट्रों से महान है। उसकी महिमा आकाशों
तक उठती है।
5हमारे परमेश्वर के समान कोई भी व्यक्ति नहीं है।
परमेश्वर ऊँचे अम्बर में विराजता है।
6ताकि परमेश्वर अम्बर और नीचे धरती को देख
पाये।
7परमेश्वर दीनों को धूल से उठाता है। परमेश्वर
भिखारियों को कूड़े के घूरे से उठाता है।
8परमेश्वर उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाता है। परमेश्वर उन
लोगों को महत्त्वपूर्ण मुखिया बनाता है।
9चाहे कोई निपूती बाँझ स्त्री हो, परमेश्वर उसे बच्चे
दे देगा और उसको प्रसन्न करेगा। यहोवा का गुणगान
करो!

भजन 114

1इस्राएल ने मिस्र छोड़ा। याकूब (इस्राएल) ने उस
अनजान देश को छोड़ा।
2उस समय यहूदा परमेश्वर का विशेष व्यक्ति बना,
इस्राएल उसका राज्य बन गया।
3इसे लाल सागर देखा, वह भाग खड़ा हुआ। यरदन
नदी उलट कर बह चली।
4पर्वत मेढ़े के समान नाच उठे! पहाड़ियाँ मेमनों जैसी
नाची।
5हे लाल सागर, तू क्यों भाग उठा? हे यरदन नदी, तू
क्यों उलटी बही?
6पर्वतों, क्यों तुम मेढ़े के जैसे नाचे? और पहाड़ियों,
तुम क्यों मेमनों जैसी नाची?
7याकूब के परमेश्वर, स्वामी यहोवा के सामने धरती
काँप उठी।
8परमेश्वर ने ही चट्टानों को चीर के जल को बाहर
बहाया। परमेश्वर ने पक्की चट्टान से जल का झरना
बहाया था।

भजन 115

1यहोवा! हमको कोई गौरव ग्रहण नहीं करना चाहिये।
गौरव तो तेरा है। तेरे प्रेम और निष्ठा के कारण गौरव
तेरा है।
2राष्ट्रों को क्यों अचरज हो कि हमारा परमेश्वर
कहाँ है?
3परमेश्वर स्वर्ग में है। जो कुछ वह चाहता है वही
करता रहता है।
4उन जातियों के "देवता" बस केवल पुतले हैं जो सोने
चाँदी के बने है। वह बस केवल पुतले हैं जो किसी
मानव ने बनाये।
5उन पुतलों के मुख है, पर वे बोल नहीं पाते। उनकी
आँखे हैं, पर वे देख नहीं पाते।
6उनके कान हैं, पर वे सुन नहीं सकते। उनके पास
नाक है, किन्तु वे सूँघ नहीं पाते।
7 उनके हाथ हैं, पर वे किसी वस्तु को छू नहीं
सकते, उनके पास पैर हैं, पर वे चल नहीं सकते।
उनके कंठो से स्वर फूटते नहीं हैं।
8जो व्यक्ति इस पुतले को रखते और उनमें विश्वास
रखते हैं बिल्कुल इन पुतलों से बन जायेंगे!
9ओ इस्राएल के लोगों, यहोवा में भरोसा रखो! यहोवा
इस्राएल को सहायता देता है और उसकी रक्षा करता
है।
10ओ हारुन के घराने, यहोवा में भरोसा रखो! हारुन
के घराने को यहोवा सहारा देता है, और उसकी रक्षा
करता है।
11यहोवा की अनुयायिओं, यहोवा में भरोसा रखो!
यहोवा सहारा देता है और अपने अनुयायिओं की रक्षा
करता है।
12यहोवा हमें याद रखता है। यहोवा हमें वरदान देगा,
यहोवा इस्राएल को धन्य करेगा। यहोवा हारुन के घराने
को धन्य करेगा।
13यहोवा अपने अनुयायिओं को, बड़ों को और छोटों
को धन्य करेगा।
14मुझे आशा है यहोवा तुम्हारी बढ़ोतरी करेगा और
मुझे आशा है, वह तुम्हारी संतानों को भी अधिकाधिक
देगा।
15यहोवा तुझको वरदान दिया करता है! यहोवा ने ही
स्वर्ग और धरती बनाये हैं!
16स्वर्ग यहोवा का है। किन्तु धरती उसने मनुष्यों को
दे दिया।
17मरे हुए लोग यहोवा का गुण नहीं गाते। कब्र में पड़े
लोग यहोवा का गुणगान नहीं करते।
18किन्तु हम यहोवा का धन्यवाद करते हैं, और हम
उसका धन्यवाद सदा सदा करेंगे! यहोवा के गुण गाओ!

भजन 116

1जब यहोवा मेरी प्रार्थनाएँ सुनता है यह मुझे भाता है।
2जब मैं सहायता पाने उसको पुकारता हूँ वह मेरी
सुनता है; यह मुझे भाता है।
3मैं लगभग मर चुका था। मेरे चारों तरफ मौत के
रस्से बंध चुके थे। कब्र मुझको निगल रही थी। मैं
भयभीत था और मैं चिंतित था।

4तब मैंने यहोवा के नाम को पुकारा, मैंने कहा,
"यहोवा, मुझको बचा ले।"
5यहोवा खरा है और दयापूर्ण है। परमेश्वर करुणापूर्ण
है।
6यहोवा असहाय लोगों की सुध लेता है। मैं असहाय
था और यहोवा ने मुझे बचाया।
7हे मेरे प्राण, शांत रह। यहोवा तेरी सुधि रखता है।
8हे परमेश्वर, तूने मेरा प्राण मृत्यु से बचाये। मेरे
आँसुओं को तूने रोका और गिरने से मुझको तूने थाम
लिया।
9जीवितों की धरती में मैं यहोवा की सेवा करता
रहूँगा।
10यहाँ तक मैंने विश्वास बनाये रखा जब मैंने कह
दिया था, "मैं बर्बाद हो गया!"
11मैंने यहाँ तक विश्वास सम्भाले रखा जब कि मैं
भयभीत था और मैंने कहा, "सभी लोग झूठे हैं!"
12मैं भला यहोवा को क्या अर्पित कर सकता हूँ? मेरे
पास जो कुछ है वह सब यहोवा का दिया है!
13मैं उसे पेय भेंट दूँगा क्योंकि उसने मुझे बचाया है।
मैं यहोवा के नाम को पुकारुँगा।
14जो कुछ मन्नतें मैंने मागी हैं वे सभी मैं यहोवा को
अर्पित करुँगा, और उसके सभी भक्तों के सामने अब
जाऊँगा।
15किसी एक की भी मृत्यु जो यहोवा का अनुयायी है,
यहोवा के लिये अति महत्त्वपूर्ण है। हे यहोवा, मैं तो तेरा
एक सेवक हूँ!
16मैं तेरा सेवक हूँ। मैं तेरी किसी एक दासी का
सन्तान हूँ। यहोवा, तूने ही मुझको मेरे बंधनों से मुक्त
किया!
17मैं तुझको धन्यवाद बलि अर्पित करुँगा। मैं यहोवा
के नाम को पुकारुँगा।
18मैं यहोवा को जो कुछ भी मन्नतें मानी है वे सभी
अर्पित करुँगा, और उसके सभी भक्तों के सामने अब
जाऊँगा।
19मैं मन्दिर में जाऊँगा जो यरुशलेम में है। यहोवा के
गुण गाओ!

भजन 117

1अरे ओ सब राष्ट्रों यहोवा कि प्रशंसा करो। अरे ओ
सब लोगों यहोवा के गुण गाओ।
2परमेश्वर हमें बहुत प्रेम करता है! परमेश्वर हमारे
प्रति सदा सदा सच्चा रहेगा! यहोवा के गुण गाओ!

भजन 118

1यहोवा का मान करो क्योंकि वह परमेश्वर है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है! 2इस्राएल यह
कहता है, "उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!"
3याजक ऐसा कहते हैं, "उसका सच्चा प्रेम सदा ही
अटल रहता है!"
4तुम लोग जो यहोवा की उपासना करते हो, कहा
करते हो, "उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!"
5मैं संकट में था सो सहारा पाने को मैंने यहोवा को
पुकारा। यहोवा ने मुझको उत्तर दिया और यहोवा ने
मुझको मुक्त किया।
6यहोवा मेरे साथ है सो मैं कभी नहीं डरुँगा। लोग
मुझको हानि पहुँचाने कुछ नहीं कर सकते।
7यहोवा मेरा सहायक है। मैं अपने शत्रुओं को पराजित
देखूँगा।
8मनुष्यों पर भरोसा रखने से यहोवा पर भरोसा रखना
उत्तम है।
9अपने मुखियाओं पर भरोसा रखने से यहोवा पर
भरोसा रखना उत्तम है।
10मुझको अनेक शत्रुओं ने घेर लिया है। यहोवा की
शक्ति से मैंने अपने बैरियों को हरा दिया।
11शत्रुओं ने मुझको फिर घेर लिया। यहोवा की
शक्ति से मैंने उनको हराया।
12शत्रुओं ने मुझे मधु मक्खियों के झुण्ड सा घेरा।
किन्तु, वे एक शीघ्र जलती हुई झाड़ी के समान नष्ट
हुआ। यहोवा की शक्ति से मैंने उनको हराया।
13मेरे शत्रुओं ने मुझ पर प्रहार किया और मुझे
लगभग बर्बाद कर दिया किन्तु यहोवा ने मुझको सहारा
दिया।
14यहोवा मेरी शक्ति और मेरा विजय गीत है। यहोवा
मेरी रक्षा करता है।
15सज्जनों के घर में जो विजय पर्व मन रहा तुम
उसको सुन सकते हो। देखो, यहोवा ने अपनी महाशक्ति
फिर दिखाई है।
16यहोवा की भुजाये विजय में उठी हुई हैं। देखो
यहोवा न अपनी महाशक्ति फिर से दिखाई।
17मैं जीवित रहूँगा, मैं मरुँगा नहीं, और जो कर्म
यहोवा ने किये हैं, मैं उनका बखान करुँगा।
18यहोवा ने मुझे दण्ड दिया किन्तु मरने नहीं दिया।
19हे पुण्य के द्वारों तुम मेरे लिये खुल जाओ ताकि मैं
भीतर आ पाऊँ और यहोवा की आराधना करुँ।
20वे यहोवा के द्वार है। बस केवल सज्जन ही उन द्वारों
से होकर जा सकते हैं।
21हे यहोवा, मेरी विनती का उत्तर देने के लिये तेरा
धन्यवाद। मेरी रक्षा के लिये मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ।
22जिसको राज मिस्त्रियों ने नकार दिया था वही
पत्थर कोने का पत्थर बन गया।
23यहोवा ने इसे घटित किया और हम तो सोचते हैं
यह अद्भुत है!
24यहोवा ने आज के दिन को बनाया है। आओ हम
हर्ष का अनुभव करें और आज आनन्दित हो जाये!

25लोग बोले, "यहोवा के गुण गाओ! यहोवा ने हमारी
रक्षा की है!
26उस सब का स्वागत करो जो यहोवा के नाम में आ
रहे हैं।" याजकों ने उत्तर दिया, "यहोवा के घर में हम
तुम्हारा स्वागत करते हैं!
27यहोवा परमेश्वर है, और वह हमें अपनाता है।
बलि के लिये मेमने को बाँधों और वेदी के कंगूरों पर
मेमने को ले जाओ।"
28हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है, और मैं तेरा
धन्यवाद करता हूँ। मैं तेरे गुण गाता हूँ!
29यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह उत्तम है। उसकी
सत्य करुणा सदा सदा बनी रहती है।

भजन 119

1जो लोग पवित्र जीवन जीते हैं, वे प्रसन्न रहते हैं। ए
से लोग यहोवा का शिक्षाओं पर चलते हैं।
2लोग जो यहोवा की विधान पर चलते हैं, वे प्रसन्न
रहते हैं। अपने समग्र मन से वे यहोवा की मानते हैं।
3वे लोग बुरे काम नहीं करते। वे यहोवा की आज्ञा
मानते हैं।
4हे यहोवा, तूने हमें अपने आदेश दिये, और तूने
कहा कि हम उन आदेशों का पूरी तरह पालन करें।
5हे यहोवा, यदि मैं सदा तेरे नियमों पर चलूँ,
6जब मैं तेरे आदेशों को विचारुँगा तो मुझे कभी भी
लज्जित नहीं होना होगा।
7जब मैं तेरे खरेपन और तेरी नेकी को विचारता हूँ
तब सचमुच तुझको मान दे सकता हूँ।
8हे यहोवा, मैं तेरे आदेशों का पालन करुँगा। सो
कृपा करके मुझको मत बिसरा!
9एक युवा व्यक्ति कैसे अपना जीवन पवित्र रख पाये?
तेरे निर्देशों पर चलने से।
10मैं अपने पूर्ण मन से परमेश्वर कि सेवा का जतन
करता हूँ। परमेश्वर, तेरे आदेशों पर चलने में मेरी
सहायता कर।
11मैं बड़े ध्यान से तेरे आदेशों का मनन किया करता
हूँ। क्यों ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप पर न चलूँ।
12हे यहोवा, तेरा धन्यवाद! तू अपने विधानों की
शिक्षा मुझको दे।
13तेरे सभी निर्णय जो विवेकपूर्ण हैं। मैं उनका बखान
करुँगा।
14तेरे नियमों पर मनन करना, मुझको अन्य किसी
भी वस्तु से अधिक भाता है।
15मैं तेरे नियमों की चर्चा करता हूँ, और मैं तेरे
समान जीवन जीता हूँ।
16मैं तेरे नियमों में आनन्द लेता हूँ। मैं तेरे वचनों को
नहीं भूलूँगा।
17तेरे दास को योग्यता दे और मैं तेरे नियमों पर
चलूँगा।
18हे यहोवा, मेरी आँख खोल दे और मैं तेरी शिक्षाओं
के भीतर देखूँगा। मैं उन अद्‌भुत बातों का अध्ययन
करुँगा जिन्हें तूने किया है।
19मैं इस धरती पर एक अनजाना परदेशी हूँ। हे
यहोवा, अपनी शिक्षाओं को मुझसे मत छिपा।
20मैं हर समय तेरे निर्णयों का पाठ करना चाहता हूँ।
21हे यहोवा, तू अहंकारी जन की आलोचना करता
है। उन अहंकारी लोगों पर बुरी बातें घटित होंगी। वे तेरे
आदेशों पर चलना नकारते हैं।
22मुझे लज्जित मत होने दे, और मुझको असमंजस में
मत डाल। मैंने तेरी वाचा का पालन किया है।
23यहाँ तक कि प्रमुखों ने भी मेरे लिये बुरी बातें की
हैं। किन्तु मैं तो तेरा दास हूँ। मैं तेरे विधान का पाठ
किया करता हूँ।
24तेरी वाचा मेरा सर्वोत्तम मित्र है। यह मुझको अच्छी
सलाह दिया करता है।
25मैं शीघ्र मर जाऊँगा। हे यहोवा, तू आदेश दे और
मुझे जीने दे।
26मैंने तुझे अपने जीवन के बारे में बताया है, तूने
मुझे उत्तर दिया है। अब तू मुझको अपना विधान सिखा।
27हे यहोवा, मेरी सहायता कर ताकि मैं तेरी व्यवस्था
का विधान समझूँ। मुझे उन अद्‌भुत कर्मों का चिंतन
करने दे जिन्हें तूने किया है।
28मैं दुःखी और थका हूँ। मुझको आदेश दे और
अपने वचन के अनुसार मुझको तू फिर सुदृढ़ बना दे।
29हे यहोवा, मुझे कोई झूठ मत जीने दे। अपनी
शिक्षाओं से मुझे राह दिखा दे।
30हे यहोवा, मैंने चुना है कि तेरे प्रति निष्ठावान रहूँ।
मैं तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का सावधानी से पाठ किया
करता हूँ।
31हे यहोवा, तेरी वाचा के संग मेरी लगन लगी है। तू
मुझको निराश मत कर।
32मैं तेरे आदेशों का पालन प्रसन्नता के संग किया
करुँगा। हे यहोवा, तेरे आदेश मुझे अति प्रसन्न करते हैं।
33हे यहोवा, तू मुझे अपनी व्यवस्था सिखा तब मैं
उनका अनुसरण करुँगा।
34मुझको सहारा दे कि मैं उनको समझूँ और मैं तेरी
शिक्षाओं का पालन करुँगा। मैं पूरी तरह उनका पालन
करुँगा।
35हे यहोवा, तू मुझको अपने आदेशों की राह पर ले
चल। मुझे सचमुच तेरे आदेशों से प्रेम है। मेरा भला कर
और मुझे जीने दे।
36मेरी सहायता कर कि मैं तेरे वाचा का मनन करुँ,
बजाय उसके कि यह सोचता रहूँ कि कैसे धनवान
बनूँ।

37हे यहोवा, मुझे अद्‌भुत वस्तुओं पाने को कठिन
जतन मत करने दे।
38हे यहोवा, मैं तेरा दास हूँ। सो उन बातों को कर
जिनका वचन तूने दिये है। तूने उन लोगों को जो पूर्वज
हैं उन बातों को वचन दिया था।
39हे यहोवा, जिस लाज से मुझको भय उसको तू दूर
कर दे। तेरे विवेकपूर्ण निर्णय अच्छे होते हैं।
40देख मुझको तेरे आदेशों से प्रेम है। मेरा भला कर
और मुझे जीने दे।
41हे यहोवा, तू सच्चा निज प्रेम मुझ पर प्रकट कर।
मेरी रक्षा वैसे ही कर जैसे तूने वचन दिया।
42तब मेरे पास एक उत्तर होगा। उनके लिये जो लोग
मेरा अपमान करते हैं। हे यहोवा, मैं सचमुच तेरी उन
बातों के भरोसे हूँ जिनको तू कहता है।

43तू अपनी शिक्षाएँ जो भरोसे योग्य है,मुझसे मत
छीन। हे यहोवा, तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का मुझे भरोसा
है।
44हे यहोवा, मैं तेरी शिक्षाओं का पालन सदा और
सदा के लिये करुँगा।
45सो मैं सुरक्षित जीवन जीऊँगा। क्यों? मैं तेरी व्यवस्था
को पालने का कठिन जतन करता हूँ।
46यहोवा के वाचा की चर्चा मैं राजाओं के साथ
करुँगा और वे मुझे संकट में कभी न डालेंगे।
47हे यहोवा, मुझे तेरी व्यवस्थाओं का मनन भाता है।
तेरी व्यवस्थाओं से मुझको प्रेम है।
48हे यहोवा, मैं तेरी व्यवस्थाओं के गुण गाता हूँ, वे
मुझे प्यारी हैं और मैं उनका पाठ करुँगा।
49हे यहोवा, अपना वचन याद कर जो तूने मुझको
दिया। वही वचन मुझको आज्ञा दिया करता है।
50मैं संकट में पड़ा था, और तूने मुझे चैन दिया। तेरे
वचनो ने फिर से मुझे जीने दिया।
51लोग जो स्वयं को मुझसे उत्तम सोचते हैं, निरन्तर
मेरा अपमान कर रहे हैं। किन्तु हे यहोवा मैंने तेरी
शिक्षाओं पर चलना नहीं छोड़ा।
52मैं सदा तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का ध्यान करता हूँ।
हे यहोवा तेरे विवेकपूर्ण निर्णय से मुझे चैन है।
53जब मैं ऐसे दुष्ट लोगों को देखता हूँ, जिन्होंने तेरी
शिक्षाओं पर चलना छोड़ा है, तो मुझे क्रोध आता है।
54तेरी व्यवस्थायें मुझे ऐसी लगती है, जैसे मेरे घर के
गीत।
55हे यहोवा, रात में मैं तेरे नाम का ध्यान और तेरी
शिक्षाएँ याद रखता हूँ।
56इसलिए यह होता है कि मैं सावधानी से तेरे आदेशों
को पालता हूँ।
57हे यहोवा, मैंने तेरे उपदेशों पर चलना निश्चित
किया यह मेरा कर्तव्य है।

58हे यहोवा, मैं पूरी तरह से तुझ पर निर्भर हूँ, जैसा
वचन तूने दिया मुझ पर दयालु हो।
59मैंने ध्यान से अपनी राह पर मनन किया और मैं
तेरी वाचा पर चलने को लौट आया।
60मैंने बिना देर लगाये तेरे आदेशों पर चलने कि
शीघ्रता की।
61बुरे लोगों के एक दल ने मेरे विषय में बुरी बातें
कहीं। किन्तु यहोवा मैं तेरी शिक्षाओं को भूला नहीं।
62तेरे सत निर्णयों का तुझे धन्यवाद देने मैं आधी रात
के बीच उठ बैठता हूँ।
63जो कोई व्यक्ति तेरी उपासना करता मैं उसका
मित्र हूँ। जो कोई व्यक्ति तेरे आदेशों पर चलता है, मैं
उसका मित्र हूँ।
64हे यहोवा, यह धरती तेरी सत्य करुणा से भरी हुई
है। मुझको तू अपने विधान की शिक्षा दे।
65हे यहोवा, तूने अपने दास पर भलाईयाँ की है। तूने
ठीक वैसा ही किया जैसा तूने करने का वचन दिया था।
66हे यहोवा, मुझे ज्ञान दे कि मैं विवेकपूर्ण निर्णय लूँ,
तेरे आदशों पर मुझको भरोसा है।
67संकट में पड़ने से पहले, मैंने बहुत से बुरे काम
किये थे। किन्तु अब, सावधानी के साथ मैं तेरे आदेशों
पर चलता हूँ।
68हे परमेश्वर, तू खरा है, और तू खरे काम करता
है, तू अपनी विधान की शिक्षा मुझको दे।
69कुछ लोग जो सोचते हैं कि वे मुझ से उत्तम हैं, मेरे
विषय में बुरी बातें बनाते हैं। किन्तु यहोवा मैं अपने पूर्ण
मन के साथ तेरे आदेशों को निरन्तर पालता हूँ।
70वे लोग महा मूर्ख हैं। किन्तु मैं तेरी शिक्षाओं को
पढ़ने में रस लेता हूँ।
71मेरे लिये संकट अच्छा बन गया था। मैंने तेरी
शिक्षाओं को सीख लिया।
72हे यहोवा, तेरी शिक्षाएँ मेरे लिए भली है। तेरी
शिक्षाएँ हजार चाँदी के टुकड़ों और सोने के टुकड़ों से
उत्तम हैं।
73हे यहोवा, तूने मुझे रचा है और निज हाथों से तू
मुझे सहारा देता है। अपने आदेशों को पढ़ने समझने में
तू मेरी सहायता कर।
74हे यहोवा, तेरे भक्त मुझे आदर देते हैं और वे
प्रसन्न हैं क्योंकि मुझे उन सभी बातों का भरोसा है
जिन्हें तू कहता है।
75हे यहोवा, मैं यह जानता हूँ कि तेरे निर्णय खरे
हुआ करते हैं। यह मेरे लिये उचित था कि तू मुझको
दण्ड दे।
76अब, अपने सत्य प्रेम से तू मुझ को चैन दे। तेरी
शिक्षाएँ मुझे सचमुच भाती हैं।
77हे यहोवा, तू मुझे सुख चैन दे और जीवन दे। मैं
तेरी शिक्षाओं में सचमुच आनन्दित हूँ।

78उन लोगों को जो सोचा करते है कि वे मुझसे उत्तम
हैं, उनको निराश कर दे। क्योंकि उन्होंने मेरे विषय में
झूठी बातें कही है। हे यहोवा, मैं तेरे आदेशों का पाठ
किया करुँगा।
79अपने भक्तों को मेरे पास लौट आने दे। ऐसे उन
लोगों को मेरे पास लौट आने दे, जिनको तेरी वाचा का
ज्ञान है।
80हे यहोवा, तू मुझको पूरी तरह अपने आदेशों को
पालने दे ताकि मैं कभी लज्जित न होऊँ।
81मैं तेरी प्रतिज्ञा में मरने को तत्पर हूँ कि तू मुझको
बचायेगा। किन्तु यहोवा, मुझको उसका भरोसा है, जो तू
कहा करता था।
82जिन बातों का तूने वचन दिया था, मैं उनकी बाँट
जोहता रहता हूँ। किन्तु मेरी आँखे थकने लगी है। हे
यहोवा, मुझे कब तू आराम देगा?
83यहाँ तक जब मैं कूड़े के ढेर पर दाखमधु की सूखी
मशक सा हूँ, तब भी मैं तेरे विधान को नहीं भूलूँगा।
84मैं कब तक जीऊँगा? हे यहोवा, कब दण्ड देगा तू
ऐसे उन लोगों को जो मुझ पर अत्याचार किया करते
हैं?
85कुछ अहंकारी लोग ने अपनी झूठों से मुझ पर
प्रहार किया था। यह तेरी शिक्षाओं के विरुद्ध है।
86हे यहोवा, सब लोग तेरी शिक्षाओं के भरोसे रह
सकते हैं। झूठे लोग मुझको सता रहे है। मेरी सहायता
कर!
87उन झूठे लोगों ने मुझको लगभग नष्ट कर दिया है।
किन्तु मैंने तेरे आदेशों को नहीं छोड़ा।
88हे यहोवा, अपनी सत्य करुणा को मुझ पर प्रकट
कर। तू मुझको जीवन दे मैं तो वही करुँगा जो कुछ तू
कहता है।
89हे यहोवा, तेरे वचन सदा अचल रहते हैं। स्वर्ग में
तेरे वचन सदा अटल रहते हैं।
90सदा सर्वदा के लिये तू ही सच्चा है। हे यहोवा, तूने
धरती रची, और यह अब तक टिकी है।
91तेरे आदेश से ही अब तक सभी वस्तु स्थिर हैं,
क्योंकि वे सभी वस्तुएँ तेरे दास हैं।
92यदि तेरी शिक्षाएँ मेरी मित्र जैसी नहीं होती, तो मेरे
संकट मुझे नष्ट कर डालते।
93हे यहोवा, तेरे आदेशों को मैं कभी नहीं भूलूँगा।
क्योंकि वे ही मुझे जीवित रखते हैं।
94हे यहोवा, मैं तो तेरा हूँ, मेरी रक्षा कर। क्यों?
क्योंकि तेरे आदेशों पर चलने का मैं कठिन जतन
करता हूँ।
95दुष्ट जन मेरे विनाश का यतन किया करते हैं,
किन्तु तेरी वाचा ने मुझे बुद्धिमान बनाया।
96सब कुछ की सीमा है, तेरी व्यवस्था की सीमा
नहीं।
97आ हा, यहोवा तेरी शिक्षाओं से मुझे प्रेम है। हर
घड़ी मैं उनका ही बखान किया करता हूँ।
98हे यहोवा, तेरे आदेशों ने मुझे मेरे शत्रुओं से अधिक
बुद्धिमान बनाया। तेरा विधान सदा मेरे साथ रहता है।
99मैं अपने सब शिक्षाओं से अधिक बुद्धिमान हूँ
क्योंकि मैं तेरी वाचा का पाठ किया करता हूँ।
100मैं बुजुर्ग प्रमुखों से भी अधिक समझता हूँ। क्योंकि
मैं तेरे आदेशों को पालता हूँ।
101हे यहोवा, तू मुझे राह में हर कदम बुरे मार्ग से
बचाता है, ताकि जो तू मुझे बताता है वह मैं कर
सकूँ।
102यहोवा, तू मेरा शिक्षक है। सो मैं तेरे विधान पर
चलना नहीं छोड़ूँगा।
103तेरे वचन मेरे मुख के भीतर शहद से भी अधिक
मीठे हैं।
104 तेरी शिक्षाएँ मुझे बुद्धिमान बनाती है। सो मैं झूठी
शिक्षाओं से घृणा करता हूँ।
105हे यहोवा, तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक
और मार्ग के लिये उजियाला है।
106तेरे नियम उत्तम हैं। मैं उन पर चलने का वचन
देता हूँ, और मैं अपने वचन का पालन करुँगा।
107हे यहोवा, बहुत समय तक मैंने दुःख झेले हैं,
कृपया मुझे अपना आदेश दे और तू मुझे फिर से
जीवित रहने दे!
108हे यहोवा, मेरी विनती को तू स्वीकार कर, और
मुझ को अपनी विधान कि शिक्षा दे।
109मेरा जीवन सदा जोखिम से भरा हुआ है। किन्तु
यहोवा मैं तेरे उपदेश भूला नहीं हूँ।
110दुष्ट जन मुझको फँसाने का यत्न करते हैं किन्तु
तेरे आदेशों को मैंने कभी नहीं नकारा है।
111हे यहोवा, मैं सदा तेरी वाचा का पालन करुँगा।
यह मुझे अति प्रसन्न किया करता है।
112मैं सदा तेरे विधान पर चलने का अति कठोर
यत्न करुँगा।
113हे यहोवा, मुझको ऐसे उन लोगों से घृणा है, जो
पूरी तरह से तेरे प्रति सच्चे नहीं हैं। मुझको तो तेरी
शिक्षाएँ भाती हैं।
114मुझको ओट दे और मेरी रक्षा कर। हे यहोवा,
मुझको उस हर बात का सहारा है जिसको तू कहता
है।
115हे यहोवा, दुष्ट मनुष्यों को मेरे पास मत आने दे। मैं
अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करुँगा।
116हे यहोवा, मुझको ऐसे ही सहारा दे जैसे तूने वचन
दिया, और मैं जीवित रहूँगा। मुझको तुझमें विश्वास है,
मुझको निराश मत कर।
117हे यहोवा, मुझको सहारा दे कि मेरा उद्धार हो। मैं
सदा तेरी आदेशों का पाठ किया करुँगा।

118हे यहोवा, तू हर ऐसे व्यक्ति से विमुख हो जाता है,
जो तेरे नियम तोड़ता है। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने झूठ
बोले जब वे तेरे अनुसरण करने को सहमत हुए।
119हे यहोवा, तू इस धरती पर दुष्टों के साथ ऐसा
बर्ताव करता है जैसे वे कूड़ा हो। सो मैं तेरी वाचा से
सदा प्रेम करूँगा।
120हे यहोवा, मैं तुझ से भयभीत हूँ, मैं डरता हूँ, और
तेरे विधान का आदर करता हूँ।
121मैंने वे बातें की हैं जो खरी और भली हैं। हे
यहोवा, तू मुझको ऐसे उन लोगों को मत सौंप जो
मुझको हानि पहुँचाना चाहते हैं।
122मुझे वचन दे कि तू मुझे सहारा देगा। मैं तेरा दास
हूँ। हे यहोवा, उन अहंकारी लोगों को मुझको हानि मत
पहुँचाने दे।
123हे यहोवा, तूने मेरे उद्धार का एक उत्तम वचन
दिया था, किन्तु अपने उद्धार को मेरी आँख तेरी राह
देखते हुए थकी गई।
124तू अपना सच्चा प्रेम मुझ पर प्रकट कर। मैं तेरा
दास हूँ। तू मुझे अपने विधान की शिक्षा दे।
125मैं तेरा दास हूँ। अपनी वाचा को पढ़ने समझने में
तू मेरी सहायता कर।
126हे यहोवा, यही समय है तेरे लिये कि तू कुछ कर
डाले। लोगों ने तेरे विधान को तोड़ा है।
127हे यहोवा, उत्तम सुवर्ण से भी अधिक मुझे तेरे
आदेश भाते हैं।
128तेरे सब आदेशों का बहुत सावधानी से मैं पालन
करता हूँ। मैं झूठे उपदेशों से घृणा करता हूँ।
129हे यहोवा, तेरी वाचा बहुत अद्‌भुत है। इसलिए मैं
उसका अनुसरण करता हूँ।
130कब शुरु करेंगे लोग तेरा वचन समझना? यह
एक ऐसे प्रकाश सा है जो उन्हें जीवन की खरी राह
दिखाया करता है। तेरा वचन मूर्ख तक को बुद्धिमान
बनाता है।
131हे यहोवा, मैं सचमुच तेरे आदेशों का पाठ करना
चाहता हूँ। मैं उस व्यक्ति जैसा हूँ जिस की साँस उखड़ी
हो और जो बड़ी तीव्रता से बाट जोह रहो हो।
132हे परमेश्वर, मेरी ओर दृष्टि कर और मुझ पर
दयालु हो। तू उन जनों के लिये ऐसे उचित काम कर जो
तेरे नाम से प्रेम किया करते हैं?
133तेरे वचन के अनुसार मेरी अगुवाई कर, मुझे
कोई हानी न होने दे।
134हे यहोवा, मुझको उन लोगों से बचा ले जो मुझको
दुःख देते हैं। और मैं तेरे आदेशों का पालन करूँगा।
135हे यहोवा, अपने दास को तू अपना ले और अपना
विधान तू मुझे सिखा।
136रो-रो कर आँसुओं की एक नदी मैं बहा चुका
हूँ। क्योंकि लोग तेरी शिक्षाओं का पालन नहीं करते हैं।
137हे यहोवा, तू भला है और तेरे नियम खरे हैं।
138वे नियम उत्तम है जो तूने हमें वाचा में दिये। हम
सचमुच तेरे विधान के भरोसे रह सकते हैं।
139मेरी तीव्र भावनाएँ मुझे शीघ्र ही नष्ट कर देंगी। मैं
बहुत बेचैन हूँ, क्योंकि मेरे शत्रुओं ने तेरे आदेशों को
भुला दिया।
140हे यहोवा, हमारे पास प्रमाण है, कि हम तेरे वचन
के भरोसे रह सकते हैं, और मुझे इससे प्रेम है।
141मैं एक तुच्छ व्यक्ति हूँ और लोग मेरा आदर नहीं
करते हैं। किन्तु मैं तेरे आदेशों को भूलता नहीं हूँ।
142हे यहोवा, तेरी धार्मिकता अनन्त है। तेरे उपदेशों
के भरोसे में रहा जा सकता है।
143मैं संकट में था, और कठिन समय में था। किन्तु
तेरे आदेश मेरे लिये मित्र से थे।
144तेरी वाचा नित्य ही उत्तम है। अपनी वाचा को
समझने में मेरी सहायता कर ताकि मैं जी सकूँ।
145सम्पूर्ण मन से यहोवा मैं तुझको पुकारता हूँ, मुझको
उत्तर दे। मैं तेरे आदेशों का पालन करता हूँ।
146हे यहोवा, मेरी तुझसे विनती है। मुझको बचा ले!
मैं तेरी वाचा का पालन करूँगा।
147यहोवा, मैं तेरी प्रार्थना करने को भोर के तड़के
उठा करता हूँ। मुझको उन बातों पर भरोसा है, जिनको
तू कहता है।
148देर रात तक तेरे वचनों का मनन करते हुए बैठा
रहता हूँ।
149हे यहोवा, तू अपने पूर्ण प्रेम से मुझ पर कान दे। तू
वैसा ही कर जिसे तू ठीक कहता है, और मेरा जीवन
बनाये रख।
150लोग मेरे विरुद्ध कुचक्र रच रहे हैं। हे यहोवा, ऐसे
ये लोग तेरी शिक्षाओं पर चला नहीं करते हैं।
151हे यहोवा, तू मेरे पास है। तेरे आदेशों पर विश्वास
किया जा सकता है।
152तेरी वाचा से बहुत दिनों पहले ही मैं जान गया था
कि तेरी शिक्षाएँ सदा ही अटल रहेंगी।
153हे यहोवा, मेरी यातना देख और मुझको बचा ले,
मैं तेरे उपदेशों को भूला नहीं हूँ।
154हे यहोवा, मेरे लिये मेरी लड़ाई लड़ और मेरी रक्षा
कर। मुझको वैसे जीने दे जैसे तूने वचन दिया।
155दुष्ट विजयी नहीं होंगे। क्यों? क्योंकि वे तेरे विधान
पर नहीं चलते हैं।
156हे यहोवा, तू बहुत दयालु है। तू वैसा ही कर जिसे
तू अच्छा कहे, और मेरा जीवन बनाये रख।
157मेरे बहुत से शत्रु हैं जो मुझे हानि पहुँचाने का
जतन करते; किन्तु मैंने तेरी वाचा का अनुसरण नहीं
छोड़ा।
158मैं उन कृतघ्नों को देख रहा हूँ। हे यहोवा, तेरे
वचन का पालन वे नहीं करते। मुझको उनसे घृणा है।

159देख, तेरे आदेशों का पालन करने का मैं कठिन
जतन करता हूँ। हे यहोवा, तेरे सम्पूर्ण प्रेम से मेरा
जीवन बनाये रख।
160हे यहोवा, सनातन काल से तेरे सभी वचन विश्वास
योग्य रहे हैं। तेरा उत्तम विधान सदा ही अमर रहेगा।
161शक्तिशाली नेता मुझ पर व्यर्थ ही वार करते हैं,
किन्तु मैं डरता हूँ और तेरे विधान का बस मैं आदर
करता हूँ।
162हे यहोवा, तेरे वचन मुझ को वैसे आनन्दित करते
हैं, जैसा वह व्यक्ति आनन्दित होता है, जिसे अभी-अभी
कोई महाकोश मिल गया हो।
163मुझे झूठ से बैर है! मैं उससे घृणा करता हूँ! हे
यहोवा, मैं तेरी शिक्षाओं से प्रेम करता हूँ।
164मैं दिन में सात बार तेरे उत्तम विधान के कारण
तेरी स्तुति करता हूँ।
165वे व्यक्ति सच्ची शांति पायेंगे, जिन्हें तेरी शिक्षाएँ
भाती हैं। उसको कुछ भी गिरा नहीं पायेगा।
166हे यहोवा, मैं तेरी प्रतीक्षा में हूँ कि तू मेरा उद्धार
करे। मैंने तेरे आदेशों का पालन किया है।
167मैं तेरी वाचा पर चलता रहा हूँ। हे यहोवा, मुझको
तेरे विधान से गहन प्रेम है।
168मैंने तेरी वाचा का और तेरे आदेशों का पालन
किया है। हे यहोवा, तू सब कुछ जानता है जो मैंने किया
है।
169हे यहोवा, सुन तू मेरा प्रसन्न गीत है। मुझे बुद्धिमान
बना जैसा तूने वचन दिया है।
170हे यहोवा, मेरी विनती सुन। तूने जैसा वचन दिया
मेरा उद्धार कर।
171मेरे अन्दर से स्तुति गीत फूट पड़े क्योंकि तूने
मुझको अपना विधान सिखाया है।
172मुझको सहायता दे कि मैं तेरे वचनों के अनुसार
कार्य कर सकूँ, और मुझे तू अपना गीत गाने दे। हे
यहोवा, तेरे सभी नियम उत्तम हैं।
173तू मेरे पास आ, और मुझको सहारा दे क्योंकि
मैंने तेरे आदेशों पर चलना चुन लिया है।
174हे यहोवा, मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरा उद्धार करे,
तेरी शिक्षाएँ मुझे प्रसन्न करती है।
175हे यहोवा, मेरा जीवन बना रहे और मैं तेरी स्तुति
करुँ। अपने विधान से तू मुझे सहारा मिलने दे।
176एक भटकी हुई भेड़ सा, मैं इधर-उधर भटका
हूँ। हे यहोवा, मुझे ढूँढते आ। मैं तेरा दास हूँ, और मैं तेरे
आदेशों को भूला नहीं हूँ।

भजन 120

मन्दिर का आरोहण गीत।

1मैं संकट में पड़ा था, सहारा पाने के लिए मैंने यहोवा
को पुकारा और उसने मुझे बचा लिया।
2हे यहोवा, मुझे तू उन ऐसे लोगों से बचा ले जिन्होंने
मेरे विषय में झूठ बोला है।
3अरे ओ झूठों, क्या तुम यह जानते हो कि परमेश्वर
तुमको कैसे दण्ड देगा?
4तुम्हें दण्ड देने के लिए परमेश्वर योद्धा के नुकीले
तीर और धधकते हुए अंगारे काम में लाएगा।
5झूठों, तुम्हारे निकट रहना ऐसा है, जैसे की मेशेक
के देश में रहना। यह रहना ऐसा है जैसे केवार के खेतों
में रहना है।
6जो शांति के बैरी है ऐसे लोगों के संग मैं बहुत दिन
रहा हूँ।
7मैंने यह कहा था मुझे शांति चाहिए क्यों वे लोग युद्ध
को चाहते हैं।

भजन 121

मन्दिर का आरोहण गीत।

1मैं ऊपर पर्वतों को देखता हूँ। किन्तु सचमुच मेरी
सहायता कहाँ से आएगी?
2मुझको तो सहारा यहोवा से मिलेगा जो स्वर्ग और
धरती का बनाने वाला है।
3परमेश्वर तुझको गिरने नहीं देगा। तेरा बचानेवाला
कभी भी नहीं सोएगा।
4इस्राएल का रक्षक कभी भी ऊँघता नहीं है। यहोवा
कभी सोता नहीं है।
5यहोवा तेरा रक्षक है। यहोवा अपनी महाशक्ति से
तुझको बचाता है।
6दिन के समय सूरज तुझे हानि नहीं पहुँचा सकता।
रात में चाँद तेरी हानि नहीं कर सकता।
7यहोवा तुझे हर संकट से बचाएगा। यहोवा तेरी आत्मा
की रक्षा करेगा।
8आते और जाते हुए यहोवा तेरी रक्षा करेगा। यहोवा
तेरी सदा सर्वदा रक्षा करेगा!

भजन 122

दाऊद का एक आरोहणगीत।

1जब लोगों ने मुझसे कहा, "आओ, यहोवा के मन्दिर
में चलें तब मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"
2यहाँ हम यरुशलेम के द्वारों पर खड़े हैं।
3यह नया यरुशलेम है। जिसको एक संगठित नगर
के रुप में बनाया गया।
4ये परिवार समूह थे जो परमेश्वर के वहाँ पर जाते
हैं। इस्राएल के लोग वहाँ पर यहोवा का गुणगान करने
जाते हैं। वे वह परिवार समूह थे जो यहोवा से सम्बन्धित
थे।
5यही वह स्थान है जहाँ दाऊद के घराने के राजाओं
ने अपने सिंहासन स्थापित किये। उन्होंने अपना सिंहासन
लोगों का न्याय करने के लिये स्थापित किया।

6तुम यरुशलेम में शांति हेतू विनती करो। "ऐसे लोग
जो तुझसे प्रेम रखते हैं, वहाँ शांति पावें यह मेरी कामना
है। तुम्हारे परकोटों के भीतर शांति का वास है। यह
मेरी कामना है। तुम्हारे विशाल भवनों में सुरक्षा बनी
रहे यह मेरी कामना है।"
7मैं प्रार्थना करता हूँ अपने पड़ोसियों के और अन्य
इस्राएलवासियों के लिए वहाँ शांति का वास हो।
8हे यहोवा, हमारे परमेश्वर के मन्दिर के भले हेतू
मैं प्रार्थना करता हूँ, कि इस नगर में भली बाते घटित
हों।

भजन 123

आरोहण गीत।

1हे परमेश्वर, मैं ऊपर आँख उठाकर तेरी प्रार्थना
करता हूँ। तू स्वर्ग में राजा के रूप में विराजता है।
2दास अपने स्वामियों के ऊपर उन वस्तुओं के लिए
निर्भर रहा करते हैं। जिसकी उनको आवश्यकता है।
दासियाँ अपनी स्वामिनियों के ऊपर निर्भर रहा करती
हैं।
3इसी तरह हमको यहोवा का, हमारे परमेश्वर का
भरोसा है। ताकि वह हम पर दया दिखाए, हम परमेश्वर
की बाट जोहते हैं।
4हे यहोवा, हम पर कृपालु है। दयालु हो क्योंकि बहुत
दिनों से हमारा अपमान होता रहा है।
5अहंकारी लोग बहुत दिनों से हमें अपमानित कर
चुके हैं। ऐसे लोग सोचा करते हैं कि वे दूसरे लोगों से
उत्तम हैं।

भजन 124

दाऊद का एक मन्दिर का आरोहण गीत।

1यदि बीते दिनों में यहोवा हमारे साथ नहीं होता तो
हमारे साथ क्या घट गया होता? इस्राएल तू मुझको उत्तर
दे?
2यदि बीते दिनों में यहोवा हमारे साथ नहीं होता तो
हमारे साथ क्या घट गया होता? जब हम पर लोगों ने
हमला किया था तब हमारे साथ क्या बीतती।
3जब कभी हमारे शत्रु ने हम पर क्रोध किया, तब वे
हमें जीवित ही निगल लिये होते।
4तब हमारे शत्रुओं की सेनाएँ बाढ़ सी हमको बहाती
हुई उस नदी के जैसी हो जाती जो हमें डूबा रहीं हो।
5तब वे अभिमानी लोग उस जल जैसे हो जाते जो
हमको डुबाता हुआ हमारे मुँह तक चढ़ रहा हो।
6यहोवा के गुण गाओ। यहोवा ने हमारे शत्रुओं को
हमको पकड़ने नहीं दिया और न ही मारने दिया।
7हम जाल में फँसे उस पक्षी के जैसे थे जो फिर बच
निकला हो। जाल छिन्न भिन्न हुआ और हम बच
निकले।
8हमारी सहायता यहोवा से आयी थी। यहोवा ने स्वर्ग
और धरती को बनाय है।

भजन 125

आरोहण गीत।

1जो लोग यहोवा के भरोसे रहते हैं, वे सिय्योन पर्वत
के जैसे होंगे। उनको कभी कोई भी डिगा नहीं पाएगा।
वे सदा ही अटल रहेंगे।
2यहोवा ने निज भक्तों को वैसे ही अपनी ओट में
लिया है, जैसे यरुशलेम चारों ओर पहाड़ों से घिरा है।
यहोवा सदा और सर्वदा निज भक्तों की रक्षा करेगा।
3बुरे लोग सदा धरती पर भलों के ऊपर शासन नहीं
करेंगे, यदि बुरे लोग ऐसा करने लग जायें तो संभव है
सज्जन भी बुरे काम करने लगें।
4हे यहोवा, तू भले लोगों के संग, जिनके मन पवित्र हैं
तू भला हो।
5हे यहोवा, दुर्जनों को दण्ड दे, जिन लोगों ने तेरा
अनुसरण छोड़ा तू उनको दण्ड दे। इस्राएल में शांति हो।

भजन 126

आरोहण गीत।

1जब यहोवा हमें पुन: मुक्त करेगा तो यह ऐसा होगा
जैसे कोई सपना हो!
2हम हँस रहे होंगे और खुशी के गीत गा रहे होंगे!
तब अन्य राष्ट्र के लोग कहेंगे, "यहोवा ने इनके लिए
महान कार्य किये है।"
3दूसरे देशों के लोग ये बातें करेंगे इस्राएल के लोगों
के लिए यहोवा ने एक अद्भुत काम किया है। अगर
यहोवा ने हमारे लिए वह अद्भुत काम किया तो हम
प्रसन्न होंगे।
4हे यहोवा, हमें तू स्वतंत्र कर दे, अब तू हमें मरुस्थल
के जल से भरे हुए जलधारा जैसा बना दे।
5जब हमने बीज बोये, हम रो रहे थे, किन्तु कटनी
के समय हम खुशी के गीत गायेंगे!
6हम बीज लेकर रोते हुए खेतों में गये। सो आनन्द
मनाने आओ क्योंकि हम उपज के लिए हुए आ रहे हैं।

भजन 127

सुलैमान का मन्दिर का आरोहण गीत।

1यदि घर का निर्माता स्वयं यहोवा नहीं है, तो घर
को बनाने वाला व्यर्थ समय खोता है। यदि नगर का
रखवाला स्वयं यहोवा नहीं है, तो रखवाले व्यर्थ समय
खोते हैं।
2यदि सुबह उठ कर तुम देर रात गए तक काम
करो। इसलिए कि तुम्हें बस खाने के लिए कमाना है,
तो तुम व्यर्थ समय खोते हो। परमेश्वर अपने भक्तों का
उनके सोते तक में ध्यान रखता है।

3बच्चे यहोवा का उपहार है, वे माता के शरीर से
मिलने वाले फल हैं।
4जवान के पुत्र ऐसे होते हैं जैसे योद्धा के तरकस के
बाण।
5जो व्यक्ति बाण रुपी पुत्रों से तरकस को भरता है वह
अति प्रसन्न होगा।
6वह मनुष्य कभी हारेगा नहीं। उसके पुत्र उसकी
शत्रुओं से सार्वजनिक स्थानों पर उसकी रक्षा करेंगे।

भजन 128

आरोहण गीत।

1यहोवा के सभी भक्त आनन्दित रहते हैं। वे लोग
परमेश्वर जैसा चाहता, वैसा गाते हैं।
2तूने जिनके लिये काम किया है, उन वस्तुओं का तू
आनन्द लेगा। उन ऐसी वस्तुओं को कोई भी व्यक्ति
तुझसे नहीं छिनेगा। तू प्रसन्न रहेगा और तेरे साथ भली
बातें घटेंगी।
3घर पर तेरी घरवाली अंगूर की बेल सी फलवती
होगी। मेज के चारों तरफ तेरी संतानें ऐसी होंगी, जैसे
जैतून के वे पेड़ जिन्हें तूने रोपा है।
4इस प्रकार यहोवा अपने अनुयायिओं को सचमुच
आशीष देगा।
5यहोवा सिय्योन से तुझ को आशीर्वाद दे यह मेरी
कामना है। जीवन भर यरुशलेम में तुझको वरदानों का
आनन्द मिले।
6तू अपने नाती पोतों को देखने के लिये जीता रहे यह
मेरी कामना है। इस्राएल में शांति रहे।

भजन 129

मन्दिर का आरोहण गीत।

1पूरे जीवन भर मेरे अनेक शत्रु रहे हैं। इस्राएल हमें
उन शत्रुओं के बारे में बता।
2सारे जीवन भर मेरे अनेक शत्रु रहे हैं। किन्तु वे
कभी नहीं जीते।
3उन्होंने मुझे तब तक पीटा जब तक मेरी पीठ पर
गहरे घाव नहीं बने। मेरे बड़े-बड़े और गहरे घाव हो
गए थे।
4किन्तु भले यहोवा ने रस्से काट दिये और मुझको
उन दुष्टों से मुक्त किया।
5जो सिय्योन से बैर रखते थे, वे लोग पराजित हुए।
उन्होंने लड़ना छोड़ दिया और कहीं भाग गये।
6वे लोग ऐसे थे, जैसे किसी घर की छत पर की घास
जो उगने से पहले ही मुरझा जाती है।
7उस घास से कोई श्रमिक अपनी मुट्ठी तक नहीं
भर पाता और वह पूली भर अनाज भी पर्याप्त नहीं
होती।
8ऐसे उन दुष्टों के पास से जो लोग गुजरते हैं। वे नहीं
कहेंगे, "यहोवा तेरा भला करे।" लोग उनका स्वागत
नहीं करेंगे और हम भी नहीं कहेंगे, "तुम्हें यहोवा के
नाम पर आशीष देते हैं।"

भजन 130

आरोहण गीत।

1हे यहोवा, मैं गहन कष्ट में हूँ सो सहारा पाने को मैं
तुम्हें पुकारता हूँ।
2मेरे स्वामी, तू मेरी सुन ले। मेरी सहायता की पुकार
पर कान दे।
3हे यहोवा, यदि तू लोगों को उनके सभी पापों का
सचमुच दण्ड दे तो फिर कोई भी बच नहीं पायेगा।
4हे यहोवा, निज भक्तों को क्षमा कर। फिर तेरी
अराधना करने को वहाँ लोग होंगे।
5मैं यहोवा की बाट जोह रहा हूँ कि वह मुझको
सहायता दे। मेरी आत्मा उसकी प्रतीक्षा में है। यहोवा जो
कहता है उस पर मेरा भरोसा है।
6मैं अपने स्वामी की बाट जोहता हूँ। मैं उस रक्षक
सा हूँ जो उषा के आने की प्रतीक्षा में लगा रहता है।
7इस्राएल, यहोवा पर विश्वास कर। केवल यहोवा के
साथ सच्चा प्रेम मिलता है। यहोवा हमारी बार-बार रक्षा
किया करता है। यहोवा इस्राएल को उनके सारे पापों
के लिए क्षमा करेगा।

भजन 131

आरोहण गीत।

1हे यहोवा, मैं अभिमानी नहीं हूँ। मैं महत्वपूर्ण होने
का जतन नहीं करता हूँ। मैं वो काम करने का जतन
नहीं करता हूँ। जो मेरे लिये बहुत कठिन हैं। ऐसी उन
बातों की मुझे चिंता नहीं है।
2मैं निश्चल हूँ, मेरी आत्मा शांत है।
3मेरी आत्मा शांत और अचल है, जैसे कोई शिशु
अपनी माता की गोद में तृप्त होता है।
4इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रखो। उसका भरोसा
रखो, अब और सदा सदा ही उसका भरोसा रखो!

भजन 132

मन्दिर का आरोहण गीत।

1हे यहोवा, जैसे दाऊद ने यातनाएँ भोगी थी, उसको
याद कर।
2किन्तु दाऊद ने यहोवा की एक मन्नत मानी थी।
दाऊद ने इस्राएल के पराक्रमी परमेश्वर की एक मन्नत
मानी थी।
3-4 दाऊद ने कहा था: "मैं अपने घर में तब तक न
जाऊँगा, अपने बिस्तर पर न ही लेटूँगा, न ही सोऊँगा।
अपनी आँखों को मैं विश्राम तक न दूँगा।

5इसमें से मैं कोई बात भी नहीं करूँगा जब तक मैं
यहोवा के लिए एक भवन न प्राप्त कर लूँ। मैं इस्राएल
के शक्तिशाली परमेश्वर के लिए एक मन्दिर पा कर
रहूँगा!"
6एप्राता में हमने इसके विषय में सुना, हमें किरीयथ
योरीम के वन में वाचा की सन्दूक मिली थी।
7आओ, पवित्र तम्बू में चलो। आओ, हम उस चौकी
पर आराधना करें, जहाँ पर परमेश्वर अपने चरण
रखता है।
8हे यहोवा, तू अपनी विश्राम की जगह से उठ बैठ, तू
और तेरी सामर्थ्यवान सन्दूक उठ बैठ।
9हे यहोवा, तेरे याजक धार्मिकता धारण किये रहते
हैं। तेरे जन बहुत प्रसन्न रहते हैं।
10तू अपने चुने हुये राजा को अपने सेवक दाऊद के
भले के लिए नकार मत।
11यहोवा ने दाऊद को एक वचन दिया है कि दाऊद
के प्रति वह सच्चा रहेगा। यहोवा ने वचन दिया है कि
दाऊद के वंश से राजा आयेंगे।
12यहोवा ने कहा था, "यदि तेरी संतानें मेरी वाचा पर
और मैंने उन्हें जो शिक्षाएं सिखाई उन पर चलेंगे तो
फिर तेरे परिवार का कोई न कोई सदा ही राजा
रहेगा।"
13अपने मन्दिर की जगह के लिए यहोवा ने सिय्योन
को चुना था। यह वह जगह है जिसे वह अपने भवन के
लिये चाहता था।
14यहोवा ने कहा था, "यह मेरा स्थान सदा सदा के
लिये होगा। मैंने इसे चुना है ऐसा स्थान बनने को जहाँ
पर मैं रहूँगा।
15भरपूर भोजन से मैं इस नगर को आशीर्वाद दूँगा,
यहाँ तक कि दीनों के पास खाने को भर पूर होगा।
16याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा, और
यहाँ मेरे भक्त बुहत प्रसन्न रहेंगे।
17इस स्थान पर मैं दाऊद को सुदृढ करुँगा। मैं अपने
चुने राजा को एक दीपक दूँगा।
18मैं दाऊद के शत्रुओं को लज्जा से ढक दूँगा और
दाऊद का राज्य बढाऊँगा।"

भजन 133

दाऊद का आरोहण गीत।

1परमेश्वर के भक्त मिल जुलकर शांति से रहे। यह
सचमुच भला है, और सुखदायी है।
2यह वैसा सुगंधित तेल जैसा होता है जिसे हारून के
सिर पर उँडला गया है। यह, हारून की दाढ़ी से नीचे जो
बह रहा हो उस तेल सा होता है। यह, उस तेल जैसा है
जो हारुन के विशेष वस्त्रों पर ढुलक बह रहा।
3यह वैसा है जैसे धुंध भरी ओस हेर्मोन की पहाड़ी से
आती हुई। सिय्योन के पहाड पर उतर रही हो।
4यहोवा ने अपने आशीर्वाद सिय्योन के पहाड़ पर ही
दिये थे। यहोवा ने अमर जीवन की आशीष दी थी।

भजन 134

आरोहण का गीत।

1ओ, उसके सब सेवकों, यहोवा का गुण गान करो।
सेवकों सारी रात मन्दिर में तुमने सेवा की।
2सेवकों, अपने हाथ उठाओ और यहोवा को धन्य
कहो।
3और सिय्योन से यहोवा तुम्हें धन्य कहे। यहोवा ने
स्वर्ग और धरती रचे हैं।

भजन 135

1यहोवा की प्रशंसा करो। यहोवा के सेवकों यहोवा
के नाम का गुणगान करो।
2तुम लोग यहोवा के मन्दिर में खड़े हो। उसके नाम
की प्रशंसा करो। तुम लोग मन्दिर के आँगन में खडे हो।
उसके नाम के गुण गाओ।
3यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह खरा है। उसके
नाम के गुण गाओ क्योंकि वह मधुर है।
4यहोवा ने याकूब को चुना था। इस्राएल परमेश्वर
का है।
5मैं जानता हूँ, यहोवा महान है। अन्य भी देवों से
हमारा स्वामी महान है।
6यहोवा जो कुछ वह चाहता है स्वर्ग में, और धरती
पर, समुद्र में अथवा गहरे महासागरों में, करता है।
7परमेश्वर धरती पर सब कहीं मेघों को रचता है।
परमेश्वर बिजली और वर्षा को रचता है। परमेश्वर
हवा को रचता है।
8परमेश्वर मिस्र में मनुष्यों और पशुओं के सभी
पहलौठों को नष्ट किया था।
9परमेश्वर ने मिस्र में बहुत से अद्‌भुत और अचरज
भरे काम किये थे। उसने फिरौन और उसके सब
कर्मचारियों के बीच चिन्ह और अदभुत कार्य दिखाये।
10परमेश्वर ने बहुत से देशों को हराया। परमेश्वर ने
बलशाली राजा मारे।
11उसने एमोरियों के राजा सीहोन को पराजित किया।
परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को हराया। परमेश्वर
ने कनान की सारी प्रजा को हराया।
12परमेश्वर ने उनकी धरती इस्राएल को दे दी।
परमेश्वर ने अपने भक्तों को धरती दी।
13हे यहोवा, तू सदा के लिये प्रसिद्ध होगा। हे यहोवा,
लोग तुझे सदा सर्वदा याद करते रहेंगे।
14यहोवा ने राष्ट्रों को दण्ड दिया किन्तु यहोवा अपने
निज सेवकों पर दयालु रहा।
15दूसरे लोगों के देवता बस सोना और चाँदी के देवता
थे। उनके देवता मात्र लोगों द्वारा बनाये पुतले थे।

16पुतलों के मुँह हैं, पर बोल नहीं सकते। पुतलों की
आँख हैं, पर देख नहीं सकते।
17पुतलों के कान हैं, पर उन्हें सुनाई नहीं देता। पुतलों
के नाक हैं, पर वे सूंघ नहीं सकते।
18वे लोग जिन्होंने इन पुतलों को बनाया, उन पुतलों
के समान हो जायेंगे। क्यों? क्योंकि वे लोग मानते हैं कि
वे पुतले उनकी रक्षा करेंगे।
19इस्राएल की संतानों, यहोवा को धन्य कहो! हारून
की संतानों, यहोवा को धन्य कहो!
20लेवी की संतानों, यहोवा को धन्य कहो! यहोवा के
अनुयायियों, यहोवा को धन्य कहो!
21सिय्योन का यहोवा धन्य है। यरूशलेम में जिसका
घर है यहोवा का गुणगान करो।

भजन 136

1यहोवा की प्रशंसा करो, क्योंकि वह उत्तम है। उसका
सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
2ईश्वरों के परमेश्वर की प्रशंसा करो! उसका सच्चा
प्रेम सदा ही बना रहता है।
3प्रभुओं के प्रभु की प्रशंसा करो। उसका सच्चा प्रेम
सदा ही बना रहता है।
4परमेश्वर के गुण गाओ। बस वही एक है जो
अद्‌भुत कर्म करता है। उसका सच्चा प्रेम सदा ही
बना रहता है।
5परमेश्वर के गुण गाओ जिसने अपनी बुद्धि से आकाश
को रचा है। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
6परमेश्वर ने सागर के बीच में सूखी धरती को
स्थापित किया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
7परमेश्वर ने महान ज्योतियाँ रची। उसका सच्चा प्रेम
सदा ही बना रहता है।
8परमेश्वर ने सूर्य को दिन पर शासन करने के लिये
बनाया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
9परमेश्वर ने चाँद तारों को बनाया कि वे रात पर
शासन करें। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
10परमेश्वर ने मिस्र में मनुष्यों और पशुओं के पहलौठों
को मारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
11परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से बाहर ले आया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
12परमेश्वर ने अपना सामर्थ्य और अपनी महाशक्ति
को प्रकटाया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
13परमेश्वर ने लाल सागर को दो भागों में फाड़ा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
14परमेश्वर ने इस्राएल को सागर के बीच से पार
उतारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
15परमेश्वर ने फ़िरौन और उसकी सेना को लाल
सागर में डूबा दिया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना
रहता है।
16परमेश्वर ने अपने निज भक्तों को मरुस्थल में राह
दिखाई। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
17परमेश्वर ने बलशाली राजा हराए। उसका सच्चा
प्रेम सदा ही बना रहता है।
18परमेश्वर ने सुदृढ़ राजाओं को मारा। उसका सच्चा
प्रेम सदा ही बना रहता है।
19परमेश्वर ने एमोरियों के राजा सीहोन को मारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
20परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को मारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
21परमेश्वर ने इस्राएल को उसकी धरती दे दी। उसका
सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
22परमेश्वर ने उस धरती को इस्राएल को उपहार के
रूप में दिया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
23परमेश्वर ने हमको याद रखा, जब हम पराजित
थे। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
24परमेश्वर ने हमको हमारे शत्रुओं से बचाया था।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
25परमेश्वर हर एक को खाने को देता है। उसका
सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
26स्वर्ग के परमेश्वर का गुण गाओ। उसका सच्चा
प्रेम सदा ही बना रहता है।

भजन 137

1बाबुल की नदियों के किनारे बैठकर हम सिय्योन
को याद करके रो पड़े।
2हमने पास खड़े बेंत के पेड़ों पर निज वीणाएँ टाँगी।
3बाबुल में जिन लोगों ने हमें बन्दी बनाया था, उन्होंने
हमसे गाने को कहा। उन्होंने हमसे प्रसन्नता के गीत
गाने को कहा। उन्होंने हमसे सिय्योन के गीत गाने को
कहा।
4किन्तु हम यहोवा के गीतों को किसी दूसरे देश में
कैसे गा सकते हैं!
5हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे कभी भूलूँ। तो मेरी कामना
है कि मैं फिर कभी कोई गीत न बजा पाऊँ।
6हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे कभी भूलूँ। तो मेरी कामना
है कि मैं फिर कभी कोई गीत न गा पाऊँ। मैं तुझको
कभी नहीं भूलूँगा।
7हे यहोवा, याद कर एदोमियों ने उस दिन जो किया
था। जब यरूशलेम पराजित हुआ था, वे चीख कर बोले
थे, इसे चीर डालो और नींव तक इसे विध्वस्त करो।
8अरी ओ बाबुल, तुझे उजाड़ दिया जायेगा। उस व्यक्ति
को धन्य कहो, जो तुझे वह दण्ड देगा,जो तुझे मिलना
चाहिए। उस व्यक्ति को धन्य कहो जो तुझे वह क्लेश
देगा जो तूने हमको दिये।
9उस व्यक्ति को धन्य कहो जो तेरे बच्चों को चट्टान
पर झपट कर पछाड़ेगा।

भजन 138

दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मैं अपने पूर्ण मन से तेरे गीत गाता हूँ।
मैं सभी देवों के सामने मैं तेरे पद गाऊँगा।
2हे परमेश्वर, मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करुँगा।
मैं तेरे नाम, तेरा सत्य प्रेम, और तेरी भक्ति बखानूँगा।
तू अपने वचन की शक्ति के लिये प्रसिद्ध है।
अब तो उसे तूने और भी महान बना दिया।
3हे परमेश्वर, मैंने तुझे सहायता पाने को पुकारा।
तूने मुझे उत्तर दिया! तूने मुझे बल दिया।
4हे यहोवा, मेरी यह इच्छा है कि धरती के सभी राजा तेरा गुण गायें।
जो बातें तूने कहीं हैं उन्होंने सुनीं हैं।
5मैं तो यह चाहता हूँ, कि वे सभी राजा यहोवा की महान महिमा का गान करें।
6परमेश्वर महान है, किन्तु वह दीन जन का ध्यान रखता है।
परमेश्वर को अहंकारी लोगों के कामों का पता है
किन्तु वह उनसे दूर रहता है।
7हे परमेश्वर, यदि मैं संकट में पड़ूँ तो मुझको जीवित रख।
यदि मेरे शत्रु मुझ पर कभी क्रोध करे तो उन से मुझे बचा ले।
8हे यहोवा, वे वस्तुएँ जिनको मुझे देने का वचन दिया है मुझे दे।
हे यहोवा, तेरा सच्चा प्रेम सदा ही
बना रहता है।
हे यहोवा, तूने हमको रचा है सो तू हमको मत बिसरा।

भजन 139

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का स्तुति गीत।

1हे यहोवा, तूने मुझे परखा है। मेरे बारे में तू सब कुछ जानता है।
2तू जानता है कि मैं कब बैठता और कब खड़ा होता हूँ।
तू दूर रहते हुए भी मेरी मन की बात जानता है।
3हे यहोवा, तुझको ज्ञान है कि मैं कहाँ जाता और कब लेटता हूँ।
मैं जो कुछ करता हूँ सब को तू जानता है।
4हे यहोवा, इसे पहले की शब्द मेरे मुख से निकले
तुझको पता होता है कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।
5हे यहोवा, तू मेरे चारों ओर छाया है। मेरे आगे और पीछे भी तू
अपना निज हाथ मेरे ऊपर हौले से रखता है।
6मुझे अचरज है उन बातों पर जिनको तू जानता है।
जिनका मेरे लिये समझना बहुत कठिन है।
7हर जगह जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ तेरी आत्मा रची है।
हे यहोवा, मैं तुझसे बचकर नहीं जा सकता।
8हे यहोवा, यदि मैं आकाश पर जाऊँ वहाँ पर तू ही है।
यदि मैं मृत्यु के देश पाताल में जाऊँ वहाँ पर भी तू है।
9हे यहोवा, यदि मैं पूर्व में जहाँ सूर्य निकलता है जाऊँ
वहाँ पर भी तू है।
10वहाँ तक भी तेरा दायाँ हाथ पहुँचाता है।
और हाथ पकड़ कर मुझको ले चलता है।
11हे यहोवा, सम्भव है, मैं तुझसे छिपने का जतन करुँ
और कहने लगूँ, "दिन रात में बदल गया है तो
निश्चय ही अंधकार मुझको ढक लेगा।"
12किन्तु यहोवा अन्धेरा भी तेरे लिये अंधकार नहीं है।
तेरे लिये रात भी दिन जैसी उजली है।
13हे यहोवा, तूने मेरी समूची देह को बनाया।
तू मेरे विषय में सबकुछ जानता था जब मैं अभी माता की कोख ही में था।
14हे यहोवा, तुझको उन सभी अचरज भरे कामों के लिये मेरा धन्यवाद,
और मैं सचमुच जानता हूँ कि तू जो कुछ करता है वह आश्चर्यपूर्ण है।
15मेरे विषय में तू सब कुछ जानता है।
जब मैं अपनी माता की कोख में छिपा था, जब मेरी देह रूप ले रही थी तभी तूने मेरी हड्डियों को देखा।
16हे यहोवा, तूने मेरी देह को मेरी माता के गर्भ में विकसते देखा।
ये सभी बातें तेरी पुस्तक में लिखीं हैं।
हर दिन तूने मुझ पर दृष्टी की। एक दिन भी तुझसे नहीं छूटा।
17हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिये कितने महत्त्वपूर्ण हैं।
तेरा ज्ञान अपरंपार है।
18तू जो कुछ जानता है, उन सब को यदि मैं गिन सकूँ तो
वे सभी धरती के रेत के कणों से अधिक होंगे।
किन्तु यदि मैं उनको गिन पाऊँ तो भी मैं तेरे साथ में रहूँगा।
19हे परमेश्वर, दुर्जन को नष्ट कर। उन हत्यारों को मुझसे दूर रख।
20वे बुरे लोग तेरे लिये बुरी बातें कहते हैं।
वे तेरे नाम की निन्दा करते हैं।
21हे यहोवा, मुझको उन लोगों से घृणा है। जो तुझ से घृणा करते हैं मुझको उन लोगों से बैर है जो तुझसे मुड़ जाते हैं।
22मुझको उनसे पूरी तरह घृणा है! तेरे शत्रु मेरे भी शत्रु हैं।
23हे यहोवा, मुझ पर दृष्टि कर और मेरा मन जान ले।
मुझ को परख ले और मेरा इरादा जान ले।
24मुझ पर दृष्टि कर और देख कि मेरे विचार बुरे नहीं है।
तू मुझको उस पथ पर ले चल जो सदा बना रहता है।

भजन 140

संगीत निर्देशकके लिये दाऊद की एक स्तुति।

1हे यहोवा, दुष्ट लोगों से मेरी रक्षा कर। मुझको क्रूर लोगों से बचा ले।
2वे लोग बुरा करने को कुचक्र रचते हैं। वे लोग सदा ही लड़ने लग जाते हैं।

3उन लोगों की जीभें विष भरे नागों सी है। जैसे उनकी जीभों के नीचे सर्प विष हो।

4हे यहोवा, तू मुझको दुष्ट लोगों से बचा ले। मुझको क्रूर लोगों से बचा ले। वे लोग मेरे पीछे पड़े हैं और दुःख पहुँचाने का जतन कर रहे हैं।

5उन अहंकारी लोगों ने मेरे लिये जाल बिछाया। मुझको फँसाने को उन्होंने जाल फैलाया है। मेरी राह में उन्होंने फँदा फैलाया है।

6हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है। हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन।

7हे यहोवा, तू मेरा बलशाली स्वामी है। तू मेरा उद्धारकर्ता है। तू मेरा सिर का कवच जैसा है। जो मेरा सिर युद्ध में बचाता है।

8हे यहोवा, वे लोग दुष्ट हैं। उन की मनोकामना पूरी मत होने दे। उनकी योजनाओं को परवान मत चढने दे।

9हे यहोवा, मेरे बैरियों को विजयी मत होने दे। वे बुरे लोग कुचक्र रच रहे हैं। उनके कुचक्रों को तू उन्ही पर चला दे।

10उन के सिर पर धधकते अंगारों को ऊँडेल दे। मेरे शत्रुओं को आग में धकेल दे। उनको गड्ढ़े (कब्रों) में फेंक दे। वे उससे कभी बाहर न निकल पाये।

11हे यहोवा, उन मिथ्यावादियों को तू जीने मत दे। बुरे लोगों के साथ बुरी बातें घटा दे।

12मैं जानता हूँ यहोवा कंगालों का न्याय खराई से करेगा। परमेश्वर असहायों की सहायता करेगा।

13हे यहोवा, भले लोग तेरे नाम की स्तुति करेंगे। भले लोग तेरी अराधना करेंगे।

भजन 141

दाऊद का एक स्तुति पद।

1हे यहोवा, मैं तुझको सहायता पाने के लिये पुकारता हूँ। जब मैं विनती करुँ तब तू मेरी सुन ले। जल्दी कर और मुझको सहारा दे।

2हे यहोवा, मेरी विनती तेरे लिये जलती धूप के उपहार सी हो मेरी विनती तेरे लिये दी गयी साँझ कि बलि सी हो।

3हे यहोवा, मेरी वाणी पर मेरा काबू हो। अपनी वाणी पर मैं ध्यान रख सकूँ, इसमें मेरा सहायक हो।

4मुझको बुरी बात मत करने दे। मुझको रोके रह बुरों की संगती से उनके सरस भोजन से और बुरे कामों से। मुझे भाग मत लेने दे ऐसे उन कामों में जिन को करने में बुरे लोग रख लेते हैं।

5सज्जन मेरा सुधार कर सकता है। तेरे भक्त जन मेरे दोष कहे, यह मेरे लिये भला होगा। मैं दुर्जनों कि प्रशंसा ग्रहण नहीं करूँगा। क्यों? क्योंकि मैं सदा प्रार्थना किया करता हूँ। उन कुकर्मो के विरुद्ध जिनको बुरे लोग किया करते हैं।

6उनके राजाओं को दण्डित होने दे और तब लोग जान जायेंगे कि मैंने सत्य कहा था।

7लोग खेत को खोद कर जोता करते हैं और मिट्टी को इधर-उधर बिखेर देते हैं। उन दुष्टों कि हड्डियाँ इसी तरह कब्रों में इधर-उधर बिखरेंगी।

8हे यहोवा, मेरे स्वामी, सहारा पाने को मेरी दृष्टि तुझ पर लगी है। मुझको तेरा भरोसा है। कृपा कर मुझको मत मरने दे।

9मुझको दुष्टों के फँदों में मत पड़ने दे। उन दुष्टों के द्वारा मुझ को मत बंध जाने दे।

10वे दुष्ट स्वयं अपने जालों में फँस जायें जब मैं बचकर निकल जाऊँ। बिना हानि उठाये।

भजन 142

दाऊद का एक कला गीत।

1मैं सहायता पाने के लिये यहोवा को पुकारुँगा। मैं यहोवा से प्रार्थना करुँगा।

2मैं यहोवा के सामने अपना दुःख रोऊँगा। मैं यहोवा से अपनी कठिनाईयाँ कहूँगा।

3मेरे शत्रुओं ने मेरे लिये जाल बिछाया है। मेरी आशा छूट रही है किन्तु यहोवा जानता है। कि मेरे साथ क्या घट रहा है।

4मैं चारों ओर देखता हूँ और कोई अपना मित्र मुझको दिख नहीं रहा मेरे पास जाने को कोई जगह नहीं है। कोई व्यक्ति मुझको बचाने का जतन नहीं करता है।

5इसलिये मैंने यहोवा को सहारा पाने को पुकारा है। हे यहोवा, तू मेरी ओट है। हे यहोवा, तू ही मुझे जिलाये रख सकता है।

6हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन। मुझे तेरी बहुत अपेक्षा है। तू मुझको ऐसे लोगों से बचा ले जो मेरे लिये मेरे पीछे पड़े हैं।

7मुझको सहारा दे कि इस जाल से बच भागूँ। फिर यहोवा, मैं तेरे नाम का गुणगान करुँगा। मै वचन देता हूँ। भले लोग आपस में मिलेंगे और तेरा गुणगान करेंगे क्योंकि तूने मेरी रक्षा की है।

भजन 143

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन। मेरी विनती को सुन और फिर तू मेरी प्रार्थना का उत्तर दे। मुझको दिखा दे कि तू सचमुच भला और खरा है।

2तू मुझ अपने दास पर मुकदमा मत चला। क्योंकि कोई भी जीवित व्यक्ति तेरे सामने नेक नहीं ठहर सकता।

3किन्तु मेरे शत्रु मेरे पीछे पड़े हैं। उन्होंने मेरा जीवन चकनाचूर कर धूल में मिलाया। वे मुझे अंधेरी कब्र में ढकेल रहे हैं। उन व्यक्तियों की तरह जो बहुत पहले मर चुके हैं।

4मैं निराश हो रहा हूँ। मेरा साहस छूट रहा है।
5किन्तु मुझे वे बातें याद हैं, जो बहुत पहले घटी थी।
हे यहोवा, मैं उन अनेक अद्‌भुत कामों का बखान कर
रहा हूँ। जिनको तूने किया था।
6हे यहोवा, मैं अपना हाथ उठाकर के तेरी विनती
करता हूँ। मैं तेरी सहायता कि बाट जोह रहा हूँ जैसे
सूखी वर्षा कि बाट जोहती है।

7हे यहोवा, मुझे शीघ्र उत्तर दे। मेरा साहस छूट गया;
मुझसे मुख मत मोड़। मुझको मरने मत दे और वैसा
मत होने दे, जैसा कोई मरा व्यक्ति कब्र में लेटा हो।
8हे यहोवा, इस भोर के फूटते ही मुझे अपना सच्चा
प्रेम दिखा। मैं तेरे भरोसे हूँ। मुझको वे बाते दिखा
जिनको मुझे करना चाहिये।
9हे यहोवा, मेरे शत्रुओं से रक्षा पाने को मैं तेरे शरण
में आता हूँ। तू मुझको बचा ले।
10दिखा मुझे जो तू मुझसे करवाना चाहता है। तू मेरा
परमेश्वर है।
11हे यहोवा, मुझे जीवित रहने दे, ताकि लोग तेरे नाम
का गुण गायें। मुझे दिखा कि सचमुच तू भला है, और
मुझे मेरे शत्रुओं से बचा ले।
12हे यहोवा, मुझ पर अपना प्रेम प्रकट कर। और
उन शत्रुओं को हरा दे, जो मेरी हत्या का यत्न कर रहे
हैं। क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ।

भजन 144

दाऊद को समर्पित।

1यहोवा मेरी चट्टान है। यहोवा को धन्य कहो! यहोवा
मुझको लड़ाई के लिये प्रशिक्षित करता है। यहोवा मुझको
युद्ध के लिये प्रशिक्षित करता है।
2यहोवा मुझसे प्रेम रखता है और मेरी रक्षा करता
है। यहोवा पर्वत के ऊपर, मेरा ऊँचा सुरक्षा स्थान है।
यहोवा मुझको बचा लाता है। यहोवा मेरी ढाल है। मैं
उसके भरोसे हूँ। यहोवा मेरे लोगों का शासन करने में
मेरा सहायक है।
3हे यहोवा, तेरे लिये लोग क्यों महत्त्वपूर्ण बने हैं? तू
हम पर क्यों ध्यान देता है?
4मनुष्य का जीवन एक फूँक के समान होता है।
मनुष्य का जीवन ढलती हुई छाया सा होता है।
5हे यहोवा, तू अम्बर को चीर कर नीचे उतर आ। तू
पर्वतो को छू ले कि उनसे धुँआ उठने लगे।
6हे यहोवा, बिजलियाँ भेज दे और मेरे शत्रुओ को
कही दूर भगा दे। अपने बाणों को चला और उन्हें
विवश कर कि वे कहीं भाग जायें।
7हे यहोवा, अम्बर से नीचे उतर आ और मुझ को
उबार ले। इन, शत्रुओं के सागर में मुझे मत डूबने दे।
मुझको इन परायों से बचा ले।
8ये शत्रु झूठे हैं। ये बात ऐसी बनाते हैं जो सच नहीं
होती है। 9हे यहोवा, मैं नया गीत गाऊँगा तेरे उन अद्‌भुत
कर्मो का तू जिन्हें करता है। मैं तेरा यश दस तार वाली
वीणा पर गाऊँगा।
10हे यहोवा, राजाओं की सहायता उनके युद्ध जीतने
में करता है। यहोवा ने अपने सेवक दाऊद को उसके
शत्रुओं के तलवारों से बचाया।
11मुझको इन परदेशियों से बचा ले। ये शत्रु झूठे हैं, ये
बातें बनाते हैं जो सच नहीं होती।
12यह मेरी कामना है: पुत्र जवान हो कर विशाल
पेड़ों जैसे मजबूत हों। और मेरी यह कामना है हमारी
पुत्रियाँ महल की सुन्दर सजावटों सी हों।
13यह मेरी कामना है कि हमारे खेत हर प्रकार की
फसलों से भरपूर रहें। यह मेरी कामना है कि हमारी
भेड़े चारागाहों में हजारों हजार मेमनें जनती रहें।
14मेरी यह कामना है कि हमारे पशुओं के बहुत से
बच्चे हों। यह मेरी कामना है कि हम पर आक्रमण
करने कोई शत्रु नहीं आए। यह मेरी कामना है कभी
हम युद्ध को नहीं आएं। और मेरी यह कामना है कि
हमारी गलियों में भय की चीखें नहीं उठें।
15जब ऐसा होगा लोग अति प्रसन्न होंगे। जिनका
परमेश्वर यहोवा है, वे लोग अति प्रसन्न रहते हैं।

भजन 145

दाऊद की एक प्रार्थना।

1हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे राजा, मैं तेरा गुण गाता हूँ!
मैं सदा-सदा तेरे नाम को धन्य कहता हूँ।
2मैं हर दिन तुझको सराहता हूँ। मैं तेरे नाम की
सदा-सदा प्रशंसा करता हूँ। 3यहोवा महान है। लोग
उसका बहुत गुणगान करते हैं। वे अनगिनत महाकार्य
जिनको वह करता है हम उनको नहीं गिन सकते।
4हे यहोवा, लोग उन बातों की गरिमा बखानेंगे जिनको
तू सदा और सर्वदा करता है। दूसरे लोग, लोगों से उन
अद्‌भुत कर्मो का बखान करेंगे जिनको तू करता है।
5तेरे लोग अचरज भरे गौरव और महिमा को बखानेंगे।
मैं तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों को बखानूँगा।
6हे यहोवा, लोग उन अचरज भरी बातों को कहा
करेंगे जिनको तू करता है। मैं उन महान कर्मो को
बखानूँगा जिनको तू करता है।
7लोग उन भली बातों के विषय में कहेंगे जिनको तू
करता है। लोग तेरी धार्मिकता का गान किया करेंगे।
8यहोवा दयालु है और करुणापूर्ण है। यहोवा तू धैर्य
और प्रेम से पूर्ण है।
9यहोवा सब के लिये भला है। परमेश्वर जो कुछ भी
करता है उसी में निज करुणा प्रकट करता है।
10हे यहोवा, तेरे कर्मो से तुझे प्रशंसा मिलती है।
तुझको तेरे भक्त धन्य कहा करते हैं।

11वे लोग तेरे महिमामय राज्य का बखान किया
करते हैं। तेरी महानता को वे बताया करते हैं।
12ताकि अन्य लोग उन महान बातों को जाने जिनको
तू करता है। वे लोग तेरे महिमामय राज्य का मनन
किया करते हैं।
13हे यहोवा, तेरा राज्य सदा-सदा बना रहेगा। तू
सर्वदा शासन करेगा।
14यहोवा गिरे हुए लोगों को ऊपर उठाता है। यहोवा
विपदा में पड़े लोगों को सहारा देता है।
15हे यहोवा, सभी प्राणी तेरी ओर खाना पाने को
देखते हैं। तू उनको ठीक समय पर उनका भोजन दिया
करता है।
16हे यहोवा, तू निज मुट्ठी खोलता है, और तू सभी
प्राणियों को वह हर एक वस्तु जिसकी उन्हें आवश्यकता
देता है।
17यहोवा जो भी करता है, अच्छा ही करता है। यहोवा
जो भी करता, उसमें निज सच्चा प्रेम प्रकट करता है।
18जो लोग यहोवा की उपासना करते हैं, यहोवा उनके
निकट रहता है। सचमुच जो उसकी उपासना करते हैं,
यहोवा हर उस व्यक्ति के निकट रहता है।
19यहोवा के भक्त जो उससे करवाना चाहते हैं, वह
उन बातों को करता है। यहोवा अपने भक्तों की सुनता
है। वह उनकी प्रार्थनाओ का उत्तर देता है और उनकी
रक्षा करता है।
20जिसका भी यहोवा से प्रेम है, यहोवा हर उस व्यक्ति
को बचाता है, किन्तु यहोवा दुष्ट को नष्ट करता है।
21मैं यहोवा के गुण गाऊँगा! मेरी यह इच्छा है कि हर
कोई उसके पवित्र नाम के गुण सदा और सर्वदा गाये।

भजन 146

1यहोवा का गुण गान कर! मेरे मन, यहोवा की
प्रशंसा कर।
2मैं अपने जीवन भर यहोवा के गुण गाऊँगा। मैं
अपने जीवन भर उसके लिये यश गीत गाऊँगा।
3अपने प्रमुखों के भरोसे मत रहो। सहायता पाने को
व्यक्ति के भरोसे मत रहो, क्योंकि तुमको व्यक्ति बचा
नहीं सकता है।
4लोग मर जाते हैं और गाड़ दिये जाते है। फिर उनकी
सहायता देने की सभी योजनाएँ यूँ ही चली जाती है।
5जो लोग, याकूब के परमेश्वर से अति सहायता
माँगते, वे अति प्रसन्न रहते हैं। वे लोग अपने परमेश्वर
यहोवा के भरोसे रहा करते हैं। 6यहोवा ने स्वर्ग और
धरती को बनाया है। यहोवा ने सागर और उसमें की
हर वस्तु बनाई है। यहोवा उनकी सदा रक्षा करेगा।
7जिन्हें दुःख दिया गया, यहोवा ऐसे लोगों के संग
उचित बात करता है। यहोवा भूखे लोगों को भोजन देता
है। यहोवा बन्दी लोगों को छुड़ा दिया करता है।
8यहोवा के प्रताप से अंधे फिर देखने लग जाते हैं।
यहोवा उन लोगों को सहारा देता जो विपदा में पड़े हैं।
यहोवा सज्जन लोगों से प्रेम करता है।
9यहोवा उन परदेशियों की रक्षा किया करता है जो
हमारे देश में बसे हैं। यहोवा अनाथों और विधवाओं का
ध्यान रखता है किन्तु यहोवा दुर्जनों के कुचक्र को नष्ट
करता हैं।
10यहोवा सदा राज करता रहे! सिय्योन तुम्हारा
परमेश्वर पर सदा राज करता रहे! यहोवा का गुणगान
करो!

भजन 147

1यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह उत्तम है। हमारे
परमेश्वर के प्रशंसा गीत गाओ। उसका गुणगान भला
और सुखदायी है।
2यहोवा ने यरुशलेम को बनाया है। परमेश्वर इस्राएली
लोगों को वापस छुड़ाकर ले आया जिन्हें बंदी बनाया
गया था।
3परमेश्वर उनके टूटे मनों को चँगा किया करता
और उनके घावों पर पट्टी बांधता है।
4परमेश्वर सितारों को गिनता है और हर एक तारे
का नाम जानता है।
5हमारा स्वामी अति महान है। वह बहुत ही शक्तिशाली
है। वे सीमाहीन बातें है जिनको वह जानता है।
6यहोवा दीन जन को सहारा देता है। किन्तु वह दुष्ट
को लज्जित किया करता है।
7यहोवा को धन्यवाद करो। हमारे परमेश्वर का
गुणगान वीणा के संग करो।
8परमेश्वर मेघों से अम्बर को भरता है। परमेश्वर
धरती के लिये वर्षा कराता है। परमेश्वर पहाड़ों पर
घास उगाता है।
9परमेश्वर पशुओं को चारा देता है, छोटी चिड़ियों
को चुग्गा देता है।
10उनको युद्ध के घोड़े और शक्तिशाली सैनिक नहीं
भाते हैं।
11यहोवा उन लोगों से प्रसन्न रहता है। जो उसकी
आराधना करते हैं। यहोवा प्रसन्न हैं, ऐसे उन लोगों से
जिनकी आस्था उसके सच्चे प्रेम में है।
12हे यरूशलेम, यहोवा के गुण गाओ! सिय्योन, अपने
परमेश्वर की प्रशंसा करो!
13हे यरूशलेम, तेरे फाटको को परमेश्वर सुदृढ़ करता
है। तेरे नगर के लोगों को परमेश्वर आशीष देता है।
14परमेश्वर तेरे देश में शांति को लाया है। सो युद्ध में
शत्रुओं ने तेरा अन्न नहीं लूटा। तेरे पास खाने को बहुत
अन्न है।
15परमेश्वर धरती को आदेश देता है, और वह तत्काल
पालन करती है।

16परमेश्वर पाला गिराता जब तक धरातल वैसा श्वेत
नहीं होता जाता जैसा उजला ऊन होता है। परमेश्वर
तुषार की वर्षा करता है, जो हवा के साथ धूल सी
उड़ती है।
17परमेश्वर हिम शिलाएँ गगन से गिराता है। कोई
व्यक्ति उस शीत को सह नहीं पाता है।
18फिर परमेश्वर दूसरी आज्ञा देता है, और गर्म हवाएँ
फिर बहने लग जाती हैं। बर्फ पिघलने लगती, और जल
बहने लग जाता है।
19परमेश्वर ने निज आदेश याकूब को (इस्राएल को)
दिये थे। परमेश्वर ने इस्राएल को निज विधि का विधान
और नियमों को दिया।
20यहोवा ने किसी अन्य राष्ट्र के हेतु ऐसा नहीं किया।
परमेश्वर ने अपने नियमों को, किसी अन्य जाति को
नहीं सिखाया। यहोवा का यश गाओ।

भजन 148

1यहोवा के गुण गाओ! स्वर्ग के स्वर्गदूतों, यहोवा की
प्रशंसा स्वर्ग से करो!
2हे सभी स्वर्गदूतों, यहोवा का यश गाओ! ग्रहों और
नक्षत्रों, उसका गुण गान करो!
3सूर्य और चाँद, तुम यहोवा के गुण गाओ! अम्बर के
तारों और ज्योतियों, उसकी प्रशंसा करो!
4यहोवा के गुण सर्वोच्च अम्बर में गाओ। हे जल
आकाश के ऊपर, उसका यशगान कर!
5यहोवा के नाम का बखान करो। क्यों? क्योंकि
परमेश्वर ने आदेश दिया, और हम सब उसके रचे थे।
6परमेश्वर ने इन सबको बनाया कि सदा-सदा बने
रहें। परमेश्वर ने विधान के विधि को बनाया, जिसका
अंत नहीं होगा।
7ओ हर वस्तु, धरती की यहोवा का गुण गान करो!
ओ विशालकाय जल जन्तुओं, सागर के यहोवा के गुण
गाओ।

8परमेश्वर ने अग्नि और ओले को बनाया, बर्फ
और धुआँ तथा सभी तूफानी पवन उसने रचे।
9परमेश्वर ने पर्वतों और पहाड़ों को बनाया, फलदार
पेड़ और देवदार के वृक्ष उसी ने रचे हैं।
10परमेश्वर ने सारे बनैले पशु और सब मवेशी रचे
हैं। रेंगने वाले जीव और पक्षियों को उसने बनाया।
11परमेश्वर ने राजा और राष्ट्रों की रचना धरती पर
की। परमेश्वर ने प्रमुखों और न्यायधीशों को बनाया।
12परमेश्वर ने युवक और युवतियों को बनाया।
परमेश्वर ने बूढ़ों और बच्चों को रचा है।
13यहोवा के नाम का गुण गाओ! सदा उसके नाम
का आदर करो! हर वस्तु, ओ धरती और व्योम,
उसका गुणगान करो!
14परमेश्वर अपने भक्तों को दृढ़ करेगा। लोग परमेश्वर
के भक्तों की प्रशंसा करेंगे। लोग इस्राएल के गुण गायेंगे।
वे लोग है जिनके लिये परमेश्वर युद्ध करता है। यहोवा
की प्रशंसा करो।

भजन 149

1यहोवा के गुण गाओ। उन नयी बातों के विषय में
एक नया गीत गाओ जिनको यहोवा ने किया है। उसके
भक्तों की मण्डली में उसका गुण गान करो।
2परमेश्वर ने इस्राएल को बनाया। यहोवा के संग
इस्राएल हर्ष मनाए। सिय्योन के लोग अपने राजा के संग
में आनन्द मनाएँ।
3वे लोग परमेश्वर का यशगान नाचते बजाते अपने
तम्बुरों, वीणाओ से करें।
4यहोवा निज भक्तों से प्रसन्न है। परमेश्वर ने एक
अद्‌भुत कर्म अपने विनीत जन के लिये किया। उसने
उनका उद्धार किया।
5परमेश्वर के भक्तों, तुम निज विजय मनाओं! यहाँ
तक कि बिस्तर पर जाने के बाद भी तुम आनन्दित
रहो।
6लोग परमेश्वर का जयजयकार करें और लोग निज
तलवारें अपने हाथों में धारण करें।
7वे अपने शत्रुओं को दण्ड देने जायें। और दूसरे लोगों
को वे दण्ड देने को जायें,
8परमेश्वर के भक्त उन शासकों और उन प्रमुखों
को जंजीरो से बांधे।
9परमेश्वर के भक्त अपने शत्रुओं को उसी तरह
दण्ड देंगे, जैसा परमेश्वर ने उनको आदेश दिया। परमेश्वर
के भक्तो यहोवा का आदरपूर्ण गुणगान करो।

भजन 150

1यहोवा की प्रशंसा करो! परमेश्वर के मन्दिर में
उसका गुणगान करो! उसकी जो शक्ति स्वर्ग में है,
उसके यशगीत गाओ!
2उन बड़े कामों के लिये परमेश्वर की प्रशंसा करो,
जिनको वह करता है! उसकी गरिमा समूची के लिये
उसका गुणगान करो!
3तुरही फूँकते और नरसिंगे बजाते हुए उसकी स्तुति
करो! उसका गुणगान वीणा और सारंगी बजाते हुए
करो!
4परमेश्वर की स्तुति तम्बुरों और नृत्य से करो!
उसका यश उन पर जो तार से बजाते हैं और बांसुरी
बजाते हुए गाओ!
5तुम परमेश्वर का यश झंकारते झाँझे बजाते हुए
गाओ! उसकी प्रशंसा करो!
6हे जीवों! यहोवा की स्तुति करो! यहोवा की प्रशंसा
करो!

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0 **B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2**
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6 **B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8**

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads